CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू गौरव

धर्मो रक्षति रक्षितः

ॐ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

जगदम्बाप्रसाद वर्मा

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू धर्म मुक्ति का द्वार,
करे प्रवेश सर्व संसार।

❄

हिन्दू सनातन धर्म के ऐसे पवित्र विधान हैं,
संसार में सब के लिये जो मान्य एक समान हैं।
धृति, शान्ति, शौच, दया, क्षमा शम, दम अहिंसा, सत्यता,
परहाय ! इनमे से किसी का आज है हममें पता ?
विख्यात हिन्दू धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है,
यह धर्म ही ''धारण'' क्रिया का नित्य करता कर्म है।
परमार्थ की – संसार की भी – सिद्धि का यह धाम है,
पर वाद और विवाद में ही आज इसका नाम है।
बैठे हुये हो व्यर्थ क्यों ? आगे बढ़ो ऊँचे चढ़ो,
है भाग्य की क्या भावना ? अब पाठ पौरूष का पढ़ो।
पुरुषत्व दिखलाओ, पुरुष हो, बुद्धि बल से काम लो,
तब तक न थक कर तुम कभी अवकाश या विश्राम लो,
जब तक कि भारत पूर्व के पद पर न पुनरासीन हो,
फिर ज्ञान में विज्ञान में, जब तक न वह स्वाधीन हो।
हे आर्य सन्तानों उठो, अवसर निकल जावे नहीं,
देखो बड़ों की बात जग में, बिगड़ने पावे नहीं।
जग जान ले कि न आर्य, केवल नाम के ही आर्य हैं,
वे नाम के अनुसार ही करते सदा शुभ कार्य हैं।

(मैथिलीशरण गुप्त)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू गौरव

प्रकाशक – **सुमति प्रकाशन**
शिवरानीनगर
५३८/६३, सीतापुर मार्ग
लखनऊ –२०

लेखक – **जगदम्बाप्रसाद वर्मा**

मूल्य – रू० २०/–

संस्करण – विक्रमाब्द २०५० तक ८ संस्करण
१६,४०० प्रतियां
नवम संस्करण (विक्रमाब्द २०५४)
२,००० प्रितियां

मुद्रक – कल्प तरू प्रिंटर्स एवं पैकेजर्स (प्रा०लि०)
किशोर बाजार, मौसमबाग, सीतापुर मार्ग
लखनऊ – २०

पुस्लक मिलने का स्थान :-

(१) सुमति प्रकाशन, शिवरानी नगर, ५३८/६३, सीतापुर मार्ग, लखनऊ – २०

(२) एजूकेशनल इम्पोरियम, १३–शिवाजी मार्ग, लखनऊ –२८

(३) विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, सोहावल – फैजाबाद

(४) साहित्य भारती, भारती भवन, ५८ राजेन्द्र नगर, लखनऊ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अनुक्रम

१. पुरोवाक

२. हिन्दू जीवन रचना १
उपासना की स्वतंत्रता, रीति रिवाजों की रूढ़ियाँ धर्म नहीं, हिन्दू संगठन कैसा हो ?, हिन्दुओं का गौरवशाली अतीत, हिन्दुत्व का विस्तार

३. इस्लाम पूर्व अरब में हिन्दू ७
उद्धरण – भारत में अंग्रेजी राज, ह्वेनसांग, डा० राधाकृष्णन

४. 'हिन्दू' १४
पुराणादि साहित्य में, अर्वाचीन ग्रंथों में, हिन्दी विश्व कोश, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का शोधपूर्ण लेख, संविधान में हिन्दू की परिभाषा, विश्व हिन्दू परिषद द्वारा स्वीकृत हिन्दू की परिभाषा।

५. धर्म ही राष्ट्र का प्राण है। ३५

६. परावर्तन संस्कार (शुद्धि) ४१

७. हिन्दू धर्म - सामान्य ज्ञान ४९
वेद, उपनिषद् आदि,प्रमुख उपासना पद्धतियाँ, शक्तिपीठ आदि, धर्म प्रचारक, संस्कार, जीवन मूल्य

८. हिन्दुओं की वैज्ञानिक देन ६३

९. विश्व में विभिन्न मत पंथ ६८

१०. हिन्दू जनसंख्या - विदेशों में, भारत में ७२

भूमिका

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मत–मजहबों की कटुता, अविश्वास तथा स्वार्थों के आधार पर अनेकानेक मानव समुदाय कभी परस्पर युद्धरत दिखाई देते हैं, कभी तथाकथित शान्ति काल में में एक दूसरे के प्रति घातक योजनाओं में लगे रहते हैं। फलस्वरूप विश्व मे मानव कल्याण की अनेक योजनायें असफल हो रहीं हैं।

उपरोक्त परिपेक्ष्य में जब हम भारत की ओर देखते हैं तो ज्ञात होता है कि यहाँ मानव कल्याण का चिंतन करने वाले विचारकों, ऋषियों–मुनियों, ने अपनी दीर्घ कालीन त्याग–तपस्या, अध्ययन, निरीक्षण–परीक्षण तथा अनुभूतियों के आधार पर निहित एकात्मता के जिन सूत्रों का साक्षात्कार किया उनको शब्दों में प्रगट किया यथा – सोऽहम्, तत्वमसि आदि ।

इसी सम्बन्ध सूत्र के आधार पर एक जीवन रचना का भी विकास किया। जिसे हिन्दू दर्शन, हिन्दू संस्कृति या हिन्दुत्व कहते हैं।

सबके लिये सहानुभूति, स्नेह, सहिष्णुता एवं समादर इसका वैशिष्ट्य है। मानवमात्र में ही नहीं, पशु–पक्षी, पृथ्वी–आकाश, जड़ वृक्षों आदि सभी में एक ईश्वर या एक आत्मा का दर्शन किया और कहा –

ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किंच जगत्यांजगत ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मागृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

परस्पर एकात्म भाव संपादन करने वाला यह विचार ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। भौतिक विकास तथा अणु शक्ति ने हिन्दू जीवन रचना को अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।

हिन्दुत्व के ज्ञान विज्ञान सम्मत, तर्क शुद्ध स्वरूप, जिसका निरूपण भारत के ऋषियों मुनियों, महापुरुषों ने किया था संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

पुस्तक का यह नवम संस्करण डा० वासुदेवशरण अग्रवाल संस्कृति संस्थान के सहयोग से प्रकाशित हो रहा है। पुस्तक के प्रकाशन, वितरण तथा प्रचार में सहयोगी सभी बन्धुओं के प्रति प्रकाशन आभारी है। मेरी पौत्री कु० रश्मि श्रीवास्तव, एम० ए० ने पुस्तक को नया आकार देने तथा प्रूफ पढ़ने में तत्परता से कार्य किया, वह भी धन्यवाद की पात्र है।

माघकृष्ण २ — विनीत
वि० सं० २०५४ — जगदम्बाप्रसाद वर्मा

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

डा० देवदत्त शुक्ल
रीडर संस्कृत विभाग
जय नारायण पोस्ट ग्रेजुएट कालेज
लखनऊ

बी–१/३, निराला नगर
लखनऊ
दूरभाष – ३३४७२०

पुरोवाक्

परम हर्ष का विषय है कि श्री जगदम्बा प्रसाद वर्मा की पुस्तक "हिन्दू नाम निरुपण" का परिवर्धित नवम संस्करण "हिन्दू गौरव" के नाम से प्रकाशित हो रहा है। पूर्व के आठ संस्करणों को समाज में बड़ा आदर प्राप्त हुआ। श्री वर्मा ने हिन्दू धर्म साहित्य में यत्र–तत्र विखरे हुए अपने सम्बद्ध विषय वाले मोतियों को ढूँढ़ कर 'हिन्दू गौरव' में एक माला का रूप प्रदान किया है। पुस्तक के प्रारम्भ में हिन्दू जवीन रचना पर प्रकाश डाला गया है तदनन्तर पुस्तक में हिन्दुओं का गौरव शाली अतीत वर्णित किया गया है। आक्रमणों के फलस्वरूप अस्त–व्यस्त समाज को संगठित होने का आवाहन किया गया है। हिन्दू शब्द की प्राचीनता और वर्तमान सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा दी गई इसकी परिभाषा प्रस्तुत की गई है। शिला लेख, स्मारक, यात्रा विवरण, इतिहास और अपार साहित्य से 'हिन्दू गौरव' के पुष्प चुने गये है। इसकी सुगन्ध हिन्दू धर्म, रिलीजन, मत–पन्थ या मजहब के विवेचन में प्राप्त होती है। कतिपय विषयों पर वर्मा जी के विचार प्रेरणादायी तथा मनन योग्य हैं। पुस्तक के अन्त में 'हिन्दू धर्म सामान्य ज्ञान' में वेदों से लेकर आज तक के संस्कृत साहित्य पर आधारित सामान्य ज्ञान से पाठकों को परिचित कराया गया है। देश तथा विश्व में हिन्दुओं की जनसंख्या तथा बढ़ते प्रसार की महत्वपूर्ण सूचना भी संकलित की गई है। हिन्दू परिवारों में तथा जिन विद्यालयों में हिन्दू बालक–बालिकाएँ पढ़ती हैं हिन्दू धर्म शिक्षा की सुनियोजित व्यवस्था न होने के कारण नवोदित पीढ़ी पर अभारतीय वातावरण तथा हिन्दुत्व विरोधी प्रचार का दूषित प्रभाव पड़ता है। यह पुस्तक एक सीमा तक इस कमी को पूरा करेगी। अपनी सभ्यता और संस्कृति का स्वाभिमान जागृत करेगी।

देवदत्त शुक्ल

दिनांक २३–११–१९९७

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

कृष्ण बल्लभ द्विवेदी
प्रधान संपादक, "हिन्दी विश्व–भारती"
ज्ञानकोश

"मनु-निकुंज"
सी–४५(ए) निरालानगर,
लखनऊ

विगत तीन दशकों से एक अनूठे व्यक्तित्व का आमना–सामना हो रहा है। सिर पर जटा–जूट चेहरे पर संतो जैसी दाढ़ी मूँछ। पहले यह केश राशि एकदम धवल श्वेत नहीं थी। पर अब यह हवा में लहराती हुई निर्मल सफेद रूई की याद दिलाने लगती है। इस व्यक्तित्व का धनी लखनऊ का ही नागरिक है। वह मोटे कपड़े की धोती कुरते के पहनावे को छोड़कर कभी भी दूसरे वेश में देखने को नहीं मिले हैं, मुझे। और इस वेश–भूषा में साइकिल पर लखनऊ की सड़को को नापते हुए जब भी इन नगर बन्धु से मेरी भेंट हुई उनका चेहरा एक शान्ति की लहर उमगा देने वाली सात्विक उनहार से दमकते पाया है।

लोग इन्हे "दादाजी" के नाम से पहचाना करते हैं। पर मेरे लिये तो वह "वर्माजी" हैं जो उनका नाम है– श्री जगदम्बा प्रसाद वर्मा। यह धुन का पक्का, आस्था में अडिग, अपने लक्ष्य पर नख–शिख समर्पित केवल एक ही संकल्प लिये हुये है। वह उन लोगों को जो "हिन्दू" होते हुये भी निजको "हिन्दू" कहने में आज शर्म से गड़े जा रहे हैं, टकोरने–कुरेदने का बीड़ा उठाकर, शहर को एक पहरुए की तरह जगाने में लगे हैं, उन्होंने अभी हाल, यह साबित करने के लिए "हिन्दू" नाम कोई अपशब्द या गाली नहीं है, जिसे विधर्मियों ने इस महान नाम–संज्ञा को धारण करने वाले भाग्यवानों पर दुष्टतापूर्वक थोप दी है, निकाली है एक पुस्तिका, जिसका शीर्षक है "हिन्दू गौरव" । यह पुस्तक भेंट स्वरूप मुझे भी दे गये हैं और वह मुझे एक बहुत अनूठी कृति लगी है। वर्मा जी ने पहले भी वर्षो पूर्व इस तरह की एक पुस्तिका निकाली थी, जिसमें अनेक प्रमाण उन्होंने "हिन्दू" शब्द के अति प्राचीन प्रयोग के दिए थे। अब यह पुस्तक उसी प्रकार की और भी अधिक सामग्री लिये हुए है। कितने ग्रंथ, कितनी पत्रिकाएं कितनी लाइब्रेरियां उन्होंने इस विशाल संग्रह को जुटाने में देखे और छाने होंगे। मैं इस अथक श्रम के लिये उन्हें बधाई देता हूँ।

पुस्तक उन लोगों के लिए अति उपादेय है, जो जानते ही नहीं कि इस "हिन्दू" शब्द का गोत्र कितना गौरव शाली है। मैं आशा करता हूँ कि इस अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक को अपनाकर हिन्दू–जगत निज को गौरवान्वित करेगा।

कृष्ण बल्लभ द्विवेदी

११/१२/६३

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

ॐ

परममित्र श्री जगदम्बा प्रसाद जी पुणे

सप्रेम नमस्कार २६/१/९४

आपका पत्र और पुस्तकें मिलीं। "हिन्दू गौरव" पुस्तक निश्चित रूप से संग्राह्य बन पड़ी है। पहले दो तीन संस्करण मैने देखें थे। परन्तु यह अष्टम संस्करण है, यह देखकर आपके उत्साह की और लगन की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। प्रत्येक संस्करण में आप नयी नयी सामग्री जोड़ देते हैं। जब अपने कार्यकर्ता लोगों से मिलने जाते हैं तब साधारणतया उनको बातचीत में उपयुक्त होगी ऐसी सब जानकारी आपने संक्षेप में प्रस्तुत की है। वास्तव में प्रत्येक स्वयंसेवक को अपने संग्रह में इस अमूल्य पुस्तक को अवश्य रखना चाहिए। तदर्थ आप धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अपनी अगली संस्कृत पुस्तक में "हिन्दू" शब्द के बारे में कुछ लिखने को सोच रहा था। अब मुझे बहुत सी सामग्री बनी बनाई मिल गई है। तदर्थ मैं कृतज्ञ हूँ।

भवदीय
माधव पांडुरंग डेग्वेकर
पूर्व महामंत्री, विहिप
कार्यकारी अध्यक्ष, विश्व संस्कृत परिषद, दिल्ली।

समालोचन

श्रीमान महोदय, जयहिन्द २४/६/८७

आप के प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक (हिन्दू नाम निरूपण) को मैंने बहुत चाव से पढ़ा। और मुझे यह कहने में प्रसन्नता होती है कि इससे मैंने बहुत लाभ उठाया। विशेषकर अरबी कवियों की कविताओं में हिन्दू, हिन्दुस्तान और महादेव तथा वेदों आदि की चर्चा देखकर तो मैं चकित रह गया।

Syed Asim Ali
Lecturer, Deptt. of English
A.M.U. Aligarh

आपका आभारी
स० अ० अली

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

डा० कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह
संस्थापक संरक्षक
अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति
टेनेसी-३७१२९
अमरीका

फोन : ३२८०१७
सावित्री निलयम,
२/२२, त्रिवेणीनगर,
लखनऊ-२२६०२०
दिनाँक १६.१२.१९९३

शुभ कामना

श्री जगदम्बाप्रसाद ने अपना अब तक का जीवन हिन्दू धर्म और समाज की सेवा में अर्पित कर दिया है। उन्होंने तन और मन तो हिन्दू धर्म और समाज की सेवा में लगा ही दिया, सात्विक जीवनचर्या और तपस्या से पूत अपनी मेधा भी अनवरत् अपने लेखन कार्य से हिन्दू गौरव के प्रचार–प्रसार में लगा दी। उनकी अनेक छोटी बड़ी प्रामाणिक पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं. जो हिन्दुत्व की चेतना को परिष्कृत, प्रबुद्ध और परिगठित करती आयी हैं। जिस एकान्त निष्ठा से और निःस्वार्थ भाव से उन्होंने यह वाड़्गमयी सेवा की है, वह वंदनीय और अभिनन्दीय है।

"हिन्दू गौरव" उनकी नवीनतम कृति है। इसमें जगदम्बाप्रसाद जी ने बड़ी मूल्यवान सामग्री संकलित की है। गहन अन्धकार में डूबे इतिहास के पृष्ठों की जीवनदायिनी झलकियाँ इस पुस्तक में मिलती हैं। इस्लाम आविर्भाव के पूर्व मक्का के इतिहास पर भी यह ग्रन्थ कुछ प्रमाणपुष्ट प्रकाश डालता है। मैं समझता हूँ कि हिन्दुओं के लिए ज्ञातव्य और ध्यातव्य सब प्रकार की आवश्यक सामग्री इस पुस्तक में संकलित है। हिन्दू बालकों के अनिवार्य पाठ्यक्रम में इस पुस्तक को स्थान मिलना चाहिए। श्रीसम्पन्न जनों को इस पुस्तक को प्रकाशित कर समाज में वितरित करना चाहिए। मुसलमान बन्धुओं में भी इस पुस्तक को वितरित करना चाहिए, जिससे वह जान सकें कि मूलतः वे भी हिन्दू ही है।

मैं इस अनमोल रचना का स्वागत करता हूँ।

चन्द्र प्रकाश सिंह
एम० ए० डी० लिट्
भूतपर्व आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, बड़ौदा वि० वि०
जोधपुरा वि० वि०,मगध वि० वि०
भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू जीवन रचना

सनातन धर्म, हिन्दू धर्म या हिन्दू जीवन–पद्धति की अवधारणा अद्‌भुत है। इसमें वह सब कुछ समाविष्ट है जो मानवता के कल्याण के लिए अभीष्ट है। यह विश्व का प्राचीनतम धर्म या जीवन–रचना है। प्राचीन होते हुए भी इसमें आधुनिकता के सभी विचारों को अपने में पचा लेने की कल्पनातीत क्षमता है। शांति एवं आत्मज्ञान के लिए सम्पूर्ण जगत हिन्दू धर्म की ओर उन्मुख रहा है।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्विध पुरूषार्थ द्वारा हिन्दू जीवन पद्धति ने सम्पूर्ण मानव समाज की प्रतिष्ठा की है और उसके वहिर्जगत और अन्तर्जगत दोनों को सुखमय बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

उपासना की स्वतंत्रता

उपासना की स्वतंत्रता व सहिष्णुता हिन्दू धर्म की विशेषता है। धर्म का मत–मजहब, सम्प्रदाय निरपेक्ष रूप ही मानव मात्र में एकात्मकता का भाव जगाकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस दृष्टि से हिन्दू–जीवन–दर्शन सर्वश्रेष्ठ है। इस युग की मांग है एक ऐसा "विश्वधर्म" जो समस्त मानवता को अपने पाश में समेट सके। ज्ञान–विज्ञान के प्रकाश में तथा दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर हिन्दू धर्म या सनातन धर्म ही इस कसौटी पर खरा उतरता है। महात्मा गाँधी के शब्दों में हिन्दू धर्म का मूलाधार नैतिकता तथा सदाचार है तथा वह सबको स्वीकार होने योग्य है।

रीति-रिवाजों की रूढ़ियां धर्म नहीं

विगत लगभग हजार–बारह सौ वर्षो की राजनीतिक उथलपुथल तथा संघर्ष में कतिपय रूढ़ियां तथा रीति–रिवाजों की कुंठायें उत्पन्न हो गयीं जिनसे हमारा समाजिक जीवन बोझिल हो गया। देशकाल की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार समाज की रीति–नीतियों को दिशा देने के उद्देश्य से पूर्व काल में मनु, पाराशर, याज्ञवल्क्य से लेकर देवल तक अनेक स्मृतिकार हुए जिन्होंने समय–समय पर बदलती परिस्थितियों के अनुसार समाज को युगानुरूप नई दिशा दी :–

अन्ये कृतयुगेधर्मस्त्रेतायां द्वापरेऽपरे।
अन्ये कलियुगे नृणां युग ह्वासानुरूपत:।।

–मनु०

किन्तु बिगत संघर्षकाल में कोई नया स्मृतिकार नहीं हुआ। हिन्दू समाज

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

की लम्बी इतिहास यात्रा में, उसके क्रमिक विकास तथा सतत् सत्यान्वेषण की मनोवृत्ति को न समझकर, संघर्ष–काल में समाज रक्षा के लिये अपनायी गयी रीति–नीतियों को ही लोग धर्म मानने लगे। परन्तु भारत वसुन्धरा रत्नगर्भा है। समय–समय पर अनेक महापुरुषों तथा साधु–सन्तों ने जन्म लिया और समाज को नई राहें दिखाई, रूढ़ियों को तोड़कर उसे सुधार की ओर अग्रसर किया। महाबीर, भगवान बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्य, रामानन्द, संत रैदास, गुरु नानक देव, गोस्वामी तुलसीदास और समर्थगुरु रामदास से लेकर रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, सावरकर, डॉ० हेडगेवार श्री गुरुजी (माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) और डा० अम्वेदकर आदि महापुरुष इसी हिन्दू जीवन रचना से निकली महती शक्तियां थीं जिनके कारण हिन्दू समाज अनेक विविधताओं में सामन्जस्य स्थापित कर संघर्षों में विजय प्राप्त कर सका और आगे बढ़ने में सक्षम हुआ।

संगठन की आवश्यकता

अनेक विचारों तथा संस्कृतियों के बीच संघर्ष की रोचक कथाएँ अपने इतिहास तथा पुराणों में लिखी हैं। यह संघर्ष आज भी विद्यमान हैं। संघर्ष केवल संस्कृति और विचारों तक सीमित नहीं है। राजनीतिक स्वार्थो की भी लड़ाई चलती रहती है। देश का विभाजन, पाकिस्तान और उसके बाद बांग्लादेश का निर्माण, सरकारी नौकरियों में संख्या के अनुपात से आरक्षण, इन के लिये जद्दोजेहद, नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम आदि अनेक अंचलो में हिन्दुओं का बड़े पैमाने पर ईसाईकरण की नीति, मुसलमानों द्वारा इस्लामीकरण की मुहिम, यह सब चुनौतियाँ प्रत्येक हिन्दू के सामने हैं। इन अनेक प्रश्नों का एक ही उत्तर है– हिन्दू संगठन, हिन्दू स्वाभिमान का जागरण। हमें हिन्दू जीवन रचना इतनी सक्षम तथा अपना सामाजिक संगठन इतना प्रभावशाली बनाना चाहिये कि उसका सर्वहितकारी, विश्वव्यापी, सर्वस्पर्शी तथा सर्व संग्राहक वास्तविक रूप निखर कर सामने आवे तथा उसकी अस्मिताओं पर आक्रमण करने की दुर्भावना किसी के मन में उत्पन्न न हो।

हिन्दू संगठन कैसा हो ?

हिन्दू समाज संगठित करने का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति दैनन्दिन यह विचार करे कि वह हिन्दू है और जीवन का प्रत्येक व्यवहार हिन्दू आदर्शो के अनुसार ढाले। जीवन के सभी क्षेत्रों में हमारी भावात्मक निष्ठा और एकता की छाप स्पष्ट रूप से व्याप्त होनी चाहिए। हिन्दू होने के नाते यह सभी का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

संगठन का आधार- 'हिन्दू' शब्द

विश्व में रहने वाले लगभग ८० करोड़ विशाल हिन्दू समाज को 'सूत्रे मणिगणा इव' भावात्मक एकता में सूत्रबद्ध करने वाला एक शब्द 'हिन्दू' है। यदि हिन्दू नाम हटा दिया जाय तो बृहत् हिन्दू परिवार अलग-अलग और कभी परस्पर विरोधी मत-सम्प्रदायों, पंथो-उपपंथों तथा राजनीतिक दलों में विभाजित जनसमूह मात्र रह जाता है। 'हिन्दू' नाम ही हमारे सामाजिक सांस्कृतिक तथा धार्मिक संगठन तथा आत्म गौरव का आधार है। किसी जाति, राष्ट्र अथवा समाज की शक्ति उसके आत्मगौरव में निहित रहती है। स्वाभिमानशून्य तथा आत्मगौरवहीन समाज अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है ।।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

लोक व्यवहार में ऐसा कोई भी ज्ञान नहीं है जो शब्द से अनुबद्ध न हो। 'कमल' कहते ही उसकी सुगन्ध, रूप-रंग, स्मृति पटल पर प्रतिविम्बित हो उठती है। नाम के साथ ही उस वस्तु के विशेष गुणों का स्मरण होता है।

देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना ।।
रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहि पहचाने ।।

—तुलसीदास

नाम का ऐसा व्यापक प्रभाव होता है। व्याकरण शास्त्र में 'नाम' को संज्ञा क़हते हैं। संज्ञा शब्द का अर्थ ही है अच्छी प्रकाऱ ज्ञान कराने वाला। नाम का यथार्थ ज्ञान न हो तो नामोच्चारण मात्र से हृदय में जो भाव उत्पन्न होते हैं, या कल्पना जो चित्र बनाती है, वह अवश्य ही विकृत होंगे। नाम के बिना रूप और रूप के बिना नाम का बोध नहीं होता। दोनौं अन्योन्याश्रय सम्बन्ध से जुड़े रहते है। गाय कहते ही हमें उसकी आकृति का ज्ञान होता है। शब्द और अर्थ अविभक्त रूप से साथ रहते है प्रत्येक शब्द का अपना एक भाव चित्र होता है।

अतः हिन्दू शब्द की उत्पत्ति, उसका इतिहास तथा परिभाषा जानने की आवश्यकता है। इसलिए यह और भी आवश्यक हो गया है क्योंकि हिन्दू समाज के शत्रुओं ने अपने निहित राजनीतिक स्वार्थो के कारण हिन्दू शब्द के सम्बन्ध में अनेक भ्रम उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है और अपने साहित्य में उसकी गलत अर्थ योजना की है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दुओं का गौरवशाली अतीत

भारत, अरब, ईरान, मिस्र, आदि देशों के प्राचीन साहित्य तथा इतिहास के अनुशीलन के आधार पर अब यह निर्विवाद है कि निकट पश्चिमोत्तर देशों में इस्लाम अभ्युदय से पूर्व हिन्दू धर्म का व्यापक प्रचार था और 'हिन्द' तथा 'हिन्दू' को बड़े गौरव का स्थान प्राप्त था। सभ्यता संस्कृति और अध्यात्म की दृष्टि से भारत 'जगद्‌गुरु' था और विपुल धन वैभव की दृष्टि से 'सोने की चिड़िया' जाना जाता था।

महाभारत के अनुसार सप्तगणों को पाण्डवों ने परास्त कर उन्हें पीछे हटने पर बाध्य किया था। इन्ही सप्तगणों में से किसी एक गण ने आगे बढ़कर 'उपगण' या 'अपगण' राज्य की स्थापना की जो आगे चलकर अफगानिस्तान प्रसिद्ध हुआ। अफगानिस्तान का शुद्ध उच्चारण 'उपगणस्थान' है। महाभारत की प्रसिद्ध गांधारी जो धृतराष्ट्र की पत्नी थी, इसी देश की राजकुमारी थी।

इसी प्रकार बलूचिस्तान भी बलोच्चस्थान का अपभ्रंश है। इसमें केलात (कलात) नामक नगर आज भी विद्यमान है। यह केलात तब का है जब 'किरात' नामी आर्य क्षत्रिय यहाँ आकर बसे थे। यह क्षत्रिय होने से बल में उच्च स्थान प्राप्त कर सके थे इसीलिये अपने स्थान का नाम बलोच्चस्थान रखा था।

अफगानिस्तान के आगे 'ईरान' है जिसे पारश्य या पारस देश भी कहते हैं। यहाँ पहले वह जाति आबाद थी जो आजकल हिन्दुस्तान में पारसी नाम से प्रसिद्ध हैं। यह जाति प्राचीन काल में ही आर्यो से जुदा होकर ईरान में आबाद हुई थी। **(It can now be proved by Geographical evidence that Zoroastrians had been settled in India before they migrated into Persia (Chips from German workshop)** वे यहाँ से नदियों के नाम भी ले गये। उन्होनें 'सरस्वती के स्थान पर 'हरहवती' और सरयू के स्थान पर 'हरयू' नाम रखा। वे अपने साथ शहरों के नाम भी ले गये। उन्होनें 'भारत' को 'फरत' किया और वही फरत 'युफरत' हो गया। उन्होंने भूपाल (न) को वेबिलान और काशी को कास्सी **(Cassoci)** तथा आर्यन को ईरान नाम प्रसिद्ध किया। इस प्रकार पारसी भी भारतीय आर्यो की शाख है।

ईरान के पास ही 'अरब' है। वैदिक भाषा में अर्बन घोड़े को कहते हैं और जिस जगह घोड़े रहते है उस स्थान को 'अरब' कहते हैं। जिस प्रकार गौओं की बड़ी चरगाह को 'ब्रज' और भेड़ बकरी वाले देश को 'गन्धार' कहते हैं।इसी प्रकार जहां अच्छी जाति के घोड़े रहते हैं उसको 'अरब' कहते हैं अब भी अरबी घोड़ा सर्वोपरि माना जाता है। उत्तम घोड़े उत्पन्न होने के कारण आर्यो ने इस देश का नाम अरब रक्खा था। स्मृतियों को पढ़ने वाले जानते हैं कि आर्यो से उत्पन्न एक जाति को 'शैख' कहते हैं।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

व्रत्यालु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्ज कण्टकः ।
आवन्त्यवात्टधानौ च पुष्पधः शैखएव च ।।
(मनुस्मृति १०–२१)

शेखों का अरब में वैसा ही सम्मान है जैसा भारत में ब्राह्मणों का है। यह प्रसिद्ध बात है कि मुसलमान होने से पहले वहाँ के निवासियों में ब्राह्मण भी थे। अरब से ही रामानुज सम्प्रदाय के मूल प्रचारक श्री यावनाचार्य भारत आये थे। उस समय यहाँ महात्मा शटकोप आदि आन्दोलनकर्ताओं को यावनाचार्य ने मदद दी । एशियाटिक रिसर्च/ भाग १० में बिलफोर्ड नामक विद्वान द्वारा लिखित निबन्ध छपा है। इसके अनुसार यावनाचार्य का जन्म अरब देश के एक ब्राह्मण कुल में हुआ था और अलेक्जेंड्रिया के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में उन्होंने शिक्षा पाई थी।

कर्नल टाड ने अपने राजस्थान के इतिहास, भाग २ में लिखा है कि जैसलमेर के यदुवंशी राजाओं की सीमायें गज़नी से समरकंद तक फैली थीं। बाबर ने गज़नी का बयान करते समय लिखा है कि रायहिंद ने सुबुक्तगीन को गज़नी में घेर लिया और जब कोई दूसरा रास्ता न रहा तो सुबुक्तगीन ने पानी के चश्मों में गोमांस डलवा दिया जिसके कारण हिन्दू सैनिकों को वापस लौटना पड़ा।

हिन्दुत्व का विस्तार

वैदिक काल में अन्य धर्मावलम्बियों को वैदिक धर्म अथवा सनातन धर्म में लेने की प्रक्रिया को 'व्रात्यस्तोम' कहते थे। अनेक देशों के वर्णो तथा जातियों को सनातन धर्म ने अपने बाहुपाश में समेटने का काम किया है। ऋषि पुलस्त्य धर्म प्रचार के लिये आस्ट्रेलिया गये थे। वहाँ के राजा तृणविन्दु की पुत्री से उनका विवाह हो गया। उसी से विशश्रवा पैदा हुआ जो रावण का पिता था। रावण का राज्य समस्त दक्षिण टापुओं आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, मेडागास्कर आदि तक फैला था।

कण्व ऋषि ने मिस्त्र देश में जाकर वहाँ के दस हजार निवासियों को सनतान धर्म, भाषा और संस्कृति सिखाकर आर्य (हिन्दू) बनाया। पहले उनको शूद्र कोटि में रखा, फिर उनमें से कुछ अपने गुणकर्मानुसार वैश्य बन गये, बाद में क्षत्रिय और ब्राह्मण। महाभारत, रामायण और पुराणों में सनातन धर्म प्रचार व प्रसार की अनेक कथायें कही गई हैं। उन्हें समझकर पढ़ने और युगानुसार आचरण करने से 'कृण्ण्वन्तो विश्वमार्यम्' का मंत्र पुनः साकार किया जा सकता है।

परिणामतः सभी प्रधान–प्रधान देशों के रहने वाले जिनके आचार व्यवहार, रीति–रस्म, खान–पान, अवैदिक थे आर्यो में मिल गए और उनके आचार विचार

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
आर्यो में दाखिल हो गए। यह मिश्रण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी वर्णो में हुआ था। सतत विकासमान सनातन धर्म की लम्बी यात्रा में राजनीतिक, सांस्कृतिक/सामाजिक उथल–पुथल में सबको समाविष्ट करने वाला नाम 'हिन्दू' इसी काल में प्रचलित हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नहीं। हिन्दू नाम कब से चला इसका ठीक पता इतिहास अभी तक नहीं लगा पाया है। किन्तु यह निर्विवाद है कि यह नाम विशाल भारत में रहने वाली जनता का था जिसमें अनेक प्रकार की पूजा उपासना करने वाले लोग शामिल थे।

ईसामसीह से लगभग दो सदी पूर्व यूनान का राजा मिलिन्द अपनी धार्मिक जिज्ञासा पूर्ति के लिये भारत आया था और नागसेन से ज्ञान प्राप्त कर बौद्ध धर्मानुयायी बन गया था। अगाथाकल्स नाम के एक अन्य राजा ने अपने सिक्कों पर बुद्ध की प्रतिमा अंकित करवाई थी और अपने को हिन्दजा (अर्थात् हिन्द देश में जन्म लेने वाला) कहता था। यूनान देश में धर्म तथा तत्वज्ञान का प्रचार करने वाला पाइथागोरस भारतीय जनश्रुतियों के अनुसार हिन्दू ही थे। शुद्ध रूप से इनका नाम 'पृथ्वीगुरु' था। इस की ऐतिहासिक साक्ष्य अभी तक उपलब्ध नहीं है, किन्तु अपने अध्ययन के परिणाम स्वरूप मैक्समूलर ने इतना तो स्वीकार किया है कि वह भारत में नहीं तो पर्शिया में ब्राह्मण धर्म प्रचारकों के सम्पर्क में आये थें। उन्होंने ज्योमिती शास्त्र के अनेक प्रतिपादन बौधायन के शुल्व सूत्रों से ही लिये हैं।

तक्षशिला निवासी हीलियोडारिस ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था और एन्टियालिस का दूत बनकर शुंग राजा भागभद्र के दरबार में विदिशा आया था। यहाँ आने की स्मृति में उसने एक गरुड़स्तम्भ का निर्माण कराया था। विद्वान ब्राह्मण कालानूस (शुद्ध संस्कृत नाम कल्याणमस्तु) को सिकन्दर अपने साथ ले गया था। महाराज ययाति के दूसरे पुत्र का नाम तुरबसु था। इसे पश्चिम देश का राज्य मिला था। तुरबसु ने ही अपने नाम पर तुरबसुस्थान राज्य का निर्माण किया जो आगे बदल कर तुर्किस्तान या अंग्रेजी में टर्की हो गया। इसका वर्णन श्रीमद्भागवत में जो आज से हजारों वर्ष पहले महाभारत–काल का ग्रन्थ है उसमें भी तुर्वसु का प्रसंग आया है जो कि नीचे के श्लोक से स्पष्ट है :–

दिशि दक्षिणपूर्वस्यां द्रुह्युं दक्षिणें यदुम् ।
प्रतीच्यां तुर्वसुं चक्र उदीच्यामनमीश्वरम् ।।
(श्री मद्भागवत) ९/१९/२२

इससे स्पष्ट है कि प्रतीचि (पश्चिम) दिशा का राज्य तुर्बसु को उसके पिता ने दिया। मनुस्मृति के अनुसार पौण्ड्र, औण्ड्र, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्लव, चीन, किरात, दरद, खस आदि जातियाँ इन देशों में संस्कार कराने वाले ब्राह्मणों के न रहने से धीरे–धीरे संस्कारहीन होकर दस्यु बन गयीं।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

शनकैस्तु क्रिया लोपाद्विजा क्षत्रिय जातयः ।
बृषलत्वं गतालोके ब्राह्मणादर्शनेन च ।।

इस्लाम पूर्व अरब में 'हिन्दू'

मोहम्मद साहब से पहले अरब देशों में शिव पूजा प्रचलित थी। उस समय की प्राप्त कविता में भारत के लिए 'हिन्द' शब्द का प्रयोग पाया जाता है। स्वयं मोहम्मद साहब के चाचा 'उमर बिन हश्शाम' अच्छे शायर थे। उन्होंने अपनी शायरी में 'हिन्द– 'हिन्दू' और 'महादेव' का नाम बडे आदर से लिखा है। जिरहम बिनतोई एक दूसरे अरबी शायर के अनुसार सम्राट विक्रमादित्य के शासन का विस्तार अरब देशों तक था और उसने वहाँ हिन्दू धर्म प्रचारक भेजे थे। यह शायरी 'सैरुल अकूल' नामक अरबी काव्य संग्रह में संग्रहीत है। यह काव्यसंग्रह इस्तम्बोल के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित कहा जाता है।

उमर विन हश्शाम का उपनाम 'अबुल हकीम' अर्थात् ज्ञान का पिता था जिसको द्वेष या पक्षपात के कारण बदल कर मुसलमानों ने 'अबूजिहल' अज्ञान का पिता कर दिया। उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था तथा एक युद्ध में मुसलमानों से लड़ते–लड़ते परलोकवासी हुये।

अरबी भाषा में इनकी कविता

कफाविक जिकरामिन अलूमिन तब असेरू ।
कलूबन अमततुल हवा व तजक्करू ।।१।।

वमतजकेरोहा ऊदन एललवदए दिलवरा ।
वलुकयाने जात अल्लाहे यौम तब असेरू ।।२।।

व अहलोलहा अजह अरमीमन 'महादेवओं' ।
मनाजिल इलमुद्दीने मिनहम, वसयत्तरू ।।३।।

व सहबी केयाम फी मकामिल 'हिंदें' यौमन।
व यकूलन लातहजन फ इन्नक तवज्जरू ।।४।।

मअस्सयरे अखलाकुन हसनन कुल्ल्हुम।
नजूमुन अजाअत सुम्म गाबुल 'हिन्दू' ।।५।।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

इसका अर्थ है कि :–

(१) वह मनुष्य जिसने सारा जीवन पाप और अधर्म में बिताया हो, काम, क्रोध में अपने जीवन को नष्ट किया हो;

(२) यदि अन्त में इसको पश्चाताप हो और भलाई की ओर लौटना चाहे तो क्या इसका कल्याण हो सकता है ? हाँ, (हो सकता है)

(३) यदि एक बार भी सच्चे हृदय से वह 'महादेव' की पूजा करे तो धर्म मार्ग में उच्च पद को पा सकता है।

(४) हे प्रभु! मेरा समस्त जीवन लेकर एक दिन हिन्द निवास का दे दो क्योंकि वहाँ पहुँच कर मनुष्य जीवन मुक्त हो जाता है।

(५) वहाँ की यात्रा से सारे शुभ कर्मो की प्राप्ति होती है और आदर्श गुरुओं का सत्संग मिलता है।

● वेदों की स्तुति

एक और कवि जिसका नाम "लबी बिन अखतब बिन तुर्फा" था, अरब देश में हजरत मोहम्मद से भी २३०० वर्ष पहले हुये। इनकी अरबी भाषा में कविता निम्नलिखित है :–

अया मुबारकेल अरज यू शैये नोहा मिलन हिंदे ।
व अरादकल्लाह: मञ्योनज्जेल ज़िकरतुन ।।१।।

वहल तजल्लीयतुन एनाने सहबी अख़अतुन ज़िकरा ।
वहाजे ही योनज्जेलुर्रसुल मिलन हिंदतुन ।।२।।

यकूलुनल्लाह: या अहलल अरज आलमीन कुल्लहुम ।
फत्तबेऊ जिकरतुल 'वेद' हक्कुन मालम योबज्जेलतुन ।।३।।

व होवा आलमुस्साम वल 'यजुर' मेनल्लाहे तनजीलन ।
फऐनोमा या अखीयों मुत्तवेअन यो बश्शेरी या नजातुन ।।४।।

व इसनैन हुमा 'रिक अतर' तासिहीन क: अखवतुन ।
व असनात अला ऊदन वहोवा मशाएरतुन ।।५।।

सेअरुल अकूल पृष्ठ १५७

इसका अर्थ यह है कि:–

हे हिन्द की पुण्य भूमि ! तू धन्य है, क्योंकि ईश्वर ने अपने ज्ञान के लिये तुझको चुना है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

वह ईश्वर का ज्ञान प्रकाश जो चार प्रकाश ज्ञान स्तम्भों के सदृश सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है हिन्द के ऋषियों द्वारा चार रूप में प्रकट हुआ है।

और परमात्मा समस्त संसार के मनुष्यों को आज्ञा देता है कि वेद जो मेरे ज्ञान है, इसके अनुसार आचरण करो।

वह ज्ञान के भण्डार साम (वेद) और यजु(र्वेद) हैं जो ईश्वर ने प्रदान किये। इसलिये हे मेरे भाइयो ! इनको मानों क्योंकि यह हमें मोक्ष का मार्ग बताते है।

और दो उनमें से रिक और अतर (ऋग्वेद और अथर्ववेद) हैं जो हमको भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं, जो इनके प्रकाश में आ गया वह कभी अन्धकार को प्राप्त नहीं होता है।

(उपरोक्त दोनों उद्धरण लक्ष्मी नारायण मन्दिर (दिल्ली) की गीता बाटिका में अंकित है)

★ मध्य एशिया, अफगानिस्तान आदि देश हिन्दू सांस्कृतिक प्रभाव के क्षेत्र थे। पाणिनि से लेकर महायान बौद्ध पंथ प्रणेता बसुबंधु इसी क्षेत्र के निवासी थे। भारत के उंत्तर पश्चिमी सीमा पर सातवीं शताब्दी तक तीन हिन्दू राज्य थे।

(१) काबुल या कपिशा का राज्य

(२) जाबुल (जाबाल या जाबुलिस्तान)

(३) सिंध

काबुल नदी का प्राचीन नाम कुभा नद है।

(डा० आशीर्वादी लाला, इतिहास विभागाध्यक्ष आगरा वि० वि०)

★अब्बासी खलीफाओं के शासन काल में भारत से विद्वान पंडितो को बुलाकर गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष् आदि संस्कृत ज्ञान ग्रंथो का अनुवाद अरबी में कराया गया था।

★अरब वालों ने दशमलव विधि से संख्या लिखना भारत से सीखा और वहां उसका प्रचार यूरोप के अन्यान्य देशों में गया। अरबी वर्णमाला दाहिने से बांयी लिखी जाती है किन्तु संख्यॆा जिसे 'हिन्द से' कहते हैं बाईं और से लिखी जाती है जैसा हिन्दी या संस्कृत वर्णमाला में लिखते हैं।

★ खलीफा हांरु रशीद बीमार पड़े तो उनके इलाज के लिए भारत से 'माणिक्य' नामक वैद्‌य को ले जाया गया।

★ प्राचीन अरब पुनर्जन्म मानते थे। 'अलमिलल बन्हल' में लिखा है 'बमिनल अरबे मन यता अक्कुदो तनासुखा' अर्थात प्राचीन अरब पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

तारीख फरिश्ता के अनुसार जब मक्का के प्रमुख मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनाई जाने लगी तो उस मंदिर की जो बड़ी मूर्ति थी उसे वहां से लेकर पुजारी भागा और उसे भारत वर्ष में लाकर सोमनाथ के मंदिर में पुनः स्थापित किया।

(देखो ज्ञानेन्द्रदेव सूफी मौलवी फाजिल का लेख साप्ताहिक पांञ्चजन्य १४/११/६३)

★ प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्री, 'वृहत संहिता' के रचयिता वाराहमिहिर जो विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे, विक्रमादित्य के दूत बनकर रोमन सम्राट आगस्ट से मिले थे। दोंनो देशों के बीच व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध होने का यह एक और प्रमाण है।

आदर एवं गौरव सहित 'हिन्दू' नामकरण

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी साप्ताहिक 'आरगेनाइजर' में डा० जीलानी की लेखमाला प्रकाशित हुई थी। इसके अनुसार अरब में अनेक महिलाओं का नाम 'हिन्द' था। पैगम्बर मोहम्मद साहब की अनेक पत्नियाँ थीं, उनमें से भी एक का नाम 'हिन्द' था। प्रेम कथा साहित्य की प्रसिद्ध नायिका 'लैला' का भी असली नाम 'हिन्द' था। सय्यद सुलेमान नदवी लिखित सीरतुन्नवी के अनुसार अमीर मुवाइविया की मां रईसुल अरब अतबा की पुत्री का नाम 'हिन्द' था।

हिन्दू तथा हिन्द शब्द के लिए उस समय संसार में इतना आदर था कि लोग उसके नाम पर अपने बच्चों का नाम रखते थे।

★ काबा के विशाल मन्दिर में जिसे मक्केश्वर कहते थे प्रति पाँच वर्ष में अखिल अरब सम्मेलन होता था। उसमें सर्वश्रेष्ठ कवि की रचना सोने की तख्ती पर अंकित कर प्रदर्शित की जाती थी। मोहम्मद साहब ने जब काबा पर कब्जा किया और सभी ग्रन्थों को जलाया जाने लगा तब कवि की बिनती पर कुछ स्वर्णांकित काव्य के नमूने बच गये। आगे चलकर हसन–अल–रशीद खलीफा ने मुहम्मद पूर्व काव्य का संग्रह कर एक ग्रन्थ तैयार किया जिसमें 'महादेव' 'हिन्दू' तथा 'विक्रमादित्य' का ससम्मान उल्लेख पाया जाता है।

अन्य साक्ष्य

★ दक्षिण तुर्किस्तान में वोगाझकोइ स्थान पर विक्रम पूर्व १५००–१८०० के दो शिलालेख मिले हैं जो हित्ती (हस्तिन) लोगों के अस्तित्व एवं साम्राज्य के निदर्शक हैं। प्रथम शिलालेख में संधि के उपरान्त उसके संरक्षण हेतु वैदिक इन्द्र एवं वरुण का आवाहन किया गया है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

★ एक पारसी स्तोत्र में कहा गया है कि 'श्रोत' नाम का यष्ट (यक्ष) अपने दिव्य रथ पर बैठकर पूरब दिशा में स्थित हिद्वो याने हिन्द देश से रोज निकलता है और पश्चिम के निग्ने नाम के प्रदेश तक संचार करता है। निग्ने सम्भवतः नैनेन्हुआ था जिसे वेबीलोनिया के लोगों ने ६१२ ई० पू० में नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था।

★ पारसियों की प्रमुख पत्रिका 'पारसियाना' के फरवरी १९६६ में बहरुम पिठावाला ने 'हिन्दू' शब्द की उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि पारसियों के प्राचीन ग्रन्थ 'बेंदियाद' के प्रथम अध्याय श्लोक सं० १९ में जिन २६ शुभ माने जाने वाले देशों का नाम दिया गया है उनमें 'हफ्त हिन्द' (सप्त सैन्धव) भी है।

★ पारसियों के एक अन्य ग्रन्थ में सम्राट 'गुस्तास्प' और 'जरतुश्त' की बातचीत में 'बिरहमने ब्यास अज हिन्द आमद' (हिन्दुस्तान देश से व्यास नाम का ब्राह्मण आया) और 'चूं व्यास हिन्दी बलख आमद गुस्तास्प जरतुश्तरा वख्वाँद। (व्यास हिन्दी के बलख पहुँचते ही सम्राट गुस्तास्प ने जरतुश्त को बुलाया।)

व्यास ने अपना परिचय देते हुए स्वाभिमान पूर्वक कहा 'मन मर्दे अम अज् हिन्दी निजाद' मैं हिन्द देश से आया हूँ तथा 'बहिन्द बाज़गश्त' फिर हिन्दुस्थान लौट गया।

इस प्रकार इतिहास साक्षी है कि अति प्राचीन काल से हिन्दुस्तान और हिन्दुओं का सम्बन्ध अरब, ईरान, बलोचिस्थान, यूनान आदि देशों से रहा है।

पंडित सुन्दर लाल कृत 'भारत में अंग्रेजी राज' भाग १ पृष्ठ ४८ पर इस विषय में अच्छा प्रकाश डाला गया है। वह लिखते हैं :-

"भारत के साथ अरबों का घनिष्ठ सम्बन्ध पहले से ही था। भारतीय माल के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और भारतीय विद्याओं का लेन-देन भी शीघ्र ही शुरु हो गया। शुरु के खलीफ़ाओं के दिनों में अनेक हिन्दू बसरा में ऊँचें-ऊँचे पदों पर नियुक्त थे। शाम काशगर आदि में हिन्दुओं की बस्तियाँ थी। खुरासान, अफगानिस्तान और बलोचिस्तान इस्लाम मत स्वीकार करने से पहले या तो बौद्ध थे या हिन्दू। बलख में एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था जिसके बौद्ध मठाधीश अब्बासी खलीफाओं के वज़ीर भी हुआ करते थे।

बौद्ध धर्म की सब मुख्य-मुख्य पुस्तकों के अरबी में अनुवाद किये गये। विशेषकर महात्मा बौद्ध के जीवन और उनके सिद्धान्तों का अरब के मुसलमानों

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

पर बहुत प्रभाव पड़ा। धीरे–धीरे जिज्ञासु अरबों में तरह–तरह के स्वतंत्र विचार व नये–नये सम्प्रदाय पैदा होने शुरु हो गये। इस परिस्थिति के अन्दर इस्लाम में अद्वैतवाद और सूफी विचारों का जन्म हुआ।

मध्य एशिया के दक्षिण में अफगानिस्तान और बलोचिस्तान और उसके आस–पास के प्रदेश ईसा से करीब एक हजार साल पूर्व से औरंगजेब की मृत्यु तक हिन्दुस्तान, ईरान और ईराक के पश्चिमी देशों के बीच विवादग्रस्त भूमि रहे। भारत के अनेक हिन्दू और मुसलमान सम्राटों ने भारत में बैठकर सीस्तान, हिरात और अफगानिस्तान पर हुकूमत की थी।"

★ सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ सिलवाँन लेवी के अनुसार फारस से चीन समुद्र तक, साइबेरिया के बरफानी क्षेत्रों से जावा और बोरनियों तक, भारत ने अपने धर्म विश्वासों (हिन्दू धर्म) यहाँ की गाथाओं तथा सभ्यता संस्कृति का प्रचार व प्रसार कर एक चौथाई विश्व पर अपनी अमिट छाप डाली है। संसार की सभ्यता संस्कृतियों में भारत प्रथम स्थान पाने का अधिकारी है।

फारस देश के विषय में ह्वेनसांग ने लिखा है:-

"यहाँ पर हिन्दू धर्मावलम्बी प्रायः सभी नगरों में अपने धर्मानुसार जीवन यापन करते निवास करते हैं।"

बील (Beal) बुद्धिस्ट रेकार्ड्स भाग २ के अनुसार वहाँ ख्वाजा पर्वत से ऊपर बौद्ध चैत्यों के अवशेष विद्यमान है। इस्लाम धर्म प्रवर्तन से पहले बौद्ध धर्म का प्रसार कास्पियन समुद्र से लेकर जापान तक था।

The names of India (T'ien chu) are various and perplexing as to their authority. It was anciently called Shin-tu, also Hien-tu; but now, according to the right pronunciation, it is called In-tu. In Chinese the name signifies the Moon so it is called In-tu. Buddhist Records of the Western World, tr, Samuel Beal, from the Chinese of Hiuen-Tsang (London: Trubner & Co., 1884), Vol.I,p. 69

तीसरी शताब्दी ई० पू० में १८ चीनी विद्वान बौद्ध धर्म शिक्षा प्राप्ति हेतु भारत आये थे।

कश्यपमातंग और धर्मरत्न ने सन् ६८ ई० में चीन जाकर वहाँ कई ग्रन्थों की रचना की। चतुर्थ शताब्दी में कुमारजीव बौद्ध भिक्षु चीन गये। इन्होंने १२ वर्षो तक लगभग १०० ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया। ४१३ ई० में वे दिवंगत हुए।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

इनके सहयोगी बुद्धयश व धर्मयश ४१७ ई० तक अनुवाद कार्य में संलग्न रहें। छठी शताब्दी में लगभग ३,००० बौद्ध भिक्षु और १०,००० भारतीय कुटुम्ब चीन के लोयांग प्रान्त में निवास करते थे। कुमारजीव के पिता भारतीय थे वे एशिया महाद्वीप के मध्य भाग में गये और कुची प्रदेश के राजवंश के गुरु हुए। उन्होंने जीवा नामक राजकन्या से विवाह किया जिसके पुत्र कुमारजीव थे। कुमारजीव का अध्ययन काश्मीर में हुआ जहाँ से वह कुची प्रदेश लौट कर वहाँ एक विश्वविद्यालय की स्थापना की।

ईसा की पहली शताब्दी में कौन्डिन्य नामक वैदिक धर्मानुयायी तथा पराक्रम परायण वीर ने कम्बोडिया जाकर भारतीय संस्कृति व धर्म का प्रचार किया। उनके वंशजो ने वहाँ २०० वर्ष राज किया।

भारत के भूतपूर्व विद्वान राष्ट्रपति
डा0 राधा कृष्णन के अनुसार

"हिन्दुत्व किसी जातीय तथ्य पर आधारित नहीं है। हिन्दू जीवन रचना का मूल यद्यपि वैदिक है परन्तु उसके बहुत लम्बे जीवन प्रवाह में अन्य सभ्यताओं, संस्कृतियों के सामाजिक जीवन से इतना मेल–जोल हुआ कि आज हिन्दुत्व में से वैदिक और अवैदिक तत्वों को अलग–अलग कर पाना कठिन है। हिन्दू धर्म समन्वयवादी है। जिन लोगों ने हिन्दू आचार व्यवहार तथा जीवन दर्शन स्वीकार कर लिया, हिन्दू धर्म की 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की भावना को स्वीकार कर सहअस्तित्व के आधार पर हिन्दू समाज की हित कामना में लग गये, वह सब हिन्दू हो गये। रामायण और महाभारत महाकाव्यों में इसी हिन्दुत्व के विस्तार, प्रचार प्रसार का वर्णन है। सामाजिक लचक हिन्दू धर्म की मुख्य विशेषता रही है। सनातन धर्म मानने का अर्थ स्थिर खड़ा हो जाना नहीं है। इसका अर्थ है इसके महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को जान–समझ कर वर्तमान संदर्भ और देश–काल की परिस्थितियों के अनुसार इन पर अमल करना। प्राचीन समय के अनेक ईरानी और यूनानी लेखकों ने हिन्दुस्तान की सीमायें अफगानिस्तान और बलोचिस्तान के पश्चिम में बतायी हैं और उस सारे पहाड़ी प्रदेश को हिन्दुस्तान का ही अंग माना है।"

पारसी मगब्राह्मणों के वंशज

आचार्य बाराहमिहिर ने 'वृहत संहिता' में सूर्य मन्दिर के पुजारी पद के लिये मग ब्राह्मणों को ही अधिकारी बताया है। यहाँ पर इस महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि आज पारसी कहे जाने वालों के पूर्वज 'मग

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

ब्राह्मण' थे। भविष्य पुराण के १३६ अध्याय में मिहिर गोत्रीय सुजिह्व ब्राह्मण की पुत्री निक्षमा के गर्भ से सूर्यांशी जरषष्ट नामक बालक की उत्पत्ति का कथन वास्तव में पारसियों के महान धर्म प्रवर्तक जरतुश्त के विषय में ही है तथा मगों द्वारा जिस 'अव्यंग' नामक मेखला पहने जाने का उल्लेख है वह भी पारसी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता में उल्लिखित 'अव्योध' ही है जिसे आज पारसी लोग कुरती के नाम से जानते हैं। मिहिर शब्द सूर्य का पर्यायवाची है और मिहिर गोत्रीय ब्राह्मण का उक्त उल्लेख इस प्रदेश मे सूर्योपासना के प्रचलन को प्रमाणित करता है। यही नहीं, अवेस्ता का मिथ्र सूर्यवाची मित्र का सहज रूपान्तर है। अवश्य ही एशिया के अन्य प्रदेशों तथा विश्व के अन्य देशों में सौर धर्म का प्रचार अधिकांशतः पारस देशीय हिन्दुओं ने ही किया होगा।''

कहा जाता है कि ईरान के मशहूर बादशाह दारा ने ईसा पूर्व ५२२ से ४८६ साल पहले तक शासन किया, उसके विशाल साम्राज्य में उत्तर भारत का कुछ भाग भी शामिल था। किन्तु दारा के शिला–लेखों से पता चलता है कि उसका साम्राज्य सिन्धु नदी से आगे कभी नही बढ़ा। उस समय तक 'हिन्द' और 'हिन्दू' की सर्वत्र ख्याति थी और हिन्दुओं का सांस्कृतिक विस्तार विश्वव्यापी था। हिन्दू धर्म प्रचारक (ब्राह्मण और बौद्ध भिक्षु) संसार भर में घूम फिर कर मानवशास्त्र के कल्याण हेतु सनातन धर्म का प्रचार करते थे। आर्थिक दृष्टि से भारत सम्पन्न था तथा ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से जगतगुरु था। कला–कौशल सुख–समृद्धि सभी के लिए हिन्दुस्तान की सर्वत्र प्रसिद्धि थी।

पौराणिक युग

पुराणों का कालनिर्णय अभी भी अनुसंधान का विषय है। विद्वानों का मत है कि रामायण, महाभारत, पुराणों, उप–पुराणों की रचना एक विस्तृत कालखण्ड में हुई। पुराणों तथा संस्कृत के अनेक कोशों तथा साहित्य में 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा तथा हिन्दू लक्षणों का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है। दीर्घ काल तक चलने वाली राजनीतिक उठापटक, संस्कृत भाषा तथा हिन्दू सभ्यता व संस्कृति से अनभिज्ञ जनसमूह द्वारा मज़हबी तास्सुब तथा राजनीतिक मन्तव्यों को लेकर लिखे गये इतिहास तथा उर्दू फारसी लुगतों को पढ़कर कतिपय बन्धुओं की यह भ्रान्त धारणा बन गई है कि हिन्दू शब्द विदेशी यवनों की देन है और इसका अर्थ हीनभावनायुक्त है। विदेशी मुसलमान शासकों द्वारा लिखाये गये फारसी और उर्दू के इतिहास में इस प्रकार की अर्थ योजना राष्ट्रीय भावनाओं को शिथिल करने का सुनियोजित षड़यंत्र था। साम्राज्यवादी कुटिल राजनीतिक शक्तियाँ अपना शासन स्थायी बनाने के लिये इस प्रकार कूटनीति का अवलम्बन करती हैं। यवन साम्राज्यवादियों ने यह किया तो आश्चर्य क्या? किन्तु अपने ही कुछ लोग

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
इस कपट नीति के शिकार बन गए यह अवश्य चिन्ता का विषय है।

"संसार के इतिहास में जब–जब और जहाँ–जहाँ एक कौम दूसरी कौम के ऊपर शासन में आई है वहाँ–वहाँ कुदरती तौर पर शासक कौम के लेखकों की गरज़ अपनी रचनाओं से यही रही कि अपनी कौम के लोगों में देशभक्ति, आत्मविश्वास, स्वाभिमान और साहस को जाग्रत करें और शासित कौम वालों में इन्हीं गुणों को कम करें या पैदा न होने दे।"

–भारत में अंग्रेजी राज (पं० सुन्दर लाल)

उपरोक्त तथ्यों को हृदयंगम कर 'हिन्दू' शब्द का अर्थ समझना चाहिए। वर्तमान संदर्भ में हमारे लिए 'हिन्दू' से अधिक उपयुक्त कोई नाम नहीं हो सकता। यदि भारतीय कहें तो केवल भारत की सीमाओं में रहने वाले जन मात्र का बोध होता है जब कि अन्य देशों में भी बड़ी संख्या में 'हिन्दू' रहते है। पड़ोसी नैपाल घोषित 'हिन्दू' राष्ट्र है। लगभग ३ करोड़ हिन्दू भारत के बाहर अन्य देशों में रहते हैं। यदि 'आर्य' कहें तो फिर उत्तर पूर्वी सीमा पर रहने वाले बन्धु जो मंगोलाइड ट्राइव से अधिक मेल खाते हैं या दक्षिण के निवासी द्रविड़ों का सामञ्जस्य नहीं हो पाता। अतः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक सब प्रकार का ध्यान रखते हुए अतीतकाल से प्रचलित तथा सर्व परिचित लोकप्रिय 'हिन्दू' ही अपने लिए गौरव का नाम है।

प्राचीन शास्त्र, कोश, पुराणादि साहित्य में 'हिन्दू'

क– हिमालयं समारभ्य यावद् इन्दु सरोवरम् ।
तद्देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।।

हिमालय से इन्दु सरोवर तक विस्तृत देव निर्मित देश का नाम हिन्दुस्तान है। (बार्हस्पत्यशास्त्र)

ख– जानुस्थाने जैनुशब्दः सप्तसिन्धस्तथैव च ।
तद्देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।।

सकारोपलक्षित सप्तसिंधु का यूनान आदि देशों में हकारोपलक्षित अपर रूप 'हफ्त हिदु' प्रचलित होगा। (भविष्य पुराण)

ग– हिनस्ति तपसा पापान् दैहिकान् दुष्टमानसान् ।
हेतिभिः शत्रुवर्गश्च स हिन्दुरभिधीयते ।।

जो अपने दैहिक और मानसिक पापों को तपश्चर्या द्वारा विनाश करे और

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

शत्रुओं को नाश करे वह 'हिन्दू' है। (पारिजातहरण नाटक)

घ– हिंसया दूयते यस्मान हिन्दुरित्यभिधीयते ।

हिंसक कार्यों से घृणा करने वाले को 'हिन्दू' कहते हैं।

ङ– हीनं दूषयति इति हिन्दू जाति विशेषः ।

हीन कर्म का त्याग करने वालों को 'हिन्दू' कहते हैं।
(शब्द कल्पद्रुम)

च– हिन्दू हिन्दूश्च ससिद्धौ दुष्टांना च विघर्षणे ।
(अद्‌भुत कोष)

छ– हिंसया दूयतश्च सदाचरण तत्परः ।
वेद-गो-प्रतिमा-सेवी स हिन्दू मुख वर्णभाक् ।।
(वृद्ध स्मृति)

ज– हिन्दुः हिन्दुश्च हिन्दवः ।

हिन्दु–हिन्दू और हिन्दुत्व तीनों एकार्थक है।
(मेदिनी क़ोश)

झ– हिनोति सर्वदूषाणि दुनोत्यन्याय पद्धतिम् ।
सर्वभूतरतो यस्तु सः हिन्दू परिकीर्तितः ।।

जो सब दोषों को दूर करता है, अन्याय मार्ग पर चलने से रोकता है तथा जो प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करता है वह हिन्दू है।

ञ– हिनस्ति दुष्टान् दुरितानि च यः स हिन्दुः ।

जो दुष्टों का हनन करता है और दुराचारों का दलन करता है वह हिन्दू है।

ट–महाभारत शान्तिपर्व के अनुसार सनातन धर्म (या हिन्दू धर्म) की व्याख्या इस प्रकार की गई है:

सत्य दमस्तपः शौच संतोषो ह्री क्षमार्जवम्
ज्ञानं शमोदया ध्यानमेष धर्मः सनातनः ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च सतोधर्मः सनातनः ।।

'हिन्द' या 'हिन्दू' नाम अरबों का आविष्कार नहीं है

संस्कृत भाषा में 'सरितो हरितो भवति, सरस्वत्यो हरहवत्यः नियम के अनुसार 'स' का उच्चारण 'ह' हो जाता है, उसी प्रकार पारसियों के ग्रंथ 'अवेस्ता' के व्याकरण से भी 'स' के स्थान पर 'ह' होने का नियम प्राप्त होता है। प्रान्त भेद से भी 'स' की जगह 'ह' बोलने का नियम अपने देश में है। गुजरात कें गाँव की बोली में शक्कर को हक्कर कहते हैं। अरबी भाषा में इस प्रकार का कोई नियम नहीं है। अरबी लिपि में 'स' उच्चारण वाले, 'से' 'सीन' कई अक्षर हैं। अतः वेदों में प्रयुक्त 'सप्त सिन्धु' या महाभारत के 'सिन्धु' देश से 'हिन्दु' शब्द बना तो यह संस्कृत या अवेस्ता भाषा–भाषियों द्वारा ही सद्भावनापूर्वक बनाया गया।

'हिन्दू' की परिभाषा अर्वाचीन संदर्भ ग्रन्थों में

हिन्दः Also हिन्दु
English Sanskrit Dictionary P.III
Prasad Prakashan Poona.

Name of the People of Hindustan or Bharatvarsha. The name appears to have been derived from Sindhu, the name of the celebrated river where the Vedic Aryans recited their Vedic Mantras.

In the Avesta 'स' is pronounced as 'ह' so 'सप्तसिंधु' was pronounced by the Persians as 'हफ्तहिन्दु' The Bhavishya Puran speaks of 'हफ्तहिन्दु' Here are a few references taken from Koshas and the Puranas : Kalika Puran says :-

(१) "कलिना बलिना नूनम् धर्माकलिते कलौ ।
यवनैर्धोरमाक्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन् ।।

धर्महीन कलियुग में बलवान कलि और यवनों द्वारा अत्यधिक आक्रान्त हिन्दू विन्ध्य में प्रविष्ट हो गये।

The Meru Tantra of the 8th Century A.D. saya:

(२) "हिन्दू धर्म प्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिन ।
हीनं च दूषयत्येष हिन्दूरित्युच्यते प्रिये ।।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हे प्रिये! हिन्दू धर्म को प्रलुप्त करने वाले चक्रवर्ती उत्पन्न हो रहे हैं तथा जो हीन कर्म (हीनता) का त्याग करता है वह हिन्दू कहा जाता है।

The Rama Kosh :

(३) हिन्दूर्दुष्टो न भवति नानार्यो न विदूषकः।
सद्धर्म-पालको विद्वान् श्रौत धर्म परायणः ॥

हिन्दू न दुष्ट होता है न अनार्य होता है और न विदूषक होता है। वह सद्धर्म पालक, विद्वान और वैदिक धर्म में निरन्तर रत रहता है।

The Hemant Kosh :

(४) "हिन्दुहि नारायणादि देवता भक्तः।"
हिन्दू नारायणादि देवों का भक्त होता है।

जेम्स हेस्टिंग्स कृत 'इन्साइक्लोपीडिया आफ रेलीजन्स एण्ड एथिक्स'

के पृष्ठ सं० ६८६ पर 'हिन्दू' शब्द की प्राचीनता बताते हुए लिखा है :

"ईसा से ४८६ वर्ष पूर्व हुए दारा हस्तास्प के स्मारक शिला लेख में 'हिन्दू का नाम 'हिंदुस' Hindus रूप में उल्लिखित पाया जाता है।

यह शिला स्मारक ईरान में परसीपोलिस नगर के निकट है।

"The word Hindu (in the form 'Hidu') applied by Darius (522-486 B.C.) and Xerxes (486-495 B.C.) to the territory and people to the west and to the east of the great rever Sindhu.............' Herodotus (Book 5, Para 3, Vol III, p.5-Loeb Series) Vide the Nagkh-i Rustam Inscription of Darya-ush and the Persepoils Inscription of Kshayarsha (Xerxes) in Select Inscriptions, D.C. Sircar, ed, No.4, p.10 and No. 5, p.12 'The name "Hindu" appears in the inscription on the monument of Darius Hystaspes near persopolis (c.486 B.C.) : Ho(d) du in the later Heb. literature (Est 1189); and in modern form (c.440 B.C.). in Herodtus (iii 98). 'Hinduism' Encyclopaedia of Religion and Ethics, James Hastings, ed, Vol II (1959) P.686. 'India' is used is Aramaic also See Esther 1.1; 8.9.

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दी शब्दसागर, भाग 4

(काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित)

हिन्द – यह शब्द वास्तव में सिन्धु शब्द का फारसी उच्चारण है। प्राचीन काल में भारतीय आर्यो और पारसिक आर्यो के बीच बहुत कुछ सम्बन्ध था। 'याचक' यज्ञ कराने वाले बराबर एक देश से दूसरे देश में जाया करते थे। शाक दीप के 'मग ब्राह्मण' फारस के पूर्वोत्तर भाग से ही आए हैं। ईसा से ५०० वर्ष पहले दारा प्रथम के समय में सिन्धुनद के आसपास पारसियों का अधिकार हो गया था। प्राचीन पारसी भाषा में 'स' का उच्चारण 'ह' होता था। जैसे संस्कृत का 'सप्त' फारसी का 'हफ्त' बन गया। इसी नियम के अनुसार 'सिंधु' का उच्चारण प्राचीन पारस देश में 'हिन्दू' होता था। पारसियों के ग्रन्थ 'अवेस्ता' में 'हफ्तहिन्द' का उल्लेख है जो वेदों मे 'सप्तसिंधु' नाम से आया है। धीरे–धीरे हिन्दू शब्द सारे देश के लिये प्रयुक्त होने लगा। प्राचीन यूनानी जब फारस आये तब उन्हें देश का परिचय हुआ, और वे अपने उच्चारण के अनुसार फारसी 'हिन्द' को 'इन्ड' कहने लगे जिससे आज–कल 'इण्डिया' शब्द बना है।

हिन्दू- भारत में बसने वाली आर्य जाति के वंशज जो भारत में प्रवर्तित या पल्लवित आर्य संस्कार और समाज व्यवस्था को मानते चले आ रहे हैं। वेद. स्मृति, पुराण आदि इनमें से किसी एक के अनुसार चलने वाला भारतीय आर्य धर्म का अनुयायी।

यह प्राचीन नाम पारसियों का दिया हुआ है जो उनके द्वारा संसार में सर्वत्र प्रचलित हुआ। प्राचीन भारतीय आर्य अपनी धर्म व्यवस्था को 'वर्णाश्रम धर्म' के नाम से पुकारते थे। प्राचीन अनार्य द्रविड़ जातियों को उन्होंने अपने समाज में मिलाया पर उन्हें अपनी व्यवस्था के भीतर करके अर्थात् सिद्धान्त रूप में किसी आर्य ऋषि, राजा इत्यादि की सन्तति मानकर। पीछे शक हूण यवन आदि भी जो मिले वे या तो वरिष्ठ ऋषि द्वारा उत्पन्न वीरों के वंशज माने जाकर अथवा ब्राह्मणों के न होने से पतित क्षत्रिय माने जाकर। सारांश यह है कि भारतीय आर्य अपनी धर्म व्यवस्था को मज़हब की तरह फैलाते नहीं थे। आस–पास आई हुई जातियाँ उसे सभ्यता संस्कार के रूप में आप से ग्रहण करती थीं। प्राचीन काल में आर्य सभ्यता के दो केन्द्र थे–भारत और पारस। इन दोनों में भेद बहुत कम था। हूणों ने पहले पारसी सभ्यता ग्रहण की, फिर भारत में आकर वे भारतीय आर्यों से मिले। शक जाति तो आर्य जाति की ही एक शाखा थी। पीछे जब पारस निवासी मुसलमान हो गये तब उन्होंने 'हिन्दू' शब्द के साथ 'काफिर', 'काला' 'लुटेरा' आदि आदि कुत्सित अर्थ की शब्द–योजना की। जब तक वे आर्य धर्म के अनुयायी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

रहे तब तक 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग आदर के साथ हिन्द निवासी के अर्थ में ही करते थे। यह शब्द इस्लाम के प्रचार के बहुत पहले का है। अतः पीछे से मुसलमानों के बुरे अर्थ योजना करने से शब्द बुरा नही हो सकता।

हिन्दी विश्व कोश

(नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)

★ ऋग्वेद ८, २४, २७ में सप्तसिंधवः (अवेस्ता हफ्त हिंदू) शब्द देश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैदिक वाङ्मय में 'स' के स्थान पर 'ह' का अनेकत्र विकास पाया जाता है। 'हरितो नरंह्य' अथर्ववेद (२०, ३०, ४,)। इसकी व्याख्या में निघंटु कहता हैः– सरितो हरितो भवति, सरस्वत्यो हरहवत्यः (१, १३) अर्थात् प्रस्तुत हरित शब्द को उच्चारण भेद के कारण नदी वाचक सरित शब्द समझना चाहिये और इसी प्रकार सरस्वती का विकास 'हरहवती' ज्ञेय है। यह वैदिक परिपाटी लोक में आज भी देश भेद से सर्वत्र प्रचलित है। (इसी नियम से सप्तसिंधवः से 'हफ्त हिन्दवः तथा 'हिन्द' और 'हिन्दू' का विकास हुआ।)

ईरान देशीय पारसी सम्प्रदाय के मान्यता प्राप्त ग्रंथ शातीर की १६२वीं आयत में भारत देश का नाम हिन्दू (हिन्द) रूप से प्रतिपादित है इसी पुस्तक की १६३वीं आयत से प्रमाणित होता है कि उस समय 'हिन्द' (हिन्दू) देश के निवासी को हिन्दी कहा जाता था जैसे 'चू' व्यास हिन्दी बल्ख आमद' । सिन्ध (सिन्धु) प्रान्त निवासियों को आज भी लोग सिन्धी कहते है 'सिन्ध' नहीं। मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लेने के बाद पारस निवासियों ने 'हिन्दू शब्द' के साथ काफिर, काला, लुटेरा, गुलाम इत्यादि अर्थो की योजना की।

तात्स्थ्य लक्षणया 'हिन्दू शब्द' हिंदु देश भारत के निवासी के अर्थ में भी प्रयुक्त होता रहा है, वह निवासी चाहे किसी भी जाति का क्यों न हो। मौ० जलालुद्दीन रूमी 'बहरूल उलूम' 'मसनवी मौलाना रूप' पुस्तक के 'दफ्तर दोयम' में हिंदू देश भारत के निवासी मुसलमानों को हिंदू नाम से ही पुकारते हैं।

चार हिन्दू दर यके मस्जिद रवंद,
बहरे ताअत रा के वो साजिद शुदंद।

इसका आशय है कि चार हिंदू यानी हिन्दुस्तानी मुसलमान एक मस्जिद में गए और इबादत के निमित्त सिजदा करने लगे (मसनवी मौ० रूप पृ० १६७ मुं० नवल किशोर प्रेस लखनऊ १८६६ ई०, कालान्तर में इस्लाम धर्म की तुलना में भारतीय 'हिंदू धर्म' के नाम से सम्बोधित होने लगा और पहले की अपेक्षा हिंदू की व्यापकता कम हो गई। दाह किए जाने वाले ही 'हिंदू' माने जाने लगे– 'हिंदू दाह,

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

यवन, ईसाई दफन इसी में पाते है'। हिंदू के साथ धर्म शब्द के जोड़े जाने के कारण 'हिंदू' की परिधि दिनानुदिन संकुचित होती चली गई। हर फिर्का अपने को स्वयं में सीमित समझने लगा। आर्य समाज ने 'हिंदू' शब्द का बहिष्कार किया और उसके स्थान पर आर्य शब्द की प्रतिस्थापना की। हिंदी भाषा का नाम आर्य भाषा किया। हिंदू (धर्म) को ब्राह्मण धर्म समझ लिए जाने के कारण बौद्ध और जैन भी अपने को हिंदू कहने से मुकरने लगे। शेष भारतीय भी अपने को प्रथमतः हिंदू न कहकर वैष्णव, शैव, शाक्त, सिक्ख आदि बताने लगे।

मुस्लिम जाति की तुलना में उससे पूर्ववर्ती भारतीयों को हिंदू जाति का बताया जाने लगा। वस्तुतः यह भी एक प्रकार का अध्यारोप था। 'हिंदू नामक कोई भी जाति नहीं थी अपितु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि जातियाँ (वर्ग) गणनीय हैं। 'हिदू' नामक न तो कोई ग्रन्थ था। और न कोई मत ही।

निष्कर्षतः हिन्द या हिन्दू वृहत्तर भारत देश की संज्ञा थी। फलतः इस देश के निवासी भी 'हिंदू' कहलाने लगे।

वैदिक सम्पत्ति (पं० रघुनन्दन शर्मा)

प्राचीन बेबीलोनिया में उत्तम वस्त्रों के लिए 'सिधु' शब्द के प्रयोग का पता लगा है तथा उस देश के भग्नावशेषों को देखकर यह विश्वास किया जाता है कि प्रागैतिहासिक काल में हिन्दुस्तान का पाश्चात्य देशों से सम्बन्ध था और फूनूशिया, अरब तथा भारतीय (हिंदू) परशियन गल्फ, अदन तथा पूर्वी अफ्रीका के बन्दरगाहों पर मिलते थे तथा व्यापारिक वस्तुओं के विनिमय के साथ वैचारिक तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी हुआ होगा। इन व्यापारियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति उन देशों में पहुँची और वहाँ के निवासियों ने श्रेष्ठ हिंदू संस्कारों को स्वीकार कर लिया।

(१) बेहिरीन अभिलेख ५२० से ५१८ ई० पू०

(२) पर्सीपोलिस अभिलेख १८ से ५१५ ई० पू०

(३) नक्शेरूस्तम अभिलेख ५१५ ई० पू०

पर्सीपोलिस अभिलेख में 'हिंदु' शब्द आया है। पर्सीपोलिस तथा नक्शेरूस्तम अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि गान्धार देश के निवासी हिंदुओं पर भी उसका अधिकार हो गया था।

३३० ई० पू० सिकन्दर ने आखमानी साम्राज्य की राजधानी 'पर्सीपोलिस

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

पर अधिकार कर लिया था और डेरियस तृतीय को पूर्णतया पराजित कर दिया। मई सन् ३२७ ई० पू० में वह भारत की ओर मुड़ा।

संस्कृति के चार अध्याय (रामधारी सिंह दिनकर)

प्राचीन संस्कृत और पालि–ग्रन्थों में हिंन्दू नाम कहीं भी नहीं मिलता। किन्तु भारत से बाहर के लोग भारत अथवा भारत–वासियों को हिन्दू या 'इंडो' कहा करते थे, इसके प्रमाण हैं। भारत से बाहर हिन्दू शब्द का प्राचीनतम उल्लेख अवेस्ता में मिलता है। डेरियस (५२२–४८६ ई० पू०) के शिलालेख में भी हिन्दू शब्द का उल्लेख है। इसलिए आर्यस्थान आर्यावर्त आदि नाम गलत है। इस देश का सही नाम भारतवर्ष, हिन्दुस्तान या इंडिया ही हो सकता है। इसी प्रकार हिन्दू नाम बहुत व्यापक और आर्य नाम संकीर्ण है। और अब यह दावा कौन कर सकता है कि वह शुद्ध आर्य, शुद्ध द्रविण, शुद्ध कोल अथवा शुद्ध किरात है? ये नाम अब इतिहास के प्रांगण में पड़ी क्षीण–धूमिल रेखाओं की छाया मात्र है। असल में भारत के निवासी हिन्दू हैं और उनका देश 'आर्यस्थान' नहीं 'हिन्दुस्तान' है।

उत्तर में जब बौद्ध मत की प्रबलता हुई तभी से हिन्दू धर्म अपनी पवित्रता की रक्षा के लिये दक्षिण को अपना गढ़ मानने लगे। पीछे जब विदेशियों के आक्रमण आरम्भ हुए तब बहुत से धर्म प्राण हिन्दू दक्षिण की ओर खिसकने लगे थे। इस स्थिति का उल्लेख 'कालिका पुराण' (आठवीं से दसवी शती तक) में मिलता है।

बलिना कलिनाच्छन्ने,धर्मे कवलिते कलौ ।
यवनैरवनीक्रान्ता, हिन्दवो विन्ध्यमाविशन् ।

जब बलवान कलि–काल ने सबको प्रच्छन्न कर दिया और धर्म उसका ग्रास बन गया तथा पृथ्वी यवनों से आक्रान्त हो गयी, तब हिंदू खिसक कर विंध्य की ओर चले गये। इसी भाव की आवृति, शांर्ग्ड्धर–पद्धति' के भी एक श्लोक में मिलती है।

यवनैरवन्री क्रान्ता, हिन्दवो विंध्यमाविशन्
बलिना वेदमार्गोऽयं कलिना कवलीकृतः ।

मुसलमानों के आने के बाद जब लोगों को यह पता लगा कि मुस्लिम–कोष में हिंदू का अर्थ दूषित है, तब भी पंडितो ने हिन्दू शब्द का बहिष्कार नहीं किया, परन्तु उसके भीतर उन्होंने अपनी पसन्द का नया अर्थ बैठा दिया। रामकोष में लिखा है–

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दुः दुष्टो न भवति नानार्यो न विदूषकः
सद्धर्मपालको विद्वान् श्रौतधर्मपरायणः ।

हिंदू न तो दुष्ट होता है, न विदूषक, न अनार्य। वह सद्धर्म पालक वैदिक धर्म को मानने वाला विद्वान होता है।

अद्‌भुत कोष में हिन्दू नाम की जो परिभाषा दी गयी है वह वीरता व्यजंक है। सम्भवतः हिन्दू जाति के भीतर शौर्य जाग्रत करने की यह परिभाषा गढ़ी गयी होगी।

"हिन्दुर्हिन्दूश्च प्रसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणे।"

हिन्दु और हिन्दू ये दोनो शब्द दुष्टों को विघर्षित करने वाले अर्थ में प्रसिद्ध है।

इधर वृद्धस्मृति नामक प्राचीन ग्रंथ से एक और श्लोक उद्‌धृत किया गया है, जिससे यह विदित होता है कि हिन्दू नाम उसका है जो हिंसा से दुःख मानता हो।

हिंसया दूयते यश्च सदाचरणतत्परः,
वेद गो प्रतिमासेवी स हिन्दुमुख शब्दभाक् ।

जो सदाचारी, वैदिक मार्ग पर चलने वाला, प्रतिमापूजक और हिंसा से दुःख मानने वाला है, वह हिन्दू है।

'शब्द कल्पद्रुम' – कोष के अनुसार "हीनं दूषयति इति हिन्दूः" जो हीनता को स्वीकार न करे वह हिन्दू है।

'पारिजातहरण'- नामक किसी प्राचीन नाटक से एक और श्लोक उद्‌धृत किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि हिन्दू वह जो शस्त्र और शास्त्र दोनों में निष्णात है।

हिनस्ति तपसा पापान् देहिकान् दुष्टमानसान्
हेतिभिः शत्रुवर्ग च स हिन्दुर्भिधीयते ।

जो अपनी तपस्या से दैहिक पापों तथा चित को दूषित करने वाले दोषों का नाश करता है तथा जो शस्त्रों से अपने शत्रु समुदाय का भी संहार करता है, वह हिन्दू है। परशुराम की भी प्रतिज्ञा थी–

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अग्रतः चतुरो वेदान् पृष्ठतः सशरं धनुः,
इदं ब्राह्ममिदं क्षात्रं, शापादपि शरादपि ।

भारतवर्ष का नाम आर्यावर्त नहीं, हिन्दुस्तान होना चाहिए, यह अनूभूति भी नवीन नहीं है, 'बृहस्पति आगम' में एक श्लोक आया है–

हिमालयं समारभ्य यावद् इनदुसरोवरम्,
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्तान प्रचक्षते ।

इंदु सरोवर से अभिप्राय यहाँ कुमारी अन्तरीप से है। यह भी ध्यान देने की बात है कि संस्कृत भाषी भारतवासी विद्वान 'हिन्दुस्तान' के बदले 'हिंदुस्थान' लिखना पंसद करते थे।

हिंदू शब्द के भीतर जो अर्थ पहले कुछ धीमा था– वह आधुनिक युग में आकर भली–भाँति सुस्पष्ट हो गया।

हिंदु महासभा का आदर्श (श्लोक) वीर सावरकर द्वारा रचा गया है। सावरकर जी के अनुसार वे सभी हिंदू हैं जो सिन्धु नदी से लेकर आसमुद्र विस्तृत भूभाग में बसते हैं एवं जो भारत को अपनी पितृभूमि तथा तीर्थ मानते हैं।

आसिन्धोः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका,
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दूरिति स्मृतः ।

विनोवा जी के अनुसार हिंदू का मुख्य लक्षण उसकी अहिंसा प्रियता है।

हिंसया दूयते चित्तं तेन हिंदुर्उदीरतः ।

हिंसा से घृणा करने वाला व्यक्ति हिंदू है, ऐसा मत केवल विनोवा जी का ही नहीं है, पहले भी लोग हिंदू का प्रधान लक्षण इसकी अहिंसा प्रियता को मानते थे।

माधव दिग्विजय (स्वामी माधवाचार्य)

ओंकार मूलमंत्राढ्यः पुनर्जन्मदृढाशयः,
गोभक्तो भारतगुरूः हिंदुहिंसनदूषकः ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

ओंकार जिसका मूलमंत्र है, पुनर्जन्म में जिसकी सुदृढ़ आस्था है भारत को जिसने गुरु स्वीकार किया है तथा हिंसा की जो निन्दा करता है, वह हिन्दू है।

भारतवासी अपना हिन्दू नाम उस समय भी जानते थे जब मुसलमान इस देश में नहीं आये थे। हुएनसांग के समय में यह शब्द भारत में प्रचलित था, किन्तु हुएनसांग ने यह लिखा है कि हिंदू शब्द असल में चीनी शब्द 'इंतु' का रूपान्तरण है, जिसका अर्थ चन्द्रमा होता है। सितारों के बीच चन्द्रमा की जैसी प्रतिष्ठा होती है, संसार में उसी प्रकार प्रतिष्ठा होने के कारण भारत को चीन के लोग 'इंतु' या 'हिन्दू' कहने लगे।

भारत पर प्रबल रूप से मुस्लिम आक्रमण महमूद गज़नवी ने किया। अलबरूनी उसी विजेता की सेना के साथ भारत आया था। उस समय यहाँ के लोग हिंदू कहलाते थे। अलबरूनी ने हिंदुओं की प्रशंसा लिखी है। इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत–वासियों को हिंदू नाम मुसलमानों ने नहीं दिया है, न यह नाम कुत्सित अर्थ की व्यंजना करने वाला समझा जाता था।

पृथ्वीराजरासो– चन्द्र वरदाई

चन्दवरदायी के पिता बेन कवि ने सम्राट पृथ्वीराज के पिता की प्रशस्ति में लिखा था–

अटल ठाठ महिपाल अटम तारागढ़ अस्थानम्
अटल नग्र अजमेर अटल हिन्दव अस्थानम् ।।

शहाबुद्दीन गोरी को बन्दी बनाकर रखने की घटना का उल्लेख करते हुए चन्दबरदाई ने लिखा था–

राखि पांच दिन साहि अदब आदर बहु किन्नो,
सुजहहुसेन ग़ाजी सपूत हत्थे गहि दिन्नो ।
किय सलाम तिन बार जाहु अपन्ने सुथानह,
मति हिंदू पर साजि सज्जि आवो थानह ।।

अर्थात् सम्राट पृथ्वीराज ने पाँच दिनों तक शहाबुद्दीन को बन्दी बना बहुत आदर के साथ रखकर शुजाहुसेन गाजी के पुत्र की मारफत संदेश दिया कि तीन बार सलाम कर अपने देश को लौट जाए और फिर कभी फौज़ बटोर कर हिन्दुओं पर चढ़ाई का साहस न करें।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

बारह बार शहाबुद्दीन गोरी को परास्त कर उसे क्षमादान करने वाले पृथ्वीराज तेरहवें आक्रमण में जयचन्द के द्रोह के कारण परास्त होकर स्वयं बन्दी बन गए। क्रूर ह्रदय गौरी ने उन्हें गजनी ले जाकर नाना प्रकार की यातनायें दी, यहाँ तक की दोनों आँखे निकलवा कर अंधा कर दिया। चन्दबरदायी भी गजनी गए और उन्होंने सम्राट को मुक्त कराने का कोई उपाय न देखकर एहसानफरामोश गौरी को उसके ही घर मारने की योजना बनाई। शब्द भेदी बाण विद्या के प्रदर्शन हेतु जब पृथ्वीराज को दरबार में लाया गया और धनुष बाण हाथों में दिया गया तो उन्होनें चन्दबरदायी से सुल्तान की स्थिति का संकेत पाकर एक ही अचूक बाण से सुल्तान को मार दिया। (प्रचलित अनुश्रुतियों के अनुसार)

चन्दबरदायी लिखित पृथ्वीराजरासो में 'हिंद' और 'हिंदू' शब्द का अनेक बार उल्लेख आया है –

धन हिंदु पृथिराज जिने राजवट्ट उजारिय,
धन हिंदु पृथिराज बीच कलिमज्झ उजारिय ।

धन हिंदु पृथिराज जिन सहिबान द्वै संधनो,
बारह बार गहि-अंत समय सरविंध्यो ।

हिन्दूपति महाराणा प्रताप

इसी प्रकार महाराणा प्रताप को बीकानेर नरेश पृथ्वीराज ने प्रेरणादायी पत्र लिखा था उसकी कुछ पंक्तियाँ थी :–

अकबर समुद्र अथाह, तिह डूबा हिंदू तुरक ।
मेवाड़ो तिन मांहि, पोयण फूल प्रताप सीः ।।१।।

अकबर घोर अन्धार अंधाणा हिंदू अबर ।
जागे जग दातार, पोहरे राणा प्रताप सी ।।२।।

'हिदुपति' परताप ! पत राखो हिंदुवाण की ।
सहे विपति संताप, सत्य सपथ कर आपणी ।।३।।

महाराणा प्रताप ने उत्तर देते हुए लिखा था–

तुरक कहसि मुख हिंदवो इणतन सू इकलिंग ।
ऊगे जाही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ।।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अर्थात् मैं अपने कुल देवता श्री एकलिंग महादेव की शपथपूर्वक कहता हूं कि हिंदू के मुख से अब भी अकबर को 'तुरक' ही कहा जायेगा 'शाह' नहीं। सूर्य ठीक उसी पूरब दिशा में उगेगा जिसमें कि सदैव उगता आया है।

शिवा जी का पत्र जयसिंह के नाम

"मैं अपने हाथों तुम्हारा ध्वज किलों पर चढ़ा दूँगा। परन्तु मुसलमान को यश नहीं दिया जा सकता। मैं और तुम दोनों ही हिन्दू हैं, राजपूत है। हिन्दू राज्य किसी हिन्दू के पास रहे, इसमें हानि नहीं। हिन्दू धर्म के रक्षक को सौ–सौ बार नमस्कार करने को प्रस्तुत हूँ। पर हिन्दू धर्म की मानहानि हो, यह कभी सहन नहीं हो सकता।"

'श्री गुरु ग्रंथ साहब जी'

में भी हिन्दू शब्द का प्रयोग बार–बार आया है जैसे

काजी मुल्ला करहि सलाम,
इन हिंदू मेरा मलिया मान ।। आदि

श्री गुरु गोविंद जी की घोषणा थी –

उत्तर भन्यो धरम हम हिन्दू ।
अति प्रिय को किन करे निकन्दू ।।
(सूर्य प्रकाश)

उदासीन पंथ प्रार्थना में 'हिन्दू' का यशोगान

उदासीन पंथ प्रवर्तक, गुरुनानक देव के सुपुत्र महाराज श्रीचन्द का जन्म विक्रम सं० १५५१ भाद्रपद शु० ६ को हुआ था। विक्रम सं० १६२८ में इन पर कुछ दुष्टों ने आक्रमण कर दिया। उस समय इनके शिष्यों ने उनकी रक्षा हेतु ईश्वर से प्रार्थना की थी। इस प्रार्थना में इन्हें हिन्दू धर्म रक्षक बताते हुये हिन्दुत्व का ही यशोज्ञान किया गया है यथा–

जगतगुरू श्रीचन्द्र मनाओ । सब हिन्दू मिल के यह गाओ ।।

जगतगुरू श्रीचन्द पियारा । है सब हिन्दुन का रखबारा ।।
बाल यतौ श्रीचन्द उदासी । काटी सब हिन्दुन की फाँसी ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू धरम जगत में ऊँचा। और नहीं इस सम कोई सूचा ।।

धरम सनातन हिन्दू प्यारा। सब का हित सब का उजियारा।

हिन्दू मरें न हिन्दू जीवें। अमर आत्मा अमृत पीवें।

वीर धीर दुष्टन के नाशक। हिन्दू सदा न्याय प्रकाशक ।।

हिन्दू हिन्दू को प्रतिपाले। द्वेष ईर्ष्या सब विधि टाले ।।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप सिंह, गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, छत्रपति शिवाजी आदि वीर महापुरुष जिन्होंने विदेशी आक्रमणकारी मुसलमानों से सतत संग्राम किया, सब हिन्दुत्व का अभिमान रखते थे। यदि 'हिन्दू' नाम अपमानजनक संज्ञा होती या उर्दू फारसी लुगतों के अनुसार उसका अर्थ माना होता तो चन्दबरदायी और भूषण आदि विद्वान उसका प्रयोग अपनी कविता में कैसे करते? इससे समझना चाहिए कि मुसलमान लेखकों द्वारा 'हिन्दू' की अपशब्द अर्थ योजना मजहबी तास्सुब और राष्ट्र के मनोबल को कम करने के उद्देश्य से की गयी थी।

डा0 वासुदेवशरण अग्रवाल

एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट

भू० पू० प्राध्यापक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

● मुसलमानी मज़हब के जन्म से ही बारह सौ वर्ष पहले ईरानी सम्राट दारा (प्राचीन रूप दारायवह, संस्कृत में धारयदवसु) के लेखों में भारतीय प्रदेशों के लिये 'हिंदू' शब्द प्रयुक्त हुआ है। प्राचीन शुषा (आधुनिक सुसा) के राजमहल लेख में लिखा है।

पिरषुद्दया इदाकर्त हचाकुषुआ ।
उताहचा हिंदउवू इतहचाहरउवतिया अयरियू ।।

इस राज प्रासाद के लिए हांथी दांत जिस पर यह काम किया गया है कुष देश (वर्तमान अबीसीनिया) से और 'हिंद' से हरहैती (संस्कृत सरस्वती, आधुनिक अरगन्दाब अफगानिस्तान) से लाया गया।

इसमें 'हिदउवू' शब्द 'हिदू' की पंचमी विभक्ति का एक बचन सिंधोः के बराबर है। उस समय ईरानी भाषा में हमारे देश का यही नाम प्रचलित था, क्योंकि इनका परिचय भारत के सिंधु के आस–पास जनपदों तक ही सीमित था।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

दारा के अन्य लेखों में 'हिंदुषः' अर्थात् हिंद (संस्कृत सिंधु) और हिंदवउ अर्थात् हिंदु देश के निवासी (सं० सिंधुष्य) यह शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

● पाणिन के भूगोल के अनुसार 'सिंधु' एक जनपद विशेष का नाम भी था जो आधुनिक सिंधु सागर दोआब है। यह जान लेना चाहिए कि जिसे अब सिंधु कहते हैं इसका प्राचीन नाम 'सौवीर' था। प्राचीन सिंधु जनपद का नाम सिंधु नदी के किनारे दूर तक फैले हुए होने के कारण यद्यपि एक जनपद विशेष के लिए भी 'सिंधु' शब्द रूढ़ था फिर उसका रूपान्तर 'हिंदू' कालक्रम से विदेशी परम्परा के अनुसार सारे देश के लिए प्रयुक्त होने लगा।

● कारा के लेखों में उसका यही अर्थ जान पड़ता है। 'हिंदू' से ही देशवाची 'हिंद' शब्द बना और फिर जातीयता के आधार पर अफगानिस्तान, बलूचिस्तान की भाँति हिन्दुस्तान नाम भी मध्यकाल में चल पड़ा।

● पहल्वी भाषा में सासानी राजाओं का एक लेख 'पैकुली' नाम स्थान से मिला है। उससें भी भारतवर्ष के लिए 'हिंद' नाम का व्यवहार हुआ है। 'निशीथचूर्ण' नामक जैन ग्रंथ (रचनाकाल लगभग संवत् ७३३) में कालकाचार्य कथा नामक संदर्भ में कहा गया है कि आचार्य कालक पारस देश गया और उसने पारसी कुल के साहि राजाओं को 'हिन्दुग' देश चलने के लिये कहा–एहि हिन्दुग. देसे बच्चावो। (देखो श्री नीलकंठ शास्त्री कृत फारेन नोटिसेज आफ सदर्न इंडिया, पृष्ठ २०)।

साहि राजा ने छियानबे साथियों के साथ ('हिंदुग' हिदुस्तान) देश की यात्रा की और वे सौराष्ट्र में बस गये। ज्ञात होता है कि सप्तम शती में भारतीय साहित्यकार भी 'हिंदुग' नाम से परिचित थे।

सौराष्ट्र के शक राजाओं के इतिवृत्त से परिचित लोगों में ही यह नाम चालू रहा होगा।

● प्राचीन यूनानी भूगोल लेखकों ने ५४ शती ई० पू० में इस देश का नाम 'सिंधु' का 'हिन्दु' समीकरण चालू प्रयोग के आधार पर (**Indos**) लिखा है। अंत का 'सकार प्रथमा के एक बचन का चिन्ह है। जैसे सिंधु ईसानी हिदुष में भी पाया जाता है। **India** और **Indica** इसी से प्रचलित हुए।

● चीनी लोगों ने भी सिंधु नाम की परम्परा का व्यवहार किया। चीनी सेनापति पनयोंग ने विक्रमी सं० १८२ या १२५ में चींनी सम्राट को पश्चिमी देशों का वर्णन भेजते हुए लिखा कि एन–चू–देश (देवों का देश) शिनत् नाम से भी प्रसिद्ध है। शिनत् 'सिंधु' का ही चीनी रूप है। इसी को चीनी साहित्य में 'इन–त्

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

को' भी कहा है जिसमें इन्त–शिनतु 'सिंधु' का रूपान्तर है और 'को' का अर्थ देश है।

भारत के संविधान में 'हिन्दू' की परिभाषा

'हमारे संविधान निर्माता 'हिन्दू धर्म' की सार्वभौम विशालता से भलीभांति परिचित थे, अतः धर्माचरण की स्वतत्रंता के मूलभूत अधिकार को मान्यता देते हुए यह स्पष्टीकरण कर दिया है कि 'हिन्दू' का अर्थ करते समय सिख, जैन या बौद्ध धर्मावलम्बियों को उसमें सम्मिलित माना जायेगा।

संविधान के निर्देशन के अनुसार हिन्दू विवाह अधिनियम १९५५, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम १९६६, हिंदू अल्पवयस्क तथा अभिभावक अधिनियम १९५६, हिन्दू दत्तक तथा पोषण अधिनियम १९६६ उन सब लोगों पर लागू होते हैं। उदाहरण स्वरूप 'हिन्दू विवाह अधिनियम' की दूसरी धारा में यह उल्लेख कर दिया गया है कि यह अधिनियम उन सब पर लागू माना जायेगा :–

(अ) जो हिंदू धर्म को उसके किसी रूप में मानते हैं जिसमें वीर शैव, लिगांयत, ब्रह्म समाजी, प्रार्थना समाजी और आर्य समाजी सम्मिलित हैं।

(ब) जो बुद्ध, जैन या सिख है।

(स) और हर उस व्यक्ति पर जो अधिनियम प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत अधिकृत नागरिक रूप में रहता है और मुसलमान, पारसी ईसाई या यहूदी धर्मावलम्बी नहीं है। इसी प्रकार की व्यवस्था अन्य अधिनियमों में भी हैं। (यज्ञ पुरुष दास बनाम मूलदास ए० आई० आर १९६६)

वीर सावरकर

आसिंधु सिंधु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका ।
पितृभू पुण्यभूश्चैव स वै हिंदूरिति स्मृता ।।

अर्थात् सिन्धु (समुद्र) से सिन्धु (प्रदेश) पर्यन्त भारत भूमि को मातृ–भूमि और पुण्यभूमि मानता है वह 'हिन्दू' है।

'हिन्दू' और 'हिन्दुस्थान' यह शब्द विदेशी न होकर हमारे अपने हैं, इसके सम्मान के रक्षणार्थ हमारे हजारों हुतात्माओं ने संघर्ष किया, प्राणों का उत्सर्ग किया, किन्तु इस 'हिन्दू' नाम का परित्याग नहीं किया। परन्तु इस शब्द की उत्पत्ति के विषय में अत्यन्त असत्य और अपमानास्पद जानकारी मुसलमान,

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy
अंग्रेज इत्यादि परकीय लेखकों की किताबों में मिली है। उसके प्रभाव से प्रभावित स्वकीयों ने भी ऐसे ही विचार अपने ग्रन्थों में लिख दिये। इन ग्रन्थों को पढ़कर यह गलत जानकारी अपने देशवासियों के मस्तिष्क में इस प्रकार घर कर गई कि आज भी निकाले नहीं निकलती।"

"ऋग्वेद में हमारे राष्ट्र के लिए सप्त–सिंधु नाम प्रयुक्त किया गया है। इसमें भी विशेष यह है कि यह नाम जाति–वाचक, धर्म वाचक या पंथवाचक नहीं है। जातिवाचक 'वैदिक' आदि नामों से अपने जनों को हम स्वयं ही उल्लेख करते थे। किन्तु 'सप्त सिंधव' शब्द का उल्लेख देश मूलक, भौतिक और राष्ट्रीय अर्थ में ही है। वैदिक काल में प्रसिद्ध नदियों के बीच में बसने वाले जन–आर्य, वैदिक, ब्रात्य–इन भेदों का प्रगट विचार या गणना न करते हुये उन सब का मिलकर एक जनपद या एक राष्ट्र था। ऋग्वेद काल में स्वयं हम ही उसे 'सप्त सिन्धु' कहा करते थे। हमारे द्वारा रचे हुये प्राचीनतम नामों में से 'सप्त सिन्धु' भी एक नाम है। इसी सप्त सिन्धु शब्द से उसका रूप प्राकृत भाषा में 'हिन्दू' बना है।

(सावरकर विचार दर्शन)

स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू की व्याख्या करते हुये कहा है कि "हिन्दू सम्प्रदाय का प्रतीक नहीं वरन् उदार व्यापक शब्द है। हिन्दू शब्द के अन्तर्गत भारत की समस्त संस्कृति, सभ्यता, मानव विकास, इतिहास एवं भारतीय पंथो और मत मतान्तरों का समावेश हो जाता है। हिन्दू शब्द ओर–छोर हीन सागर तुल्य है जिसमें नदियाँ विभिन्न नामों के साथ जल लाती हैं और उसमें मिलकर एकाकार हो जाती हैं।"

महात्मा गाँधी

"यदि मुझसे हिन्दू धर्म की परिभाषा पूछी जाये तो मैं यह कहूँगा कि शान्तिमय उपायों से सतत् सत्यान्वेषण ही 'हिन्दुत्व' है। ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार करने वाला भी हिंन्दू हो सकता है। हिन्दुत्व की गति में आज अवरोध उत्पन्न हो गया है, अकर्मण्यता आ गई है, उसका विकास मन्द हो गया है, तो उसका एकमेव कारण युगों–युगों से कार्यरत रहने की थकान है। यह विश्राम काल समाप्त होगा और हिन्दुत्व पहले से भी अधिक अपनी अलौकिक आभा प्रसारित कर विश्व पर छा जायगा। संसार के सभी धर्मो में हिंदू धर्म अधिक सहिष्णु है तथा उसकी भावना सर्वस्पर्शी है।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

"मेरे विचार से हिन्दू धर्म इतना विशाल है कि वह पृथ्वी की चारों दिशाओं के पैगम्बरों के उपदेश के प्रति सहिष्णुता रखता है, इतना ही नहीं बल्कि उन्हें आत्मसात कर सकता है। हिन्दू धर्म में अधिक से अधिक विकास पाने का मौका देने की संभावना है और कठोर से कठोर अंतरात्मा को, गहरे से गहरे विचारक को और पवित्र हृदय को संतोष देने की क्षमता हैं। मेरी कल्पना का हिन्दू धर्म एक महान सतत् विकास का प्रतीक और काल की तरह सनातन है। उसमें जरथुस्त, मूसा, ईसा, मुहम्मद, नानक और ऐसे कई धर्म संस्थापकों के उपदेशों का समावेश हो जाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है।

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वैषरागिभिः ।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्ते निबोधतः ।।
(मनुस्मृति अ० २/१)

अर्थात् जिस धर्म को राग द्वेष विहीन ज्ञानी संतो और दिव्यशील महात्माओं ने अपनाया है और जिसे हमारा हृदय और बुद्धि भी स्वीकार करती है वही धर्म हैं। मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ। राजनीति में इसलिये पड़ा हूँ कि वह भी धर्म का एक अंग है। धर्म की परिधि के बाहर कुछ भी नहीं।"

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य श्री गुरुजी (माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर)

"हमारे समाज का मूल तथा कब से हम यहाँ सुसभ्य जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं, इसकी तिथि से इतिहास के विद्वान् अनभिज्ञ हैं। एक प्रकार से हम (हिंदू) अनादि है। ऐसे समाज की व्याख्या करना ठीक उसी प्रकार असंभव है, जैसे उस 'परम सत्य' (ईश्वर) की परिभाषा करना, शब्द का उदभव तो उसके बाद ही हुआ है। यही बात हिन्दू समाज के लिये भी है। हमारा अस्तित्व उस काल से है जब किसी नाम की आवश्यकता ही नहीं थी। हम आर्य प्रबुद्ध लोग थे। हम लोग 'प्रकृति' तथा 'आत्मा' के नियमों के ज्ञाता थे। हमने एक महान सभ्यता, महान संस्कृति तथा एक अनुपम समाज व्यवस्था का निर्माण किया था। हम ऐसी सभी वस्तुओं का जीवन में समावेश कर चुके थे जो मानव के लिए हितकर थी। उस समय शेष मानवता द्विपाद पशु मात्र थी और इसलिये हमें कोई विशिष्ट नाम नहीं दिया गया था। जब कुछ समय बीतने पर विदेशों में भिन्न–भिन्न सभ्यताओं का उदय हुआ और वे विरोधी सम्प्रदाय हमारे सम्पर्क में आये तब नामकरण की आवश्यकता का अनुभव हुआ। भिन्न –भिन्न कालों में अलग–अलग नाम रखे गए। यह ठीक ऐसे ही था जैसे विभिन्न स्थानों पर गंगा को गंगोत्री, भागीरथी, जान्हवी

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

तथा हुगली नाम से पुकारा जाता है, और यह 'हिन्दू' नाम जो सिंधु नदी से लिया गया है, हमारे इतिहास परम्पराओं में हम से इतने काल से सम्बन्धित है कि अब वह हमारे के लिए सम्पूर्ण विश्व के द्वारा स्वीकृत सम्मान एवं आदर का नाम बन गया है।"

विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा स्वीकृत 'हिन्दू' की परिभाषा

आज जब हम दुनिया के नक्शे पर नजर डालते हैं तो दिखाई देता है कि 'हिन्दू' भारत में सीमाबद्ध नहीं है। हिन्दू तत्वज्ञान यद्यपि भारतीय ऋषियों तथा चिन्तकों की देन है परन्तु इस तत्वज्ञान को परिसीमित करने का विचार भारत के मनीषी विद्वानों के मस्तिष्क में कभी नहीं रहा। उनका उन्मुक्त चिन्तन चराचर जगत् के व्यवहार के अनुशीलन के फलस्वरूप मानवमात्र के कल्याण हेतु था। हमारा पड़ोसी नेपाल देश घोषित हिन्दू राष्ट्र है। मारिशस, ट्रिनिडाड में हिन्दुओं का बहुमत है। अमरीका, इंग्लैण्ड, जर्मनी आदि देशों में प्रचुर संख्या में हिन्दू रहते हैं। भारत में लगभग ७० करोड़ हिन्दुओ के अलावा विश्व के अन्यान्य देशों में कई करोड़ हिन्दू रहते है। अतः वर्तमान जागतिक परिस्थितियों के संन्दर्भ में 'हिन्दू' की परिभाषा पर विक्रम सं० २०२३ प्रयाग में आयोजित विश्व हिन्दू महासम्मेलन में विचार हुआ। विभिन्न मत, सम्प्रदाओं के धर्माचार्यो, जगदगुरु शंकराचार्यों,, मठाधिपतियों तथा पचीस हजार से अधिक देश के सभी प्रदेशों तथा विदेशों के प्रतिनिधियों, मनीषी विद्वानों तथा साधु सन्तों ने 'हिन्दू' की निम्नलिखित परिभाषा को मान्यता प्रदान की –

हिन्दू लक्षणम्

भारतीयर्षि संप्रोक्तान् इहामुत्रार्थ साधकान्।
योऽङ्गीकरोति सश्रद्धं सत्सिद्धांतान् सनातनान् ।।१।।

महात्मभिर्दिव्य शीलैः काले काले प्रवर्तितान्।
सम्प्रदायानाद्रियते यः सर्वान् पारमार्थिकान् ।।२।।

यत्रकुत्रापि जातोऽसौवाऽस्तु यः कोऽपि जन्मना।
सच्छीलोदार चरितः सोऽत्र हिन्दुरिति स्मृतः ।।३।।

भारतीय ऋषियों द्वारा कहे गए लोक–परलोक साधक पुरातन सिद्धान्तों को जो श्रद्धापूर्वक स्वीकार करता है और दिव्य चरित्र वाले महापुरुषों द्वारा

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

समय–समय पर प्रवर्तित समस्त पारमार्थिक सम्प्रदायों का जो आदर करता है ऐसा सदाचारी और सच्चरित्र व्यक्ति, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो, या जन्म से कोई भी हो, 'हिन्दू' है।

इतने विस्तार से विवेचन, अपने धर्म–शास्त्रों, इतिहास पुराणादि ग्रंथों तथा हिन्दी एवं संस्कृत कोशों और अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथों के उद्धरणों को पढ़कर मज़हवी तास्सुब से लिखे गए उर्दू फारसी लुग़तों में हिन्दू नाम सम्बन्धी विवाद समाप्त हो जाना चाहिए।

हमारे पूर्वजों की गौरवशाली परम्परा ने इस नाम को गौरव प्रदान किया। हमें हिन्दू होने का गौरव है। हिन्दू नाम को और भी अधिक गौरवशाली बनाना इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसा आचरण करते हैं। स्पर्धा और संघर्ष के इस दौर में अपनी रक्षा तथा सर्वहितकारी सनातन हिन्दू धर्म का सन्देश देते रहने के लिए हिन्दुओं का संगठन नितान्त आवश्यक है। हिन्दुत्व के बोध में ही भारत का सर्वोदय तथा विश्व का कल्याण निहित है।

हिन्दू – सर्वश्रेष्ठ जीवन रचना

यदि मुझ से पूछा जाय कि किस देश में मानव मस्तिष्क ने अपनी मुख्य शक्तियों को विकसित किया, जीवन के महान प्रश्नों पर विचार करके ऐसे समाधान ढूंढ निकाले जिनकी ओर प्लेटों और कान्ट के दर्शन का अध्ययन करने वालों को आकृष्ट होना चाहिए तो मैं भारत की ओर संकेत करूंगा।

यदि मैं अपने आप से पूछूं कि सेमेटिक, यूनानी अथवा रोमन विचार धारा में निमग्न योरूपियन जन अपने आध्यात्मिक जीवन को अधिकाधिक विकसति, सार्वभौम एवं उच्चतम मानवीय गुणों से युक्त बनाने के लिये किस साहित्य का आश्रय लें जिससे उनका जीवन ऐहिक ही नहीं, अपितु पारलौलिक भी शाश्वत एवं दिव्य हो जाय, तो मैं पुनः भारतीय साहित्य की ओर संकेत करूंगा।

- मैक्समुलर का पत्र

साम्राज्ञी विक्टोरिया को सन् १८५७

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

धर्म ही राष्ट्र का प्राण है

यह तो सभी मानते हैं कि राज्य का कोई न कोई लक्ष्य होना चाहिये। अतः सर्वोपरिता राज्य की नहीं आदर्श की होना चाहिये। पहरेदार खजाने से बड़ा नही हो सकता; कोष की तुलना में कोषाध्यक्ष छोटा ही माना जायगा। राज्य राष्ट्र की रक्षा के लिए पैदा होता है; राष्ट्र के आदर्शो को व्यवहार में लाने या लाने की अवस्था पैदा करने तथा बनाये रखने के लिए पैदा होता है। राष्ट्र का आदर्श अथवा 'चिति' गहन है। इसकी अभिव्यक्ति और व्यवहार के नियमों को ही उस राष्ट्र का धर्म कहते हैं। अतः महत्व यदि किसी चीज का है तो वह 'धर्म' है। धर्म – यह महत्व की चीज है; यदि हमारा प्राण कहीं है तो वह धर्म में है। धर्म गया कि प्राण गया। इस लिए जिसने धर्म छोड़ा वह राष्ट्र से च्युत हो गया, उसका सब कुछ चला गया।

'धर्म' रिलीजन या मज़हब नही होता

धर्म का सम्बन्ध केवल मन्दिर, मस्जिद या चर्च से नहीं है। उपासना व्यक्ति धर्म का एक अंग हो सकती है, किन्तु धर्म तो व्यापक हैं। मन्दिर, मस्जिद लोगों में धर्माचरण की शिक्षा का प्रभावी माध्यम भी रहे है, किन्तु जिस प्रकार विद्यालय विद्या नहीं है वैसे ही मन्दिर से धर्म भिन्न है। हो सकता है कोई बालक रोज पाठशाला जाय फिर भी अनपढ़ रह जाय। उसी प्रकार प्रतिदिन मन्दिर या मस्जिद में जाने वाला व्यक्ति भी धर्महीन हो सकता है। मन्दिर, मस्जिद में जाना मत, मज़हब, रिलीजन (Religion) हैं। रिलीजन अर्थात् 'धर्म' नहीं। रिलीजन को बहुत बार लोगों ने धर्म मान लिया। अंग्रेजी अनुवाद के कारण हमारी जो बहुत सी हानियाँ हुई हैं उनमें एक बड़ी हानि यह भी है।

एक ओर तो हम रिलीजन को धर्म के पर्यायबाची शब्द के रूप में प्रयोग करने में लगे तथा दूसरी ओर अपने धर्म और जीवन का अज्ञान तथा यूरोपीय जीवन का अधिकाधिक ज्ञान हमारी शिक्षा का विषय बन गया। फलतः रिलीजन के जितने सहचारी भाव हैं वे हमने धर्म पर आरोपित कर दिये। यदि योरोप में रिलीजन के नाम पर अन्याय और अत्याचार, संघर्ष और युद्ध हुए तो बे सब हमारे यहाँ भी धर्म के खातेनामें में (Dibit) चढ़ा लिये गये। हमें लगा कि धर्म पर भी लड़ाई हो सकती है। परन्तु धर्म की लड़ाई दूसरी होती है और रिलीजन की लड़ाई दूसरी होती है। रिलीजन याने मंत, पंथ, मज़हब, वह धर्म नहीं। धर्म तो एक व्यापक चीज है। यह जीवन के सभी पहलुओं से सम्बन्ध रखने वाली चीज है। उस से समाज की धारणा होती है। उस से आगे बढ़ें तो सृष्टि की धारणा होती है। यह धारणा करने वाली जो चीज है वह धर्म है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

(एकात्म मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय, पृष्ठ ५२,५३)

हिन्दू धर्म की महान शक्ति यह है कि कुछ शाश्वत सिद्धान्तों पर आधारित है किसी एक व्यक्ति पर नहीं। इन सिद्धान्तों की परीक्षा कोई भी व्यक्ति किसी समय कर सकता है।

महर्षि व्यास ने महाभारत में धर्म की परिभाषा की है :–

धारणा धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।
तस्माद्धारण संयुक्त स धर्म इति निश्चयः ।।

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है धारण करने वाला। अर्थात जिस कर्म से प्रजा की धारणा होती है वह धर्म है।

महर्षि कणाद के अनुसार 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः' अर्थात् जिस लोक व्यवहार से लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक कल्याण भी हो ऐसा लोक व्यवहार धर्म माना जायेगा।

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, दम, चोरी न करना, शुचिता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध यह धर्म के दस लक्षण हैं –

महर्षि याज्ञवल्क्य ने इन्हीं लक्षणों को धर्म का साधन बताया है।

"अहिंसा, सत्यं, अस्तेयं शौचमिन्द्रय निग्रहः ।
दान, दया, दमः, शान्ती सर्वेषां धर्म साधनम् ।।

धर्म के उपरोक्त लक्षणों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, दया, क्षमा, शौच आदि तो बताया गया है किन्तु, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि मत–पंथ सम्प्रदाय, या किसी निर्धारित पूजा पाठ या अन्य कर्मकाण्ड का उल्लेख नहीं है। यह सार्वदेशिक मानवमात्र का धर्म है।

हिन्दू धर्म का यथार्थ नाम सनातन धर्म है। वेदों पर आधारित होने के कारण उसे वैदिक धर्म भी कहते हैं। प्राचीन आर्यो द्वारा विश्व में इसका प्रचार हुआ इस लिए आर्य धर्म भी कहते हैं। जिन सत्यदृष्टा ऋषियों ने धर्म के इन तत्वों का आविष्कार किया था उनकी वर्तमान पीढ़ी 'हिन्दू' नाम से विश्व में विख्यात है

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

इस लिये हिन्दू धर्म कहते हैं, जैसे न्यूटन के नाम को गुरुत्वाकर्षण के साथ जोड़ते हैं, यद्यपि गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का प्रतिपादन ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन से लगभग ६०० वर्ष पूर्व किया था।

हिन्दू धर्म ने निम्नलिखित सूत्रों के माध्यम से सकल मानवता को दिव्यता की शिक्षा दी और विश्व बन्धुत्व का मार्ग प्रशस्त किया है :

- अहं ब्रह्मास्मि (मैं ब्रह्म हूँ)
- तत्वमसि (वह तू ही है)
- सर्व खल्विदं ब्रह्म (यह सब ब्रह्म है)
- यस्तर्केणानुसंघते स धर्मो वेद नेतरः (जो तर्क की कसौटी पर खरा उतरे वही धर्म है)
- वसुधैव कुटुम्बकम् (सारी वसुधा एक कुटुम्ब है)
- आत्मवत् सर्वभूतेषु (सब को आप समान जानो)
- एको सद्विप्राः बहुधा वदन्ति (सत्ता एक ही है ज्ञानी जनों ने इसे अलग–अलग नाम से कहा है)

इन्हीं सूत्रों के आधार पर ऋषि–मुनि, संत–महात्मा सनातन धर्म प्रचारक ब्राह्मण विश्व के विभिन्न देशों में गये। भविष्य पुराण के अनुसार कण्व ऋषि मिश्र देश गये।

सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्रदेशमुपाययौ ।
म्लेच्छान् संस्कृतमाभाष्य तदा दश सहस्त्रकान् ।।
वशीकृत्य स्वयं प्राप्तो ब्रह्मावर्तेत्त महोत्तमे ।
ते सर्वे तपसा देवी तुष्टवुश्च सरस्वतीम् ।।
सपत्नीकांश्चतान् म्लेच्छान् शुद्रवर्णीयचाकरोत् ।
कारूवृत्तिकराः सर्वे बभूवुः बहुपुत्रकाः ।
द्विसहस्त्रास्तदा तेषां मध्ये वैश्याबभूविरे ।
तदा प्रसन्नतो भगवान् कण्वो वेदविदांवरः ।।
तेषां चकार राजानं राजपुत्र पदं ददौ ।

x x x x x

मिश्र देशोद्भवा म्लेच्छाः काश्यपेनसुशासिताः,
संस्कृताः शूद्र वर्णेश ब्रह्मवर्णमुपागतः ।।
शिखासूत्रं समाधाय पठित्वा वेदमुत्तम् आदि

देवी सरस्वती की आज्ञा से कण्व ऋषि मिश्र देश पहुँचे। वहाँ दस हजार

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

म्लेछों को संस्कृत शिक्षा दी और उनको प्रभावित कर ब्रह्मावर्त (भारत) ले आये। उन लोगों ने यहाँ तप के द्वारा सरस्वती देवी को संतुष्ट किया। इन्हें पत्नियों सहित शूद्र वर्ण में स्थापित किया गया। बहुत पुत्र वाले उन लोगों ने कारीगरी के अनेक व्यवसायों को अपनाया। पश्चात उनमें से दो हजार को वैश्य वर्ण में परिवर्तित किया गया। वेदज्ञों में श्रेष्ठ भगवान कण्व ने पूर्वोक्त कुछ लोगों को राजपुत्र पद देकर क्षत्रिय वर्ण दे दिया। पुनश्च मिश्र देश में जन्में इन म्लेच्छों में से कुछ लोग काश्यप (कण्व) ऋषि के नियमानुसार शिक्षा संस्कार प्राप्त कर शूद्र वर्ण से ब्राह्मण वर्ण को प्राप्त हो गये और शिखा सूत्र धारण कर श्रेष्ठ वेद का अध्ययन किया।

इसी प्रकार अगस्त, कम्ब, कौन्डिन्य आदि अनेक सनातन धर्म प्रचारकों ने तथा गुणवर्मन, धर्मपाल, बज्रबोध आदि हजारों बौद्ध भिक्षुओं ने दक्षिण पूर्वी एशिया देशों में जाकर हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार किया। फिलीपाइन्स में न्यायालय के विशाल कक्ष में मनु की एक स्फटिक प्रतिमा स्थापित है जिस पर लिखा है –

मानव जाति के प्रथम एवं महान
सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञा सम्पन्न विधि निर्माता ।

थायी देश, कम्बोडिया, वियतनाम, खमेर, उत्तर मलाय के निवासी अपने को ब्राह्मण कौण्डिन्य का वंशज मानते है। वहाँ की गाथाओं के अनुसार कौण्डिन्य समुद्र पार कर वहाँ गये थे। एक नाग कन्या से विवाह कर वहीं बस गये और सनातन धर्म सभ्यता संस्कृति का प्रचार किया।

चम्पा, अंकोर के विशाल मंदिरों में संस्कृत लेख हैं। थाई देश की पुरानी राजधानी जो बैकांक से लगभग ५० मील दूर है, उसका नाम श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या के नाम पर 'अयोध्या' है। बैंकांक के अनेक मंदिरों में राम कथानकों के आधार पर मूर्तियाँ उत्कीर्ण है। चीन, जापान से तीर्थयात्री सारनाथ, बोधगया आदि दर्शन के लिये आते हैं।

सनातन धर्म सबके लिये है –

हिन्दू समाज की लम्बी जीवन यात्रा में अनेक सभ्यताओं तथा संस्कृतियों का मिलन हुआ और वह सभी सनातन धर्म की पावन गंगा में आत्मसात् हो गयीं जैसे छोटी बड़ी अनेक नदियाँ गंगा में मिलकर गंगा बन जाती हैं।

हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार संस्कार एवं परिष्कार कर क्रमशः उन्नति

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

करने का अधिकार सब को है। हिन्दू धर्म के द्वार सब के लिए खुले हैं। अगस्त्य, कौण्डिन्य आदि ऋषियों ने सनातन धर्म का विस्तार दूर दूर देशों तक किया। मानव धर्म शास्त्र के प्रणेता, हिन्दू समाज व्यवस्था का निर्धारण करने वाले मनु महान की दी व्यवस्था के अनुसार अन्यान्य लोग जैसे-जैसे हिन्दुओं के श्रेष्ठ आचार व्यवहार और धर्मानुष्ठान स्वीकार कर लेते हैं तदनुसार वह लोक और परलोक में सम्मान प्राप्त करते हैं।

यथा यथाह सद्वृत्तिमातिष्ठत्यनसूयकः ।
तथा तथेयं उच्चलोकं प्राप्नोत्यनिन्दितः ।।

❋ इन्द्र बर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तों विश्वमार्यम् ।
ऋ० ६-३६-५

इस मंत्र में ईश्वर की महिमा बढ़ाते हुए सब संसार को सुसंस्कृत कर आर्य बनाने का आदेश दिया गया है।

विश्व भर में हिन्दू धर्म के प्रचार व प्रसार की रोचक कथाओं का विवरण वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि ग्रंथो में है।

महाभारत

महाभारत शान्ति पर्व में कतिपय विदेशी जातियों के भारतीयकरण या हिन्दू बनने की बोधप्रद कथाएँ है। उस समय चक्रवर्ती सम्राट मानधाता का शासन था। यवन, किरात, गान्धार, चीन, शबर, बर्बर, शक, तुष, कंक, पल्हव, आन्ध्र, मद्रक, औन्ड्र पुलिन्द, रमठ, कंबोज, म्लेच्छ, ब्राह्मछत्र इन जातियों के लोग समय समय पर विदेशों से आकर भारत में बस गये थे। इनका रहन सहन भिन्न था। इसकी संस्कृति भी अनार्य थीं। कभी कभी यह देश की शांति और सुव्यवस्था के लिये समस्या भी बन जाते थे। सम्राट मानधाता ने देवराज इन्द्र से परामर्श किया, एक आचार संहिता बनाई गयी, जिस का पालन इन सब लोगों ने स्वीकार किया। इस प्रकार यह सब दस्यु जातियाँ सनातन धर्म की वर्ण व्यवस्था में समाविष्ट होकर राष्ट्र का अभिन्न अंग बन गयी।

श्रीमद्भागवत महापुराण में शुद्धि का मंत्र -

किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुल्कसा
आभीर कंका यवनाः खसादयः ।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयः
शुद्धयन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः ।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

श्री शुकदेव जी कहते हैं –

"राजन ! जिन भगवान के भक्तों की शरण ग्रहण करने से किरात, हूण, आन्ध्र, पुलिन्द, पुल्कस, आमीर, कंक, यवन और खस आदि जातियाँ तथा और भी पापरत पुरुष शुद्ध हो जाते हैं, उन पुण्यकीर्ति प्रभू के पाद पद्मों में पुनः पुनः प्रणाम है।

अपने धर्म और समाज की रक्षा की दृष्टि से यह शिक्षा बड़ी महत्व की है। गोस्वामी तुलसीदास ने उसके महत्व को समझा था। रामचरितमानस का उपसंहार करते हुये उत्तर कांड में इसी मंत्र को इस प्रकार दोहराया–

पायी न केहि गति पतित पावन राम भजि सुन सठ मना ।
गनिका, अजामिल, व्याध, गीध, गजादि खल तारे घना ॥
आमीर, यवन, किरात, खस, स्वपचादि, अति अघ रूप जे ।
ते होहिं पावन कहत बारक एक राम नाम नमामि ते ।

धर्म परिवर्तन और शुद्धि की बात पर महात्मा गाँधी ने भी कहा "मैं तो इनसे केवल सौ बार राम नाम लेने के लिए कहूँगा"। (ह० से० ११/७/१९३६)

धर्म के क्षेत्र में साम्प्रदायिक कटुता और संहारवाद–

"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" सत्ता एक ही है, ऋषियों ने इसके भिन्न–भिन्न नाम दिये हैं। इस एक मंत्र पर से बहुत से महत्वपूर्ण परिणाम निकले है। भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ विधर्मियों पर अत्याचार कभी नहीं हुआ और जहाँ किसी मनुष्य को उसके धार्मिक विश्वास के कारण तंग नहीं किया गया। आस्तिक, नास्तिक, अद्वैतवादी, द्वैतवादी, एकेश्वरवादी, एक साथ बिना किसी विद्वेष भाव के रहते हैं। जड़वादी चार्वाकों ने ब्राह्मणों के मंदिरों की सीढ़ियों पर से देवताओं के विरुद्ध यहाँ तक कि स्वयं ईश्वर के विरुद्ध भी प्रचार किया। वे सारे देश में यह उपदेश देते फिरे कि ईश्वर को मानना निरा अंध विश्वास है। देवी–देवता, वेद और धर्म आदि की बातें निरी कपोल कल्पनाएँ है, जिनको पुरोहितों ने अपने स्वार्थ के लिए गढ़ा है। जब तक इस्लाम की लहर भारत में नहीं आई थी तब तक यहाँ के लोग जानते तक न थे कि धार्मिक अत्याचार किसे कहते हैं। जब विधर्मी विदेशियों द्वारा हिन्दुओं पर यह अत्याचार हुआ तभी उन्होंने इसे प्रथम बार अनुभव किया।" –स्वामी विवेकानन्द

(हिन्दू धर्म–वेद प्रणीत हिन्दू धर्म–पृष्ठ ५८,५९)

मुस्लिम इतिहासकारों ने अधिक प्रशंसा उन सुल्तानों और गाजियों की लिखी है जिन्होंने एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में तलवार लेकर हिन्दुओं

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

को मुसलमान बनाया या बध किया। किन्तु भारत का सबसे बड़ा अकल्याण मुसलमानों ने यह किया कि हिन्दुस्तान में साम्प्रदायिकता की आग पैदा कर दी। धार्मिक द्वेष भारत में नहीं था यह मुस्लिम साम्प्रदायिकता की देन है।

रक्षा के अभिनव प्रयोग

● भविष्य पुराण के अनुसार कृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अपने शिष्यों को आदेश दिया था कि मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को वैष्णव सम्प्रदाय में लेकर सबको हिन्दू धर्म में परावर्तित किया जाय। तदनुसार उनके शिष्य स्वामी रामानन्द जी, आचार्य निम्बादित्य, श्री विष्णु स्वामी, आचार्य वाणीभूषण आदि सातों पुरियों में गये। हरिद्वार, प्रयाग, काशी, अयोध्या, काञ्ची आदि प्रसिद्ध तीर्थो में जाकर उपदेश दिया और लाखों लोगों को हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया। स्वामी रामानन्द के प्रभाव से अयोध्या के तमाम मुसलमान हिन्दू बन गये। आचार्य निम्बादित्य जी अपने शिष्यों सहित काञ्चीपुरम गये। मार्ग में समस्त मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को पुनः वैष्णव सम्प्रदाय की दीक्षा देकर हिन्दू धर्म में मिला लिया। विष्णु स्वामी, वाणीभूषण आदि ने हरिद्वार, काशी आदि तीर्थो मे जाकर मुसलमानों को वैष्णव धर्म की दीक्षा दी।

● संवत् १५४८ वि० चैत्र सुदी तृतीया को मूल्लू खां नाम के एक हाकिम ने मारवाड़ के ग्राम कोसाने के तालाब पर स्नान के लिये गई १४० हिन्दू कन्याओं को जबरदस्ती पकड़ ले गया। मारवाड़ के राजा राव सावल ने उस पर चढ़ाई कर घोर संग्राम किया, अपहृत १४० कन्याओं को मुक्त कराने के साथ ब्याज में कई मुसलमान अमीर–जादियों को और उनके साथ सेनापति घुड़ेल खां की सुन्दर कन्या को भी पकड़ लाया गया। उन सब की शुद्धि कर हिन्दू परिवारों में दे दिया गया।

जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्त सिंह और उनके सुपुत्र अजीत सिंह के नेतृत्व में जिन मंदिरों को ढहा कर मस्जिदें बनाई गई थीं उन्हें गिरा कर पुनः मन्दिर बनवाये गये, और जहाँ तक हो सका जोर जबरदस्ती से मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में वापस लिया गया, और मुसलमान बनायी गई महिलाओं को हिन्दुओं के साथ विवाह कर दिया गया।

महर्षि देवल की दूरदर्शिता

ई० सन् ६६४ से ही मुसलमानों का भारत भूमि पर हमला प्रारम्भ हुआ। ई० सन् ७१२ से उसका स्वरूप भयानक क्रूर बनने लगा। जोर–जुल्म–अत्याचार

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

से हजारों हिन्दू नर नारियों को मौत के घाट उतार दिया गया तथा लाखों को जान बचाने के लिये मजबूर होकर मुसलमान बनना पड़ा। इस परिस्थिति में भारतवर्ष में जो द्रष्टा पुरुष थे उनमें महर्षि देवल की दूरदर्शिता तथा ऋण हम कभी नहीं भूल सकते।

महर्षि देवल ने कालोचित नयी स्मृति बनाकर ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य–शूद्र इन चारों वर्णो के, अर्थात् सनातन वैदिक धर्म के, जो–जो स्त्री–पुरुष किसी भी कारणवश 'म्लेच्छनीताः' अर्थात मुसलमान बनाये गये थे, उन सब को पुनः सनातन वैदिक धर्म में आने की व्यवस्था २,००० वर्ष पूर्व कर दी गयी थी। इतना ही नहीं, अपितु प्रत्यक्ष बहुत बड़ी संख्या में मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में वापस भी लिया।

देवल स्मृति में दी गई 'शुद्धि' की व्याख्या–

बलाद्दासी कृतो म्लेच्छेश्चण्डालाद्यैश्य दस्युभिः ।
अशुभ कारितं कर्म गवादि प्राणि हिंसनम् ।

उच्छिष्टमार्जनं चैव तथा तस्यैव भक्षणम्
तत्स्त्रीणां च तथा संगस्तापिश्च सह भोजनम् ।। इत्यादि

म्लेच्छ चाण्डालादि डाकुओं द्वारा जो कोई जबरदस्ती दास बनाया गया हो तथा अशुभ कर्म, गौ हत्या आदि या प्राणियों की हिंसा आदि जिससे जबरदस्ती करायी गई हो या, जूठे बर्तन मंजाये गये हो तथा जिसे जूठा खिलाया गया हो तथा जिसने उनकी स्त्रियों का संग या उनके साथ भोजन किया हो तो उनकी शुद्धि 'कृच्छ सन्ताप' व्रत से होती है।

स्वामी रामानन्द

संयोगिनश्चतेज्ञया अयोध्या बभूविरे,
म्लेच्छास्ते बैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावतः ।।

कंठे च तुलसी माला जिव्हा राममयी कृतः ।
भालेत्रिशूलचिन्हश्च श्वेत रक्तदाभवत् ।।

इसी प्रकार स्वामी रामानन्दजी महाराज और उनके उत्साही शिष्यों के

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

प्रयास से अयोध्या के निकटवर्ती मुसलमान वैष्णव अर्थात् हिन्दू बन गये।

स्वामी रामानन्द रामानुज की शिष्य परम्परा की चौथी पीढ़ी में थे। जन्म वि.स. १३५६ मृत्यु सं. १४६७।

राजपूत घरानों की शुद्धियां –

कर्नल टाड के कथनानुसार जैसलमेर के राव चैचक ने, उदयपुर के महाराणा बप्पारावल ने; तथा मारवाड़ के कुंवर जगमल ने मुसलमान कन्याओं के साथ विवाह किये थे। इसका कारण इतना ही मालूम होता है कि इन कन्याओं के घरानों के ऊपर मुसलमान होने का केवल आरोप था। मारवाड़ के राजा रायपाल ने छः सौ मुसलमान स्त्रियों की शादी उनकी इच्छा के अनुसार अपने हिन्दू सरदारों के साथ करा दी थी। उदयपुर के महाराणा कुम्भा ने भी ऐसा ही किया था, ऐसा टाड ने लिखा है। राजस्थान में कायमखानी नाम के मुसलमान है। वास्तव में वे राजपूत वंश के थे और स्वयं को चव्हाण, पंवार, राठौर ऐसे भिन्न–भिन्न कुलनामों से स्वाभिमानपूर्वक कहते थे। सन् १६१८ में जोधपुर के महाराजा सुमेर सिंह ने अपनी शादी में कायमखानी मुसलमान राजपूतों को तथा अन्य राजपूतों को एक ही पंक्ति में भोज पर बुला कर बन्धु प्रेम बढ़ाने का प्रयास किया था। तारीख सोरठ नामक इस्लामी पुस्तक के अनुसार मारवाड़ के हिन्दुओं ने अनहिलवाड़ के राजा भीमदेव के नेतृत्व में धर्मविधिपूर्वक कतिपय तुर्की, मुगल तथा अफगानी स्त्री पुरूषों को हिन्दू धर्म में लेकर, हिन्दू समाज में उनकी योग्यता के अनुसार शादियाँ सम्पन्न कर, उन्हें प्रतिष्ठा दी थी।

रुस्तम खां और ताज बेगम की कृष्णभक्ति

औरंगजेब के काल में महात्मा विट्ठलदास ने मिर्जा अब्दुल कादिर को हिन्दू धर्म में लेकर 'चन्द्रनयन' नाम दिया था। चन्द्रनयन ने ही रामायण का फारसी अनुवाद किया है। जफरहसन के तवारिख में मुसलमान सनातन वैदिक धर्म को स्वीकार करते थे ऐसा साधार लिखा है। औरगंजेब के ही राज्य काल में रुस्तमखां नाम के पठान ने और 'ताजबेगम' नाम की महिला ने हिन्दू धर्म को स्वीकार करके श्रीकृष्ण भक्ति पर बहुत ही हृदयस्पर्शी काव्य की रचना की है।

ईसाई आक्रमण और शुद्धिकरण

छत्रपति शिवाजी महाराज, छत्रपति संभाजी महाराज और पराक्रमी पेशवाओं के राज्यकाल का पत्र व्यवहार तथा आज्ञापत्र यह स्पष्ट करते हैं कि जोर, जुलुम,

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अन्याय, अत्याचार, छलकपट द्वारा जो मुसलमान बनाये गये थे ऐसे कई छोटी विरादरी के लोगों को विधिपूर्वक हिन्दू धर्म में वापस ले लिया गया था।

इस्लाम के आक्रमण जैसा ही, किबंहुना उससे भी खतरनाक आक्रमण ईसाई मिशनरियों ने हिन्दू समाज के ऊपर ई० सन् १४६८ से प्रारम्भ किया। पोर्तुगीज काल में गोवा प्रान्त में तथा महाराष्ट्र के ठाणे जिले में उन्होंने ईसाइयत के प्रसार के लिये और हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिये जो अत्याचार किये वे संसार की मानवता के लिये बड़ा भारी कलंक है। ऐसी विपरीत स्थिति में भी जिन महात्माओं ने जान की बाजी लगाकर शुद्धि का काम किया उनका पराक्रम सदा स्मरणीय रहेगा।

चार सौ वर्ष पूर्व पोर्तुगीज शासन ठाणे जिले के वसई क्षेत्र में था। ईसाई मिशनरियों ने हिन्दुओं के ऊपर अत्याचार की परिसीमा कर दी थी। ऐसी अवस्था में भी वसई (महाराष्ट्र) समीप जो निर्मल नाम का क्षेत्र है वहाँ के पुरोहित इन भ्रष्ट किये गये भाईयों को पुनः हिन्दू धर्म में लेने की हिम्मत करते थे। कृष्णाष्टमी के पर्व पर इस क्षेत्र के 'निर्मल' और 'विमल' सरोवर में स्नान करने के बाद सब पाप क्षालन हो जाता है, इस प्रकार उपदेश करके ईसाई बनाये गये या बन गए लोगों को वापस सनातन धर्म मे लेते थे। अतः पोर्तुगीज शासन और उनके मिशनरियों का गुस्सा इतना बढ़ गया कि उन्होंने भारी पैमाने पर गोहत्या करके इन सरोवरों का पानी खून से लाल कर डाला और साधू महात्मा, पुरोहित शुद्धि का धर्म जो कार्य करते थे उनमें से कईयों को कतल कर डाला। परन्तु जब मराठी सत्ता के सर–सेनानी वीर चिमाजी अप्पा ने सन् १७३६ में पोर्तुगीजों का पराभव कर उनकी सत्ता उखाड़ कर फेंक दी, तब से मराठी सत्ता समाप्त होकर अंग्रेजों के हाथ में जाने तक, वैयक्तिक रूप से यह काम होता ही रहा। काश्मीर से राजा रणजीत सिंह का बहादुर सेनानी हरिहर नेलुआ ने जब विजय प्राप्त किया, तब कई मुसलमानों ने सनातन धर्म स्वीकार किया था ऐसा उल्लेख उनके चरित्र में मिलता है।

शुद्धि कार्य का राष्ट्रीय महत्व

बीसवीं शताब्दी के प्रभात काल से ही इस कार्य की महत्ता प्रतिपादित होने लगी। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द, रामकृष्ण आश्रम के संस्थापक स्वामी विवेकानन्द, काशी हिन्दू विद्यापीठ के संस्थापक पं० मालवीय जी, पंजाब केशरी लाला लाजपतराय, हिन्दू महासभा के सब अध्यक्ष, विशेषकर भाई परमानन्दजी, डॉ० खरे, सावरकर जी, सहस्त्रावधि मलकाना राजपूत मुसलमानों की शुद्धि करने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, त्रावणकोर के प्रसिद्ध दीवान

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

रामास्वामी, गोवा–दमण आदि पोर्तुगीज के अधीन प्रान्तों में पचास वर्ष पूर्व जाकर हजारों इसाईयों की शुद्धि करने वाले मसुराश्रम के संस्थापक धर्म भास्कर मसूरकर महाराज तथा महामना ब्रह्मचारी दत्तमूर्तिजी तथा उनके तेजस्वी शिष्यगण, भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक आचार्य प्रणवानन्दजी महाराज, सर संघ–चालक प० पू० श्री गुरुजी ऐसे अनेकानेक महापुरुषों ने शुद्धि का कार्य का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय महत्व प्रतिपादित किया और प्रत्यक्ष काम भी किया है।

सभी धर्मपीठों का समर्थन

भारत धर्म महामंडल (काशी) सनातनी विद्वानों की इस केन्द्रीय संस्था द्वारा पचास बरस पूर्व ही शुद्धि कार्य के विषय में जो अभिमानस्पद अनुकूल निर्णय दिये गये हैं तथा शुद्धिकृतों हेतु जो सम्मान व्यवस्था बतलायी है वह चिरंतन मार्ग दर्शक बनी रही है। सनातनी पक्ष के आदरणीय विद्वान, धर्म–संघ के प्रवर्तक स्वामी करपात्री जी महाराज ने भी इस कार्य की प्रशंसा कर समर्थन दिया है। श्रीमान प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, द्वारका, बदरी और पुरी के सर्व श्री जगदगुरू शंकराचार्य महाराज भी इस कार्य के पूरे–पूरे समर्थक हैं।

हमारा कर्तव्य

शुद्धि कार्य प्रेम में सफल होता है। यह कार्य ऐसा है कि जो लोग अन्याय अत्याचार के शिकार हुये है उनको न्याय देने वाला, जो अंधेरे में लड़खड़ा रहे है, उनको प्रकाश देने वाला, जिनको मातृभूमि का द्रोह करने को पढ़ाया गया है उनको मातृभक्त–राष्ट्रभक्त बनाने वाला, जिनको मूर्तिभंजक बनाया गया है उनको कण– कण में भगवान देखने की क्षमता देने वाला, जिनको गोहत्यारे बनाया गया है उनको गाय का सर्वतोपरि महत्व समझाने वाला है। बंधुभाव और सामंजस्यादि गुण का निर्माण कराने वाले यह कार्य स्नेह तथा विश्वास से करना चाहिये। यह कार्य देश, धर्म, समाज, संस्कृति, सुचारु परंपरा तथा तेजस्वी इतिहास की पवित्र सेवा है।

परावर्तन संस्कार के सम्बन्ध में मालवीय जी के विचार

"हिन्दुओं की संख्या शक्ति कायम रखने के लिये यह परम आवश्यक है कि संख्या क्षीण होने के जितने मार्ग हैं सब बन्द कर दिये जायें। यह केवल शुद्धि (अहिन्दुओं को हिन्दू बनाने) से ही हो सकता है।

–'शुद्धि' के सम्बन्ध में अपने एक भाषण में कहा ''अरब और अफगानिस्तान से अधिक से अधिक ५० लाख मुसलमान यहाँ आये होंगे। बाकी सब यहीं के

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

बनाये हुए मुसलमान है।

—जो लोग जुल्म जबरदस्ती से पर–धर्म में गए हैं उन्हें शुद्ध करना चाहिए। इन में से बहुत ऐसे भी हैं जिनको हिन्दुओं ने छोड़ दिया है तो भी वे अपने प्राचीन आचार पर अटल हैं।

—प्राचीन काल में ऋषियों ने अनार्यो को आर्य और सभ्य बना लिया था अतः जो लोग स्वेच्छा से हिन्दू धर्म स्वीकार करना चाहें उन्हें ऐसा करने का पूर्ण अधिकार है।

—ईश्वर का नाम लेकर चारों ओर यह घोषणा कीजिए, इसी से हिन्दू धर्म का अंधेरा दूर होकर धर्म सूर्य का उदय होगा और हिन्दू समाज विशाल और बलवान होगा।

—सदियों से मुसलमान हिन्दुओं को मुसलमान बनाते रहें हैं और भारत के मुसलमानों में अधिक संख्या ऐसे ही हिन्दुओं तथा इनकी संतानों की है।

—कितने ही ईसाई मिशन हिन्दुओं को ईसाई बनाने का प्रत्यत्न कर रहे हैं।

कृणवन्तो विश्वमार्यम्

● हिन्दू शास्त्रों ने हमें अपना ज्ञान दूसरों में फैलाने की आज्ञा दी है। पर अब तक हम इस कर्तव्य की उपेक्षा करते रहे हैं। केवल आर्य समाजी भाइयों ने और अब विश्व हिन्दू परिषद ने थोड़ा बहुत काम इस ओर किया है। अतः इस्लामी और ईसाई मिशनों की कार्यवाही के कारण अन्य धर्मावलम्बियों को स्वधर्म में लाने के लिए एक 'हिन्दू मिशन' का संगठन बहुत ही आवश्यक हो गया है।"

परावर्तन संस्कार का राष्ट्रीय महत्व - वीर सावरकर

● भारत में मुसलमानों ने एक हाथ में कुरान व दूसरे हाथ में तलवार लेकर ही बलात् हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया था। ऐसी स्थिति में उन हिन्दुओं को, या उनके वंशजों को, स्वधर्म के महत्व से परिचित कराकर पुनः अपने धर्म में वापस लाना यह राष्ट्रीय कार्य है।

● लाखों लोग जो तलवार के साये में जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए और जो आज तक मुसलमान बने रह गए इसका दोष, हिन्दुओं की गतिहीन जाति बिरादरी की दीवारों में जकड़ी समाज व्यवस्था को है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाने का योजनाबद्ध प्रयत्न था हिन्दू महिलाओं का अपहरण

● हिन्दुओं की जन संख्या का ह्रास और मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ने का एक कारण मुसलमानों द्वारा बड़े प्रमाण में हिन्दू महिलाओं का अपहरण करने की नीति थी। कदाचित हिन्दू महिलाओं का अपहरण और जबरदस्ती इनको मुसलमान बनाना यह उन्होंने मजहबी फर्ज मान लिया हो। इस प्रकार मुसलमानों द्वारा लाखों हिन्दू महिलाओं का अपहरण कर प्रकृति के नियमों को ध्यान में रखकर मुसलिम जनसंख्या बढ़ाने का यह योजना बद्ध प्रयत्न है।

● इस्लामी कानून के अनुसार विजयी मुसलमान सेना का काफिरों की औरतों पर उसी प्रकार अधिकार माना गया था जैसे अन्य चल–अचल सम्पत्ति पर। इसी मान्यता के अनुसार तत्कालीन सामान्य सिपाही से लेकर सुल्तान तक सभी मुसलमानों में हिन्दू काफिरों की महिलाओं का अपहरण कर उनको धर्म भ्रष्ट करना, मजहबी सवाब माना गया।

● पूर्व काल में जब हिन्दुओं ने विदेशी शत्रुओं, शक, हूणों आदि को पराजित किया तो उनकी राजकुमारियों से विवाह कर लिए। चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर गुप्त सम्राटों तक ने यही किया।

● शालिवाहन राजाओं ने भी शक राजकुमारियों से विवाह किये। केवल राजाओं ने नही, सामान्य नागरिकों व सामन्तों तक ने शक और हूण महिलाओं से विवाह किये और उन की सब सन्तानों को हिन्दू समाज ने अपने में पचा लिया। उनका नाम निशान तक बाकी नहीं रहा। यह शक्तिशाली हिन्दू समाज का कृतित्व था।

● अफ्रीका से स्पेन तक और एशिया में भारत की सीमाओं तक जहाँ मुसलमान गये वहाँ के निवासियों की पूर्व मान्यताओं मत सम्प्रदाओं को पूरी तरह समाप्त कर सब को मुसलमान बना डाला। हिन्दू समाज को मुसलमान बनाने में असफल रहे इसका कारण हिन्दू समाज का प्रबल विरोध तथा प्रत्याक्रमण था।"

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

समाज की रक्षा होने से ही धर्म रक्षा होती है

– श्री गुरुजी

"यह धारणा बन गई है कि जो एक बार अपने समाज के बाहर जाता है वह लौट कर नहीं आता। ऐसा होना ठीक नहीं है। उसे हिन्दू समाज में लौटा लाने का प्रयत्न होना चाहिए। यदि कोई हमारे समाज बन्धुओं को हमसे छीन लेने का प्रयत्न करता है तो धर्म परिवर्तन घटना की पुनरावृत्ति न होने पावे ऐसे व्यवस्था करना चाहिए। इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। और यदि कोई भटक गया हो या किसी दबाव में पड़कर समाज बिमुख या धर्मच्युत हो गया हो तो इसे लाने का प्रयत्न भी कर्तव्य है। समाज की रक्षा होने से ही धर्म की रक्षा होगी।

● हमारे ही बन्धु कहते हैं "जिसका धर्म परिवर्तन हो गया वह गया। जाने दो उसे।" हमें तो सोचना यह है कि जो गया उसे जाने कैसे दें ? धर्म का आचरण करने वाला रहेगा तो धर्म भी जीवित रहेगा।

● जिन लोगों ने विवश होकर धर्म परिवर्तन कर लिया है इनके घर जाकर और सब प्रकार से इनकी सहायता करके उन्हें उनके मूल हिन्दू धर्म में वापस लाना चाहिए।

● धर्माचार्यो को पुनः व्यापक प्रयास करना होगा। इन्हें जनता के बीच जाकर उन लोगों को समझाना चाहिए जो कभी इनकी शिष्य परम्परा में थे, अनुयायी थे, और समझा बुझाकर उन्हें उनके पूर्वजों के धर्म में वापस लाना चाहिए।

न हिन्दू पतितो भवेत् ।

यह समय हमें अपनी अतीत की भूलें सुधारने का है। हमारी उपेक्षा तथा धर्म सम्बन्धी भ्रांत धारणाओं के कारण हमने अपने लाखों भाई बहनों को अपने से दूर रखा।

किसी भी कारणवश परकीय मतों में धर्मान्तरित किए गये जो बन्धु अपने हिन्दू धर्म में वापस आना चाहते हैं या अन्य लोग जो ज्ञान विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरने वाले तथा अनुभव के आधार पर सही पाए जाने वाले हिन्दू जीवन आदर्शों को स्वीकार करना चाहते हैं, इन सब का स्वागत करते हुए हिन्दू समाज में आत्मसात् करने की व्यवस्था सभी समाज बन्धुओं के सहयोग से बनानी चाहिए।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू धर्म - सामान्य ज्ञान

प्रश्न पहले जो कभी आये नहीं थे ध्यान में ।
वे सब से पहले हल हुए थे एक हिन्दुस्थान में ।।

सिद्धान्त मानव जाति के जो विश्व में वितरित हुए ।
वे भारतीय तपोवनों में थे प्रथम निश्चित हुए ।।
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सनातन सिद्धान्त :-

ईश्वरैक्यं पुनर्जन्म पुरुषार्थैक्यनिष्ठता: ।
साधनानामनेकत्वम् सर्वभूत हितैच्छुता ।।१।।
भारतीयर्षि सम्प्रोक्ता: सत्सिद्धान्ता: सनातना: ।
पञ्चैवैते समासेन ज्ञातव्या विश्वमंगला ।।२।।

ईश्वर एक रूप, नाम अनेक :-

एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्ति
ऋग्वेद

ओ३म्, ब्रह्म, इन्द्र, वरूण, मित्र, विष्णु, शिव आदि।

एकोदेव: सर्वभूतेषु गूढ:
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।

कार्याध्यक्ष: सर्वभूताधिवास :
साक्षीचेता केवलो निर्गुणश्च ।।

सब भूतों में छिपे हुए वे एक देव हैं परमात्मा ।
सब में व्यापक, सब जीवों के वे अन्तर्यामी आत्मा ।।
कर्मों के अधिपति, फलदाता, सबके ही आश्रय-आवास ।।
साक्षी है, केवल निर्गुण हैं , चेतन है-चेतन प्रकाश ।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

चार वेद :-

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

वेदों में तीन मुख्य बातें हैं। भिन्न–भिन्न अवसर के अनुकूल प्रार्थनाएँ, सृष्टि के नियम और उपदेश। वेदों का ज्ञान चार ऋषियों को हुआ। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद,, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद और अग्ङि.रा को अथर्ववेद ।

ऋग्वेद में १०५५२ मंत्र हैं जिनमें प्रायः २०० मंत्रो की द्रष्टा ३६ ऋषिकांए हैं , शेष मंत्रों के द्रष्टा चारों वर्णों में से ४२८ ऋषि है।

चार उपवेद :-

आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, अथर्ववेद।

६ वेदांग :-

शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष्, व्याकरण, छन्द।

प्रत्येक वेद के चार भाग-

(१) संहिता (२) ब्राह्मण (३) आरण्यक (४) उपनिषद्
संहिता में वेद मंत्रो का संग्रह है।

ब्राह्मण - वैदिक मंत्रो की व्याख्या करने वाले 'ब्राह्मण' ग्रंथ–
शतपथ – तैत्तिरीय – ताण्ड्य – ऐतरेय – शांख्यायन
ब्राह्मण ग्रंथो के रचयिता सब ब्राह्मण नहीं थे। ऐतरेय के रचयिता ऐतरेय शूद्रा इतरा के पुत्र थे।

अरण्यक - अरण्यकों की रचना बनों में हुई अतः वे अरण्यक कहलाए। इनका विषय भी आत्म तत्व का ज्ञान ही है।

चार युग		काल गणना	
सतयुग	१७,२८,००० वर्ष	स्रष्टि सम्वत्	१,६६,०८,५३,०६४
त्रेता	१२,६६,००० वर्ष	युगाब्द	५,०६४
द्वापर	८,६४,००० वर्ष	विक्रमाब्द	२,०६५
कलियुग	४,३२,००० वर्ष	शालिवाहनाब्द	१,९२५

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

नव ग्रह

सूर्य – चन्द्र –मंगल – बुध – गुरु – शुक्र –शनि –राहु – केतु

उपनिषद् :-

ऋषियों द्वारा प्रतिपादित तत्वों का वर्णन।

ईश	कैवल्य	अथर्वशिखा
केन	जाबाल	मैत्रायणी
कठ	श्वेताश्वेतर	कौशीतकि–ब्राह्मण
प्रश्न	हंस	बृहज्जाबाल
मुण्डक	आरुणिक	नृसिंहतापनीय
माण्डूक्य	गर्भ	कालाग्निरुद्र
तैत्तिरीय	नारायण	मैत्रेयी
ऐतरेय	परमहंस	सुबाल
छान्दोग्य	अमृतबिन्दु	क्षुरिका
बृहदारण्यक	अमृतनाद	मन्त्रिका
ब्रह्मा	अथर्वशिरस्	सर्वसार
निरालम्ब	योगचूड़ामणि	मुद्‌गल
शुकरहस्य	निर्वाण	शाण्डिल्य
वज्रसूचिका	मण्डल ब्राह्मण	पैग्डल
तेजोबिन्दु	दक्षिणामूर्ति	भिक्षुक
नादबिन्दु	शरभ	महत्
ध्यानबिन्दु	स्कन्द	शारीरक
ब्रह्मविद्या	त्रिपाद्विभूति	योगशिख
योगतत्व	महानारायण	तुरीयातीत
आत्मप्रबोध	अद्वयतारक	सन्यास
नारद परिव्रजक	रामरहस्य	परमहंसपरिब्राजक
त्रिशिखि ब्राह्मण	रामतापनीय	अक्षमाला
सीता	वसुदेव	अव्यक्त
एकाक्षर	त्रिपुरा	गोपाल तापनीय
अन्नपूर्णा	कठरुद्र	कृष्ण
सूर्य	भावना	याज्ञवल्क्य
अक्षि	रुद्रहृदय	वराह
अध्यात्म	योगकुण्डली	शाट्यायनीय
कुण्डिका	भस्मजाबाल	हयग्रीव

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

सावित्री	रुद्राक्षजाबाल	दत्तात्रेय
आत्मा	गणपति	गरुड़
पाशुपत	जाबालदर्शन	कलिसंतरण
परब्रह्म	तारसार	शौनकोपषिद्
अवधूत	महावाक्य	सौभाग्यलक्ष्मी
त्रिपुरतापनीय	पञ्चब्रह्म	सरस्वती रहस्य
देवी	प्राणाग्निहोत्र	बह्वच आदि

वेदों का सार तत्व उपनिषदों में दिया गया है। उपनिषदों की संख्या १०८ है। १० उपनिषद ऋग्वेद से, १६ शुक्ल यजुर्वेद से, ३३ कृष्ण यजुर्वेद से, १६ सामवेद से और ३० अथर्ववेद से सम्बन्धित है।

प्रमुख उपनिषदों के नाम हैं – ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक;, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वेतर।

दाराशिकोह ने उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद "सिर्रे अकबर" नाम से करवाया था।

"उपनिषदों के समान मानव जीवन के लिए लाभप्रद और ऊँचा उठाने वाला दूसरा कोई ज्ञान नहीं है। उपनिषद सर्वोत्तम मस्तिष्क की उपज है। एक न एक दिन वह समस्त मानव जाति के धर्मग्रंथ बनेंगे।"

–शोपेनहावर

● श्रीमद्भगवतगीता सभी उपनिषदों का सार है।

दर्शन :–

१. वैशेषिक – कणाद	४. योग – पतंजलि
२. न्याय – गौतम मुनि	५. मीमांसा – जैमिनी
३. सांख्य – कपिल	६. वेदान्त – बादरायण व्यास

जैन, बौद्ध एवं चार्वाक दर्शन भी हैं।

सिख साहित्य : १. ग्रन्थसाहिब २. आदिग्रन्थ।

लिग्ड्रायत साहित्य : १. षडस्थल वचन २.घटचक्रवचन ३. कालज्ञानवचन ४. मन्त्रगोप्य ५. वसनपुराण

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

जैन साहित्य : आगम ग्रन्थ १२, उपांग १२, प्रकीर्ण १०, छेद सूत्र ६, मूल सूत्र ३, सूंत्र ग्रंथ २, कुल ४५ सिद्धान्त ग्रन्थ। इनके अतिरिक्त पुराण तथा चरित्र ग्रन्थ अर्ध मागधी भाषा में है।

बौद्ध साहित्य : (पालि) त्रिपिटक – अभिधम्मपिटक (दर्शन प्रतिपादन) सुत्तपिटक–बुद्धोपदेश, विनयपिटक–भिक्षु संघ व्यवस्था एवं नियम, ललित विस्तार–बुद्ध का चरित्र, मिलिन्दपह्वन–मिलिन्द के प्रश्न।

गुण कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था का विधान

एकवर्णमिदं पूर्व विश्वमासीद् युधिष्ठिर ।
कर्मक्रियाविभेदन चातुर्वर्ण्य प्रतिष्ठितम् ।।
वर्णोत्कर्षवाप्नेतिनरः पुरायेन कर्मणाः ।
तथापकर्ष पापेन इतिशास्त्र निदर्शनम् ।।
शूद्रोऽपि शीलसम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत् ।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रात् प्रत्यवरो भवेत् ।।

हे युधिष्ठिर इस संसार में पहले एक ही वर्ण था पीछे गुण, कर्म, भेद से चार वर्ण बने। यदि शूद्र उत्तम कर्म वाला हो तो उसे ब्राह्मण मानना चाहिए और कर्तव्यहीन ब्राह्मण हो उसे शूद्र। – महाभारत

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः – गीता

जिस प्रकार एक ही पिता के चार पुत्रों की जाति एक ही होती है उसी प्रकार एक ही परम पिता की संतान चारों वर्ण एक ही जाति के हैं।

– भविष्य पुराण

गृत्समद के पुत्र शौनक ने चार वर्णो की व्यवस्था बनाई।

–विष्णु पुराण

वर्ण–व्यवस्था वंशानुक्रम की अपेक्षा व्यक्तिगत गुणों पर अधिक आधारित थी तथा विभिन्न वर्णो के पारस्परिक सम्बन्धों में अवरोध नहीं थे। मूलरूप में वर्ण–व्यवस्था (open class system) रूप में थी। खान–पान, शादी–विवाह आदि सभी सम्बन्ध सभी वर्णो में परस्पर होते थे। एक ब्राह्मण का कथन मिलता है कि वह स्वयं कवि था, उसके पिता वैद्य थे, और माँ अनाज पीसने वाली (शूद्र)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

थी। भृगु ऋषि के कुछ वंशज रथ–निर्माण–कला में निपुण थे। ययाति क्षत्रिय थे उनकी पत्नी देवयानी ब्राह्मण थी, दुष्यन्त क्षत्रिय तथा शकुन्तला ब्राह्मण थी, ऐसे ही अनेक उदाहरण हैं।

स्मृतियाँ :-

युगानुसार बनायी गयी आचारसंहितायें। इनकी संख्या ५६ तक बतायी जाती है। प्रमुख स्मृतियों के नाम हैं :-

मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्णु, हारीत, उशनस, अंगिरा, यम, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, नारद, भृगु, शंख देवल आदि।

धर्म निबन्ध :-

स्मृतियों की संख्या बढ़ जाने के कारण उनका सारांश धर्म–निबन्ध रूप में संकलित किया गया। यथा स्मृति कल्पतरु, स्मृति चन्द्रिका, चतुर्वर्ग चिन्तामणि, स्मृति रत्नाकर, धर्म रत्न, निर्णय सिन्धु आदि।

इतिहास :-

रामायण, महाभारत।

पुराण :-

ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारायण, मारकण्डे, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्माण्ड।

पुराणों में इतिहास तथा महापुरुषों की जीवनियाँ हैं। आध्यात्मिक विषय अलंकारिक भाषा कथाओं कें रूप में बताये गए हैं। किन्तु क्षेपक बहुत होने से इन को नीर–क्षीर विवेक से पढ़ना चाहिए। वर्तमान युगानुसार इनका पुनर्सम्पादन करने की आवश्यकता है।

विष्णु के दस अवतार :-

मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

यदा–यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे।। – गीता

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दू धर्मान्तर्गत प्रमुख उपासना पद्धतियाँ:-

वैदिक, वैष्णव, शैव, शाक्त, लिंगायत, बौद्ध, जैन, सिख, राधास्वामी, आर्यसमाजी आदि।

यम :-

अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः।

नियम :-

शौच संतोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमः।

अष्टांग योग :

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

सप्तर्षि :-

(१) मरीचि – दण्डनीति के शिक्षक।
(२) अत्रि–दक्षिण दिशा निवासी, पत्नी अनुसूया, अत्रिसंहता।
(३) अंगिरा–भक्ति दर्शन एवं स्मृतिकार।
(४) पुलस्त्य–पत्नी हविर्भ से विश्रवा का जन्म, विश्रंवा के पुत्र कुबेर रावण आदि थे। योग विद्या के आचार्य। नारद को वामन पुराण की कथा सुनाई।
(५) पुलह–प्रसिद्ध शिव भक्त, काशी में पुलह्वेश्वर शिवमन्दिर बनवाया।
(६) ऋतु–वारह कल्प में वेदों का विभाजन किया।
(७) वशिष्ठ–पुराणों के प्रदर्शक, भगवान राम के गुरु, योग–विद्या के आचार्य।

भारत की भौगोलिक एकता के प्रतीक

चार धाम-

उत्तर हिमालय में	बदरी–केदार
पश्चिम काठियाबाड़	द्वारकापुरी
पूरब उड़ीसा में, तथा	जगन्नाथपुरी
दक्षिण में	रामेश्वरम्

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ :-

श्रृंगेरी	(कर्नाटक)
जोशीमठ	(बदरी केदार)
शारदा मठ द्वारका	(गुजरात)
गोवर्धन मठ जगन्नाथपुरी	(उड़ीसा)

ज्योतिर्लिंग :-

सौराष्ट्रे सोमानाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्याँ महाकालं ओंकारे अमलेश्वरम् ।।
परल्यां बैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारूकावने ।।
वाराणस्यांतुविश्वेर्श त्र्यंबकं गोमती तटे ।
हिमालये तु केदारं, घृष्णमेशं शिवालये ।।

इक्यावन शक्तिपीठ :-

गंधर्वल, कांगड़ा, पठानकोट, ज्वालामुखी, चित्रपुर्णी, जलंधर, शिमला, कालका, हरिद्वार, अल्मोड़ा, दिल्ली, नैनीताल, पूर्णागिरी, काठमाण्डू, देवीपाटन, जनकपुर, मथुरा, साँभर, फर्रुखाबाद, आबू, चित्तौड़, महोबा, प्रयाग, काशी, कलकत्ता, गौहाटी, चटगाँव, बांदा, विन्ध्याचल, चुनार, उज्जैन, मैहर, जबलपुर, ओंकारेश्वर, भुवनेश्वर, नागपुर, मुम्बई, पुणे, पंढरपुर, कोल्हापुर, श्रीशैल, तिरुपति, मैसूर, मथुरा, मदरास(चिन्नई), द्वारिका–गिरनार, कामरुप, त्रिपुरा, वैद्यनाथधाम, श्रीलंका।

चार देवता :-

मातृ देवो भव	पितृ देवो भव
आचार्य देवो भव	अतिथि देवो भव

इतिहास प्रसिद्ध गुरु एवं आचार्य:-

बृहस्पति	–	देवताओं के गुरु
शुक्राचार्य	–	राक्षसों के गुरु

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

वशिष्ठ	–	राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न व दशरथ के गुरु
सान्दीपनि	–	कृष्ण, सुदामा के गुरु
द्रोणाचार्य	–	पाण्डवों तथा कौरवों के गुरू
चाणक्य	–	चन्द्रगुप्त के गुरू
कुमारिल भट्ट	–	मण्डन मिश्र के गुरु
गोविन्द भगवद्पाद	–	शंकराचार्य के गुरू
समर्थ रामदास	–	शिवाजी के गुरू
दशमेश गुरुगोविन्दसिंह	–	सिक्खों के गुरु
स्वामी बिरजानन्द	–	स्वामी दयानन्द के गुरु
रामकृष्ण परमहंस	–	स्वामी विवेकानन्द के गुरु

धर्मप्रचारक :-

अगस्त	–	विंध्य पर्वत के दक्षिण तथा सुदूर सिंहल द्वीप, ब्रह्मदेश, मलाया, इण्डोचनी, जावा, सुमात्रा, आदि द्वीपों में भारतीय संस्कृति के प्रचारक।
कम्बु	–	कम्बुज (कम्बोडिया) राज्य के प्रथम संस्थापक जिन्हें कम्बुज का मनु माना जाता है।
कौण्डिन्य	–	द्रोणचार्य वंशज, दक्षिण पूर्वी एशिया फ्यूनान आदि में भारतीय संस्कृति का प्रसार किया।
महेन्द्र, संघमित्र	–	श्रीलंका में धर्म प्रचार किया।
कश्यप मातंग	–	६५ ई० पू० चीन में बौद्धधर्म प्रचारार्थ गये।
गुण बर्मन	–	कश्मीर राजवंशी थे। सुमात्रा, जावा, लंका, सिलिवीस, बोरनियों,मलाया, चीन में धर्म प्रचारार्थ गये।
बुद्ध घोष	–	४०० ई० पू० बर्मा में धर्म प्रचारार्थ गये।
बोद्धिधर्म	–	कांची राजवंश का तीसरा पुत्र, लगभग ६० बर्ष शिक्षण कार्य के पश्चात् चीन गये, जैन पंथ प्रवर्तक, ५२० ई०
पद्म सम्भव	–	तिब्बत मे लामा धर्म के प्रवर्तक, तांत्रिक आचार्य।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

तीर्थ स्थान :-

तीर्थ दो प्रकार के बताये गए है। मानस तीर्थ और भौम तीर्थ। आचारवान् तपस्वी मानस तीर्थ है। भौम तीर्थ चार प्रकार के हैं :

अर्थ तीर्थ (व्यापार केन्द्र), धर्म तीर्थ (धर्मवार्ता केन्द्र), काम तीर्थ (कला सौंदर्य केन्द्र), मोक्ष तीर्थ (अध्यात्म ज्ञान केन्द्र) :

● विष्णु प्रयाग, नन्द प्रयाग, कर्ण प्रयाग, रुद्र प्रयांग, देव प्रयाग, गंगाद्वार, मथुरा, काशी, अयोध्या, प्रयाग, अमरनाथ, गया, तिरुपति, बालाजी, कामक्षा, मदुरा, रामेश्वरम्, हिंगलाज, देवी पादम्, नैमिषारण्य, गोकर्ण, कुरुक्षेत्र, सारनाथ, पावापुरी, प्रतिष्ठान आदि तीर्थ स्थान है।

बौद्धों के अट्ठमहाठानानि

१– लुम्बनी भगवान बुद्ध का जन्मस्थान नेपाल में। नेपाल सरकार ने यहाँ भव्य मंदिर बनवाया है जिसका उद्घाटन बरमा के प्रधानमंत्री श्री यू० नू० ने किया था।

२– बोध गया जहाँ आत्मबोध प्राप्त हुआ। (बिहार)

३– सारनाथ जहाँ प्रथम प्रवचन दिया। (वाराणसी उ० प्र०)

४– कुशीनगर जहाँ शरीर त्याग किया। (उ० प्र०)

५– श्रावस्ती या जैतवन विहार (बहराइच उ० प्र०)

६– संकाश्य (फरुखाबाद उ० प्र०)

७– राजगृह (पटना – बिहार)

८– वैशाली (मुजफ्फरपुर–बिहार)

बौद्ध धर्म के अन्य महत्वपूर्ण तीर्थ –

१– सांची २–नालन्दा ३–गिरनाथ ४–तलाजा ५–बल्लभी ६–काम्पल

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हमारे संस्कार

हिन्दू धर्म का विश्वास है कि व्यक्ति जन्म से कुलीन या श्रेष्ठ न होकर संस्कारों की श्रेष्ठता से ही वह समाज में श्रेष्ठ बनता है। जन्म से तो सभी शूद्र होते हैं। संस्कार से ही द्विज कहलाते है – "जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते"।

हिन्दुओं के जीवन को अंलकृत करने वाले १६ संस्कार

१. **गर्भाधान** – हिन्दू पुनर्जन्मविश्वासी धर्म है। अतः उत्तमकुल के आचरण के अनुरूप अपनी वंश परम्परा रक्षण हेतु विवाहित युगल देव पूजन के अनन्तर गर्भाधान को पवित्र कर्म समझ कर सम्पन्न करें। केवल भोगवादी दृष्टि से काम सेवन नहीं करे। यह शास्त्र का कहना है।

२. **पुंसवन** – गर्भाधान के अनन्तर भ्रूण माता के गर्भ में स्वस्थ और संतुलित ढंग से पनपे एतदर्थ देवाराधन, ग्रह–पूजन यह गर्भ के चौथे, पाँचवें मास सम्पन्न होता है।

३. **सीमन्तोन्नयन** – गर्भावस्था में माता के खानपान, भ्रमण, चिकित्सा की अभिलाषा पति पूर्ण करता हुआ भ्रूण के सही विकास के लिए, सद्बुद्धि के लिए, शास्त्रचर्चा तथा उत्तम देवगुणों का श्रवण करे/करायें – अभिमन्यु ने इसी संस्कार के बल पर गर्भकाल में ही चक्रव्यूह भेदन सीखा था। गर्भस्थ शिशु संस्कार ग्रहण करता है यह आधुनिक विज्ञान सम्मत है।

४. **जातकर्म** – जन्म लेने के बाद शिशु को शहद धृत स्वर्ण की सलाई से चटाकर स्वागत करना।

५. **नामकरण** – शिशु का अपने वंश,. ऋषि, गोत्र के आधार पर नाम रखना।

६. **निष्क्रमण** – बच्चे को घर की देहरी से बाहर खुले वायुमण्डल में निकालना।

७. **अन्नप्राशन** – ग्रह शान्तिपूर्वक देवपूजन कर बालक को ४ से अधिक मास होने पर कुछ खीर या इसी तरह का अन्न पहले पहल खिलाना आरम्भ करना।

८. **चूड़ा कर्म** – लड़की का पहले तीसरे या पाँचवे वर्ष, लड़के का दूसरे, चौथे,

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy.

छठे वर्ष केश मुड़वाना। इसे किसी पवित्र तीर्थ या धर्म स्थान पर उसके सुखद भविष्य के लिय पूजन और प्रार्थना के साथ करना चाहिए।

९. **कर्ण वेध** – बालक–बालिकाओं का तीसरे, पाँचवे वर्ष कान छिदवाना।

१०. **उपनयन** – शिक्षा को आरम्भ करने हेतु यज्ञोपवीत यज्ञ होम के साथ।

११. **वेदारम्भ** – जनेऊ धारण करने के बाद अपनी शाखा, गोत्र एवं वंश परम्परा के अनुसार ज्ञान के लिए विशेष गुरु के आश्रम में शिक्षा हेतु जाना।

१२. **समावर्तन** – शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु की यथोचित दान सेवा करने शिक्षापूर्ति के बाद घर जाने की अनुमति पाना।

१३. **विवाह** – विधिवत् गृहस्थाश्रम में प्रवेश हेतु विवाह। सुसंस्कृत सामाजिक जीवन के विकास में विवाह संस्कार की महत्वपूर्ण भूमिका सर्वमान्य है। इस का प्रचलन हमारे ऋषि मुनियों ने सर्वप्रथम प्रारम्भ किया। महाभारत के एक आख्यान के अनुसार श्वेतकेतु ने विवाह प्रणाली की स्थापना की थी तभी से कुटुम्ब प्रणाली चली।

१४. **वानप्रस्थ** – गृहस्थाश्रम में ५० वर्ष की उम्र तक रहकर पूर्णरूप से बच्चों की अपना उत्तराधिकार देते हुए देश एवं समाज जागृति हेतु पत्नी सहित सक्रिय समाज सेवा करना।

१५. **सन्यास** – ७५ वर्ष आयु होने पर घर त्यागकर समाज को धर्म की ओर उन्मुख करने के लिए प्रयत्नरत होना।

१६. **अन्त्येष्टि** – मरणोत्तर प्रत्येक हिन्दू को वैदिक रीति से दाहक्रिया संस्कार सम्पन्न करना।

संसार में शव–विसर्जन की जितनी विधियाँ प्रचलित हैं उनमे दाह संस्कार विज्ञान सम्मत सर्वश्रेष्ठ है। चीन के साम्यवादी शासकों ने भी एक आदेश द्वारा मुर्दो को जलाना अनिवार्य कर दिया है। नारा दिया गया –

Land for the living, cremate the dead.

४ जीवन मूल्य –

१. **धर्म** – किसी पदार्थ का जीव के अस्तित्व के रहस्यों को समझना और इसके संरक्षण के लिए प्रयत्न करना।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

२. **अर्थ** – भौतिक उन्नति के साधन जुटाना। राजनीति, अर्थशास्त्र आदि इसी के अन्तर्गत आते हैं।

३. **काम** – शारीरिक, मानसिक, भावात्मक (कलात्मक) निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का समाधान।

४. **मोक्ष**– अमृततत्व या आनन्द की प्राप्ति

आश्रम व्यवस्था –

सौ वर्ष की आयु मर्यादा मानकर हिन्दुओं ने इसे चार–पचीस वर्षीय योजनाओं में बांटा है–

१. **ब्रह्मचर्य आश्रम** – वेद, स्मृति, पुराण, इतिहास आदि के अध्ययन, ज्ञानार्जन में बिताना।

२. **गृहस्थ आश्रम** – पितरों के ऋण से जनशक्ति बढ़ाकर उऋण होना। इसके उपाय है (१) सन्तान द्वारा जाति सूत्र की रक्षा करना और (२) अनार्यो को आर्य संस्कृति की दीक्षा देना।

"कृणवन्तो विश्वमार्यम्" इस आश्रम का सूत्र वाक्य है।

३. **वानप्रस्थ आश्रम** – गीता में भगवान ने नदी, पर्वत, पशु–पक्षी, ऋतु–काल आदि अपना स्वरूप बताया है। सृष्टि के सभी पदार्थों को वासुदेवमय कहा गया है। इसलिये विश्व की सेवा परमात्मा को पूजा मानंकर करना।

४ .**सन्यास आश्रम** – मानव मात्र की सेवा का पूर्णकालीन ब्रत लेना। सन्यासी समाज का आठों पहर का सेवक होता है।

ग्रहस्थों के लिए पाँच यज्ञ –

१. **ब्रह्म यज्ञ** – सन्ध्योपासना – अपने कर्ता निर्माता का कृतज्ञता पूर्वक स्मरण।

२. **देव यज्ञ** – देवताओं के प्रति समर्पण।

३. **बलि वैश्य देव यज्ञ** – कीट–पतंग, पशु–पक्षी, रोगी–पीड़ित, पिछड़े और उपेक्षित बन्धुओं के साथ तादात्म्य। यह समाज के अनुत्पादक अंग है अतः हमारी सहानुभूति के पात्र है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

४. पित्र यज्ञ – पूर्वजों और प्रेरकों को श्रद्धाँजली देना। उनके सदगुणो का स्मरण करना।

५. अतिथि यज्ञ – विद्वानों, विचारकों, उपदेशकों, समाज सेवा में रत लोगों की सेवा तथा सम्मान।

ऋणों की परिकल्पना –

हमारा जीवन अनेक स्रोतों पर आधारित है। अपने जीवन दाताओं, उपकार करने वालों को तीन कोटियों में रख सकते हैं–

देव, ऋषि और पितर।

देवाधिदेव परमात्मा, और समाज के अन्य मानवों को मिलाकर यह ५ हो जाते हैं।

(१) सृष्टि के निर्माता और नियन्ता के ऋण की सीमा नहीं है। यह ब्रह्मऋण है।

(२) परमात्मा की दिव्य शक्तियां, प्रकृति के विभिन्न उपकरणों, जो हमारा भरणं–भोषण करते हैं – देव ऋण है।

(३) हमारे पूर्वज–पितृ ऋण।

(४) हमारी परम्परा, जीवन पद्धति, संस्कृति की संरक्षण–ऋषि ऋण है।

(५) हमारे सहयोगी मित्र, बन्धु–बांधव, पड़ोसी सामाजिक जीवन में सहायक–मनुष्य ऋण।

आर्यो का आदि देश

"मेरा विश्वास है कि आर्य लोग न तो ध्रुव प्रदेश में रहते थे, न मध्य एशिया में, न पश्चिमोत्तर यूरोप में। इन का घर तो सप्तसिन्धव ही था। यहीं से उनकी संस्कृति दूर–दूर तक फैली।" *डा० सम्पूर्णानन्द*

जिन सात नदियों के कारण उक्त क्षेत्र का नाम सप्तसैंधव कहा गया है, वह ऋग्वेद दशम मंडल के अनुसार (१) सिन्धु (२) विपासा (व्यास) (३) शतुद्र (शतलज) (३) वितस्ता (झेलम) (५)अक्सिनी (चिनाब) (६) परुष्णी (रावी) और (७) सरस्वती है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

हिन्दुओं की वैज्ञानिक देन

अश्विनीकुमार– विश्व के प्रथम वैज्ञानिक। ऋग्वेद में उनके बनाये उड़ने वाले रथों तथा उड़ने वाली नौकाओं का उल्लेख है। आयुर्वेद का ज्ञान ब्रह्मा से प्राप्त किया। विश्पला के कटेपांव के स्थान पर धातु का पैर लगाया।

भरद्वाज – भरद्वाज विमान शास्त्र, यंत्रार्णव, भरद्वाज संहिता के प्रणेता, अनेक प्रकार के विमान बनाने की विधि बताई।

कणाद – अणु सिद्धान्त प्रतिपादक।

अग्निवेश – ई० पू० १३०० वर्ष, चरक संहिता कारक।

धन्वन्तरि – शल्य चिकित्सा शास्त्र के आदि प्रवर्तक।

सुश्रुत – ईसा पूर्व १०वीं शती–संधान शल्यकर्म (प्लास्टिक सर्जरी) के आविष्कारक।

चरक – ईसा पूर्व ५वी शती–चरक संहिता का प्रतिसंस्कार किया।

शालिहोत्र – पशु चिकित्सा के आचार्य–हय आयुर्वेद।

बोधायन – ८०० ई० पू० ज्योतिष शास्त्री।

वराहमिहिर – ४२५ ई० पू० खगोल शास्त्री।

नागार्जुन – रसायन शास्त्री, पारे से सोना बनाने की विधि का आविष्कार किया। रसरत्नाकर, लौहशास्त्र आदि ग्रंथों के प्रणेता।

आर्यभट्ट – पृथ्वी गोल है, अपनी धुरी पर घूमती है, चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण के व्याख्याता। बीजगणित, ज्योतिष विज्ञान के आचार्य।

ब्रह्मगुप्त – गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त, तथा गणित में दशमलव प्रणाली के आविष्कर्ता।

भास्कराचार्य – पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के व्याख्याता, सूर्यसिद्धान्त, गणित शास्त्र में लीलावती आदि ग्रन्थों के प्रणेता।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

ग्रत्समद – अंको में शून्य लगाकर लिखने की प्रक्रिया का आविष्कार सन् ५०० और ८०० ई० के बीच किया था।

यहाँ से इसका रिवाज बगदाद पहुँचा और वहाँ से अन्य मुस्लिम देशों, यूनान और यूरोप गया जहाँ रोमन अंको के प्रचलित होने के कारण सर्वप्रथम भारी विरोध हुआ, किन्तु बाद में इसकी वैज्ञानिकता स्वीकार की गई।

चौदहवीं शताब्दी के बाद ही पश्चिमी यूरोप में शून्य लगाकर संख्या लिखना स्वीकार किया गया।

ब्राह्मी लिपि – विश्व के सभी लिपियों की माता

सर मोनियर विलियम्स ने दीर्घकाल तक अथक परिश्रम करके यह सिद्ध कर दिया कि संसार की सभी सभ्यताओं ने भारतीय ऋषियों द्वारा आविष्कृत ब्राह्मी लिपि से ही अपनी–अपनी अक्षरमाला बनायी। रोमन, यूनानी, मिस्री, अंग्रेजी आदि सभी लिपियों की विस्तृत तालिका बनाकर यह सिद्धान्त निरूपित किया कि प्राचीन भारत की ब्राह्मी लिपि से ही संसार के सभी सभ्य देशों के अक्षर निकले और काल प्रवाह में वर्तमान रूप लिया।

● गन्ने से शकर बनाने का आविष्कार हिन्दुओं ने किया। संस्कृत शब्द 'शर्करा' की विश्वयात्रा बड़ी रोचक है। संस्कृत 'शर्करा' अरबी में शकर, लेटिन भाषा में सोभरम **(Sobhram)**, फ्रेंच में **Succre** (शकर), जर्मनी में **Zucher** (झकर) अंग्रेजी में **Sugar** (शुगर) के नाम से जाना जाता है। हिन्दुओं की प्राचीन मान्यताओं के अनुसार 'शर्करा धेनु' दान करने का उल्लेख पाया जाता है।

● कपास और नील की खेती और वस्त्र बनाने की कला का आविष्कार हिन्दुओं ने ही किया। रोमन सिनेट में सिसरो ने अपने एक भाषण में यह शिकायत की थी कि रोम की महिलायें जो वस्त्र पहनती थीं वे भारत से मंगाये जाते थे जिसके लिए बहुमूल्य स्वर्ण मुद्रायें देनी पड़ती थी।

● विश्व के सभी देशों में बड़े चाव से खेले जाने वाले शतरंज, पचीसी तथा पोलो खेल हिन्दुओं का आविष्कार हैं।

● काञ्ची कामकोटि पीठम के पूज्य शंकराचार्य चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने वेद मन्त्रों पर आधारित वैदिक गणित प्रकाशित कर विश्व के सभी वैज्ञानिकों और गणितज्ञों को आश्चर्य चकित कर दिया है।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

'ऋषियों के विज्ञान की विशेषता'

नामक पुस्तक की प्रस्तावना में श्री सातवलेकर जी ने लिखा है –

जल की उत्पत्ति

मित्रं हुवे पूतदक्षं, वरूणं च रिशादसम् ।
धियं घृतार्वी साधन्ता ।।

ऋग्वेद १।२।७

पवित्रता करके बल बढ़ाने वाले मित्र वायु को मैं लेता हूँ, और जंग चढ़ा कर खाने वाले वरुण वायु को लेता हूँ। यह दोनों पानी प्रवाहित करने के कर्म का साधन करते हैं।

● अश्वरहित वेगवान रथ

अनेनो वो मरुतो अस्तु, अनश्वश्चिद् यमजत्यरथीः ।
अनवसो अनभीशू रजस्तुर्वि रोदसी पथ्या याति साधन् ।

ऋग्वेद ६।६६।७

इस मन्त्र में वर्णन किया हुआ रथ (अनु–अश्वः) घोड़ो के बिना चलता है, (अ–रथी–अजति) चलाने वाला भी उसको नही रहता, परन्तु वह वेग से चलता है, (अन्–अभीशुः) लगाम भी इसके नहीं होते ऐसा यह रथ (अन्–एनः) निर्दोष है और यह (रजः–तूः) धूली को उड़ाता हुआ चलता है।

● पक्षी जैसा विमान

तिस्रः क्षपः त्रिरहातिव्रजद्भिः, नासत्या भुज्युं ऊहथुः पतंगैः।
तमूहथुः नौभिरात्मन्वतीभिः, अन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः ।।

ऋग्वेद ६,६,४

'तीन रात्रि और तीन दिन' तक (अतिव्रजद्भिः) अतिवेग से जाने वाले (पतंगैः) पक्षी जैसे वाहनों से भुज्यको नासत्यों ने अपने स्थान पर लाया। ये वाहन (अन्तरिक्ष–पुभ्दिः) अन्तरिक्ष में से (अप–उदकाभिः) मेघ मण्डल के ऊपर से (आत्मन्वतीभिः नौभिः) अपने अधीन रहने वाले और नौकाओं के समान थे और ये तीन थे।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

● रक्त में लोहा

'लोहित' शब्द रक्तवाचक है। इसका अर्थ (लोह+इत) लोह जिसमें रहता है ऐसा है। रक्त में लोहा रहता है यह विज्ञान इस शब्द में भरा है। जिसको यह विज्ञान ज्ञात नहीं होगा वह रक्त का नाम लोहित रखेगा ही कैसे ? रक्त में लोहा रहता है यह यों ही नहीं समझ में आ सकता। इसके लिए बड़े विज्ञान की आवश्यकता रहती है। यह सब विज्ञान इस शब्द में ही निहित है। ऐसे वैज्ञानिक शब्द जिनके वचनों में हैं, उनको विज्ञान मालूम था यह कहने की आवश्यकता ही क्या है ?

● आयुष्यवर्धक सुवर्ण

'अमृत' नाम सुवर्ण धातु के लिये है। मृत्यु को दूर करता है। इसलिये 'अ–मृत' नाम सुवर्ण का है। सुवर्ण का यह गुण विज्ञान से ही मालूम हो सकता है।

● बिस्फोटक अस्त्र

युद्धों में अस्त्रों का उपयोग होता था। कई अस्त्र विज्ञान से ही बनने वाले थे, इसमें सन्देह नहीं है। बाण के नोक पर बम जैसा लगाया जाता था। वह शत्रु सेना में जाकर गिरता और फट जाता था ओर वहाँ आग लगती थी। यह सब विज्ञान से ही होता था। ये अस्त्र कई ऋषि बनाते थे।

चिकित्सा शास्त्र - चरक का प्रादुर्भाव भगवान गौतम बुद्ध से पहले हुआ था। बौद्ध कालीन सर्वश्रेष्ठ बैद्य जीवक था। इस ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई थी। अशोक ने मनुष्यों की चिकित्सा के साथ पशुओं की चिकित्सा की भी व्यवस्था की थी। महाभारत के अनुसार प्राचीन काल में तीन प्रकार के बैद्य होते थे। विष बैद्य, रोग बैद्य–शल्य चिकित्सक–कृत्याहार वैध्य।

वशिष्ठ सिद्धान्त के अनुसार एक वर्ष में (ई०३००) ३६५.२५६१ दिन होते है। ग्याहरवीं शती में भास्कराचार्य ने पृथ्वी के गोलाकार होने और आकर्षण शक्ति के विषय में लिखा था। इन के अनुसार पृथ्वी का एक छोटा भाग भी इतना बड़ा है कि वह समतल दिखाई देता है। इस में आकर्षण शक्ति है जिससे वह वस्तुओं को अपनी ओर खीचतीं है अन्यथा वे आकाश की ओर उड़ जाती। पृथ्वी की इसी आकर्षण शक्ति को न्यूटन ने भास्कराचार्य से ६०० वर्ष बाद में ज्ञात किया।

(१) महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम् – वायरलेस का आविष्कार।

 CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

(२) सर जगदीश चन्द्र बोस – पेड़ पौधों में जीवन का स्पन्दन – एक ऐसा यन्त्र बनाया जिससे पौधों के ह्रदय की धड़कन, इन के सुख दुख को जाना जा सकता है। 'सर' की उपाधि से विभूषित २३ नवम्बर १९३६ को ७८ वर्ष की आयु प्राप्त कर गोलोक वासी हुये।

(३) डा० बीरवल सहानी – पुराबनस्पति विज्ञान के विशेषज्ञ।

अब अध्यात्मशास्त्र के विषय में हम देखते हैं

द्वे वाचं व्रह्मणो रूपे, मूर्ते च वामूर्ते च ।

बृ. उ. २।३।१

'ब्रह्म के दो रूप हैं एक मूर्त और दूसरा अमूर्त', दोनों रूप एक ही ब्रह्म के हैं। अब यहाँ पर प्रश्न उत्पन्न होता है कि अमूर्त रूप तो ब्रह्म का है पर मूर्त रूप ब्रह्म का कैसा है ? उपनिषद कहता है कि दोनों मूर्त तथा अमूर्त ब्रह्म के ही रूप हैं। यूरोप में इस समय मैटर (**Matter**) और एनर्जी (**Energy**) ये एक दूसरे रूप में बदलते हैं अर्थात् दोनों एक ही के रूप हैं। ऐसा इस समय शास्त्रज्ञ मानने लगे हैं।

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा अव अभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ।।

व. यजु. ४०

'जिस अवस्था में ये सब भूत आत्मा ही हों उस ज्ञानी को एकत्व का दर्शन होने के कारण शोक और मोह नहीं होता।' यहाँ भी सब स्थूल भूत और आत्मा में एकत्व का दर्शन कहा है जो इससे पूर्व बताया है। मूर्त और अमूर्त ब्रह्म का अर्थ ही एकत्व का दर्शन है। स्थूलभूत तो सबको दीखते हैं, आत्मा का दर्शन नहीं होता, वह तो अमूर्त है। पर वेद कहता है कि ये दोनों एक ही हैं, अर्थात् आत्मा ही इन भूतों के रूपों में दीखता है। जो दीखता है और जो नहीं दीखता वह सब एक ही परम तत्व का रूप है। यूरोप के विद्वान अब आत्मा के अस्तित्व को मानने लगे हैं। इसके पहले तो वे केवल स्थूल प्रकृति के विभेदों को ही मान रहे थे, जैसे जैसे प्राकृतिक विज्ञान की खोज होती गई यूरोप में भी आत्मा का ज्ञान होने लगा।

हमारे भारत के ऋषियों ने, परा और अपरा यह दो विद्यांए हैं, ऐसा मानकर अपरा विद्या में सर्ब विज्ञान को माना और परा विद्या में आत्मा की विद्या मानी।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

विश्व में विभिन्न मत पंथो के अनुयायियों की अनुमानित संख्या (१९८९)

ईसाई		
रोमन कैथोलिक	९२,६१,९४,६००	१८.५
प्रोटेस्टेंट्स	३३,२०,१६,४००	६.६
आर्थोडाक्स	१६,००,६३,५००	३.२
एन्गलीकन्स	६,९६,७१,५००	१.४
अन्य	१५,६१,५०,५००	३.१
कुल ईसाई	१,६४,४३,९६,५००	३२.८
हिन्दू	६५,५६,६५,२००	१३.१
बौद्ध	३०,९६,२६,१००	६.२
सिख	१,६६,०४,१५०	०.३
जैन	३४,६२,८२०	०.१
कुल हिन्दू	९८,५३,८८,२७०	१९.७
मुसलमान	८६,०३,८८,३००	१७.२
अधार्मिक	८३,६६,२७,७७०	१६.३
नास्तिक	२२,५१,२६,५००	४.५
चीन के लोक धर्म	१८,७५,१७,१००	३.७
नये धर्मो के अनुयायी	११,०७,०६,१००	२.२
यहूदी	१,८०,७५,४००	०.४
शमानिस्ट्स	१,२७,६२,२००	०.२
आदिवासी	६,४७,५८,७५०	१.६
कनफ्युशियस	५६,१४,४००	०.१
बहाई	४६,२७,६००	०.१
शिन्तो	३४,०३,०१०	०.१
अन्य	८२,१६,८००	०.२
कुल जनसंख्या	४,९९,७६,०६,०००	

स्त्रोत :— (इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिया, बुक आफ दि ईयर १९८८ और मनोरमा ईयर बुक १९९१)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

विदेशों में हिन्दू

व्यापार, व्यवसाय, धर्म प्रचार आदि के उद्देश्य से हिन्दू दूसरे देशों में प्रवास करते रहें हैं। हिन्दू के लिए विश्व एक विशाल परिवार है –

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

गत समय अंग्रेजी राज में हजारों हिन्दुओं ने अनुबन्धित श्रमिक के रूप में अन्यान्य अविकसित देशों में जाकर उनका विकास किया और वहीं बस गये। आज वह स्वतन्त्र देश बन गये है। विगत दशकों में बड़ी संख्या में इंजीनियर, डाक्टर, अध्यापक, विद्यार्थी आदि के रूप में, केवल विकासशील देशों को ही नहीं संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, प० जर्मनी, यू० के०, आदि विकसित देशों में जाकर अपने कुशल व्यवहार तथा कार्यदक्षता से भारत के लिये प्रतिष्ठा अर्जित की। इनमें से बहुतेरे वहीं स्थायी बस गये हैं।

ई० १६८६ में विश्व की जनसंख्या ४ अरब ६६ करोड़ ७६ लाख थी। बौद्ध, जैन, सिख मिला कर हिन्दू जनसंख्या ६८ करोड़ ५३ लाख अर्थात् विश्व जनसंख्या का १६.७ प्रतिशत थी। सभी मत–पंथों के ईसाई ३२.६% और मुसलमान, शिया सुन्नी, अहमदी आदि १७.२% थे। महाद्वीपों के अनुसार हिन्दू जनसंख्या का आकलन इस प्रकार था –

अफ्रीका १४ लाख, नार्थ अमरीका ७.६ लाख, साउथ एशिया ६४४२, लाख, लेटिन अमरीका ६ लाख, योरोप ५.६ लाख ओसेनिया २०.८ लाख।

सन् १६६४ श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ मुहूर्त पर भारत में विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना हुई। वर्ष १६७० में अमरीका में विश्व हिन्दू परिषद् ने न्यूयार्क में अपना कार्य प्रारम्भ किया। १६७४ में लाभ निरपेक्ष करमुक्त संगठन के रूप में पंजीकरण हुआ। आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक नेताओं द्वारा हिन्दू विरासत के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए संगोष्ठियाँ, व्याख्यानयात्रायें आयोजित की जाने लगीं। युवा शिविर, युवा सम्मेलन, बाल बिहार जैसे कार्यक्रमों ने वहाँ के लोगों का ध्यान हिन्दुत्व की ओर आकृष्ट किया। 'हिन्दू विश्व' न्यूज बुलेटिन का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। १६८० में नार्थ अमरीका बेटन (रूज) में हिन्दू सम्मेलन हुआ। १६८४ में पुनः विशाल हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कनाडा में भी विश्व हिन्दू परिषद की अनेक शाखाएं है। १६८८ में प्रथम

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

एशिया सम्मेलन सिंगापुर में हुआ। १६८८ में ही काठमांडू (नेपाल) में हिन्दू सम्मेलन हुआ। मलेशिया, थाईलैड में भी सम्मेलन किये गये। १६८६ में मिल्टन कीन्स (लन्दन) में विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ जिसमें विभिन्न देशों से आये लगभग दो लाख हिन्दुओं ने भाग लिया। यू० के०, प० जर्मनी, नीदरलैंड, डेनमार्क, स्वेडन में भी विश्व हिन्दू परिषद की शाखायें सक्रिय हैं। स्पेन में वैदिक विद्यालय और वैदिक संघम हिन्दुत्व का संदेश प्रसारित करते हैं। सुरीनाम, ट्रनिडाड–टोबैगो, आस्ट्रेलिया और श्री लंका में भी विश्वहिन्दू परिषद् की इकाइयां है। कुछ देशों में अनिवार्य हिन्दू धर्म शिक्षा का प्राविधान है। इस सम्बन्ध में सिंगापुर और केनिया में पाठयक्रम तैयार किये गये हैं और पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।

शिकागो में स्वामी विवेकानन्द द्वारा १८६३ में दिये गये प्रसिद्ध भाषण की स्मृति में अगस्त १६६३ में एक विशाल सम्मेलन का आयोजन वाशिंगटन नगरं में किया गया। इक्कीसवीं शताब्दी प्रारम्भ होने तक विश्व में हिन्दुत्व की लहर धीरे–धीरे कितना आगे बढ़ जाएगी इस पर 'विश्व दर्शन २०००' नाम से लगाई गई प्रदर्शिनी और विद्वानों के भाषा भाषण द्वारा समुचित प्रकाश डाला गया।

लंदन में अक्षय पुरुषोत्त्तम मंदिर

लंदन से कोई ४० मील दूर नीसडन उप–नगर में भारतीय बड़ी संख्या में रहते हैं। स्वामी नारायण सम्प्रदाय की संख्या बहुत है। २० अगस्त १६६५ को यहाँ अक्षय पुरुषोत्तम मंदिर का उद्घाटन हुआ। मंदिर महोत्सव में जर्मनी, फ्रांस, इटली, बेलगेरिया, अमरीका, कनाडा, वेस्ट इंडीज, आस्ट्रेलिया, पूर्वी व दक्षिणी अफ्रीका, मध्य पूर्व तथा भारत से हजारों लोग पहुँचे। लंदन का यह भव्य विशाल मंदिर दिन में तो प्रभावशाली होता ही है परन्तु रात्रि में आश्चर्यजनक दृश्य साकार करता है। पूजा स्थल के रूप में अपनी भूमिका के साथ विश्व भर से यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र हैं। यह मंदिर १२ एकड़ भूमि पर बलगेरिया से लाये गये चूना पत्थर और इटली से लाये गये संगमरमर से बना है। यह चूना पत्थर और संगमरमर भारत लाकर गढ़ाई की गई और फिर जहाजों में भर कर लंदन भेजा गया। २३६०० टुकड़ो को जोड़कर यह मन्दिर बना। अनेकों परिवारों ने महीनों, कुछ ने सालों सेवा कार्य में लगा दिए।

जर्मनी में श्रीराम मंन्दिर

जर्मनी के प्रसिद्ध महानगर म्यूनिख में श्रीराम का भव्य मंदिर बना है। इस नवनिर्मित मन्दिर की प्राण–प्रतिष्ठा वैदिक रीति से सम्पन्न हुई जिसमें जर्मनी में रहने वाले हिन्दुओं ने बहुत उत्साह और श्रद्धा से भाग लिया।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

डरबन दक्षिण अफ्रीका में विश्व हिन्दू सम्मेलन

यह सम्मेलन ६ जुलाई से १० जुलाई १९९५ तक हुआ। कुछ देशों से आये १६०० प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। ३०,००० जनसमूह को सम्बोधित करते हुये नेलसन मंडेला ने हिन्दू धर्म की सर्व समावेशक भावना की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

अणु युग की बर्बादी से बचने का एकमात्र विकल्प

वर्तमान युग में पाश्चात्य तकनीकी आविष्कारों ने विश्व मान्यता को भौतिक आधार पर एक साथ समेट दिया है। ज्ञान–विज्ञान के नित नये आविष्कारों ने केवल परस्पर की दूरी ही कम नहीं कर दी है, साथ ही लोगों को घातक विनाशकारी उपकरणों से लैस कर, बिना परस्पर एकात्म भाव की शिक्षा दिए, एक दूसरे के सामने खड़ा कर दिया है।

इतिहास के इस खतरनाक मोड़ पर मानव जाति को विनाश से बचाने का केवल एक ही मार्ग है, और वह है अशोक, रामकृष्ण, महात्मा गाँधी की शिक्षा और तदनुसार जीवन रचना।

इसी शिक्षा को अपनाकर मानव एक विशाल परिवार के रूप में विकसित हो सकता है। – 'वसुधैव कुटुम्बकम्'।

वर्तमान अणु–युग में अपने को बर्बादी से बचाने का यही एकमात्र विकल्प हमारे पास है।

आरनल्ड टोएनबी

●

नानत्वे एकत्वम्
हिन्दूनां वैशिष्टयम्।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

भारत में सन् १९९१ की जनगणना के अनुसार विभिन्न मत पंथो की जनसंख्या

	दशक में कुल जनसंख्या वृद्धि २३.६६ प्रतिशत	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	दशक (१९८१–९१) में जनसंख्या वृद्धि
हिन्दू	६७२,५९६,४२८	८२.४१	२२.७८
सिख	१६,२४३,२५२	१.९९	२५.४८
बौद्ध	६,३२३,४९२	०.७७	३५.९८
जैन	३,३३२,०६१	०.४१	४.४२
योग (हिन्दू)	६९८.४९८.२३३		
मुसलमान	९५,२२२,५८३	११.६७	३२.७६
ईसाई	१८,८९५,६१८	२.३२	१६.८९
पारसी आदि	३,१३१,१२५	०.३८	
अन्य धर्म का	४२१,५३८	०.०५	
योग	८१६,१९६,९९६		

१९९१ की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या वृद्धि का औसत २३.६६ है। हिन्दुओं की जनसंख्या बृद्धि औसत से कम २२.८ प्रतिशत तथा मुसलमानों की औसत से अधिक ३२.८ प्रतिशत रही। इस प्रकार मुसलमानों की जनसंख्या हिन्दुओं से १० प्रतिशत की दर से अधिक बढ़ी। मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि का कारण है उनका परिवार नियोजन न अपनाना, एक से अधिक पत्नियों की धार्मिक मान्यता होना, जनसंख्या बढ़ाने की धार्मिक प्रेरणा होना, हिन्दू कन्याओं का अपहरण, बंगलादेशी व पाकिस्तानी मुसलमानों की गैर–कानूनी घुसपैठ और हिन्दुओं का धर्मान्तरण। कारण कोई भी हो निष्कर्ष है मुस्लिम जनसंख्या बढ़ाना। यदि यही स्थिति रही तो भारत में हिन्दु अल्पमत होकर अपमानित जीवन जीने को विवश होगा। लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, सर्वधर्म समभाव यहाँ की गौरवशाली परम्परा, यह सब तभी तक है जब तक यह हिन्दू बहुल देश है। किसी मुस्लिम देश में न मंदिर बनाने की छूट है, न गुरूद्वारा, न चर्च, शवदाह भी नही किया जा सकता। अतः राजनीतिक क्षितिज पर अपनी पैनी निगाह रखें और हिन्दू हितों के प्रति सतत् सावधान रहें।

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

अभिमत

'हिन्दू' शब्द की परिभाषा इस पुस्तक में बहुत सुन्दर रूप से की गई है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस शब्द का व्यापक प्रयोग किया गया है। यह उस विशाल समाज को सम्बोधित करता है जिस की संस्कृति की धारा इस देश में आदि काल से प्रवाहित है।

यदि हिन्दू नहीं रहेंगे तो इस देश का वह स्वरूप नहीं रहेगा जिसे हमारे ऋषियों, सन्तों, योगियों और आचार्यो ने अपने तेज, तपस्या और विद्या के बल से विभूषित किया है।

आज हिन्दुओं पर अनेक रूप से प्रहार हो रहे हैं। चाहे भारत के हिन्दू हों, चाहे पृथ्वी के अन्य देशों में फैले हुए हिन्दू, सभी का यह कर्तव्य है कि वे अपनी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को, जो हमें विरासत में मिली है, इसकी रक्षा करें, इसे और पल्लवित करें और हिन्दू नाम को गौरवान्वित करें।

महात्मा गाँधी के निम्नलिखित वाक्य उल्लेखनीय हैं –

''हिन्दुत्व की गति में आज अवरोध उत्पन्न हो गया है तो इसका एक मात्र कारण युगों–युगों तक कार्यरत रहने की थकान है। यह विश्राम काल समाप्त होगा और 'हिन्दुत्व' पहले से भी अधिक अपनी अलौकिक प्रभा प्रसारित कर विश्व पर छा जायेगा।''

उपर्युक्त विश्राम काल अब समाप्त हो गया है, यह पुस्तिका हिन्दुत्व नवीन युग के बालार्क की रश्मियों को दीप्तमान करती है।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस पुस्तक के कई संस्करण निकल चुके हैं और इसका हिन्दू जगत् ने बहुत स्वागत् किया है। अब यह नवीन संस्करण प्रकाशित हो रहा है। काल के प्रवाह के साथ हिन्दू भी जग रहे हैं और यह चेतना आ गई है कि इन पर इन दिनों जो योजनाबद्ध प्रहार हो रहे हैं, जिनका यह लक्ष्य है कि भारत में हिन्दुओं का बहुसंख्यक रूप ही नष्ट हो जाये, इसको चुप रहते हुए सहन नही किया जा सकता।

'हिन्दू गौरव' नाम से पुस्तक का नवीन संस्करण पाठकों को हिन्दुत्व विषयक अधिक जानकारी देगा। हार्दिक शुभ कामनाओं सहित।

न्यायमूर्ति शिवनाथ काटजू

२५ ताशकन्द मार्ग – प्रयाग, २११००१

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

धर्म के लक्षण

मनु ने मानव धर्म को व्यापक रूप से दस लक्षणों में व्यक्त किया है।

जैसे :–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

१.	**धृति**	– सदा धैर्य रखना।
२.	**क्षमा**	– मान अपमान में सहनशील रहना।
३.	**दम**	– मन को अधर्म से रोककर धर्म में लगाना।
४.	**अस्तेय**	– बिना आज्ञा तथा छल कपट विश्वासघात आदि द्वारा दूसरों की वस्तु को ग्रहण नहीं करना।
५.	**शौच**	– मन और शरीर की पवित्रता बनाये रखना तथा रागद्वेष, पक्षपात, असत्य आदि दुर्गुणों को छोड़ना।
६.	**इन्द्रिय निग्रहः**	– ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों को अशुभ कर्मो से हटाकर शुभ कर्मो में लगाना।
७.	**धीः**	– वुद्धि का ज्ञान, विज्ञान की प्राप्ति द्वारा विकास करना।
८.	**विद्या**	– सभी प्रकार के सद्ज्ञान – विज्ञान की शिक्षा व मनन द्वारा ग्रहण एवम् विकसित करना।
९.	**सत्य**	– जो पदार्थ व कथन जैसा है वैसा वोलना, समझना, मानना, कहना और करना।
१०.	**अक्रोध**	– क्रोध को रोकना और क्रोध के वशीभूत न होना।

(मानव धर्म शास्त्र-६/९५)

CC0. In Public Domain. Muthulakshmi Research Academy

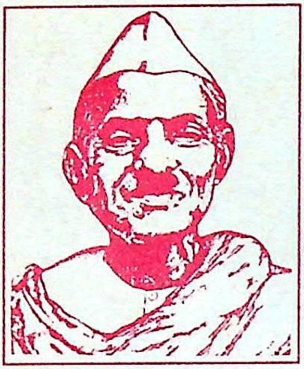

विश्वगुरू भारत

.....यह हमारा परम पुण्योदय है कि हमने भारत की पावन धरती पर जन्म लिया है। न केवल प्राक्रतिक एवं भूगर्भीय सम्पदायों सें अपितु आध्यात्तिक एवं भौतिक ज्ञान–विज्ञान की दृष्टि से भी भारत विश्व में लक्षावधि वर्षों से श्रेष्ठ रहा है। शूरता–वीरता में भी हम किसी से कम नहीं रहे। फिर भी हम "गुलाम" बन गए–क्यों ? इस का एक मात्र कारण है हमारी आत्म–विस्मृति और आपसी फूट।

आइये, वेदज्ञान की दिव्य मशाल हम अपने हाथों में लेकर

"सँगच्छध्वं, सॅवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"

का उदघोष करते हुए हम अपनी भारतमाता को पुनः जगद्गुरु के पद पर सिंहानारूढ़ कराने का दृढ़ संकल्प लें। यही समय की माँग है। भौतिकता के दुर्गन्धयुक्त पंक में आकण्ठ डूबी हुई मरणासन्न मानव के उद्धार का मात्र यही मार्ग है

"नान्यं पंथाः विद्यते अयनाय"।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

सदस्य प्रथम न्यासीमण्डल विश्व हिन्दू परिषद